संत शिरोमणि परमहंस राम मंगल दास चरितावली

लेखक :
जगत नारायन
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुंड
अयोध्या-२२४१२३

संत शिरोमणि परमहंस राम मंगल दास चरितावली

लेखक :
जगत नारायन
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुंड
अयोध्या-२२४१२३

[illegible]

प्रथम संस्करण १९७७
१००० प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण १९८०
१००० प्रतियाँ
तृतीय संस्करण १९९२
११०० प्रतियाँ
न्योछावर : रु० २०.००

छाया प्रेस
८/२०८, आर्य नगर,
कानपुर—२०८ ००२
दूरभाष : २९२६२५

संत शिरोमणि

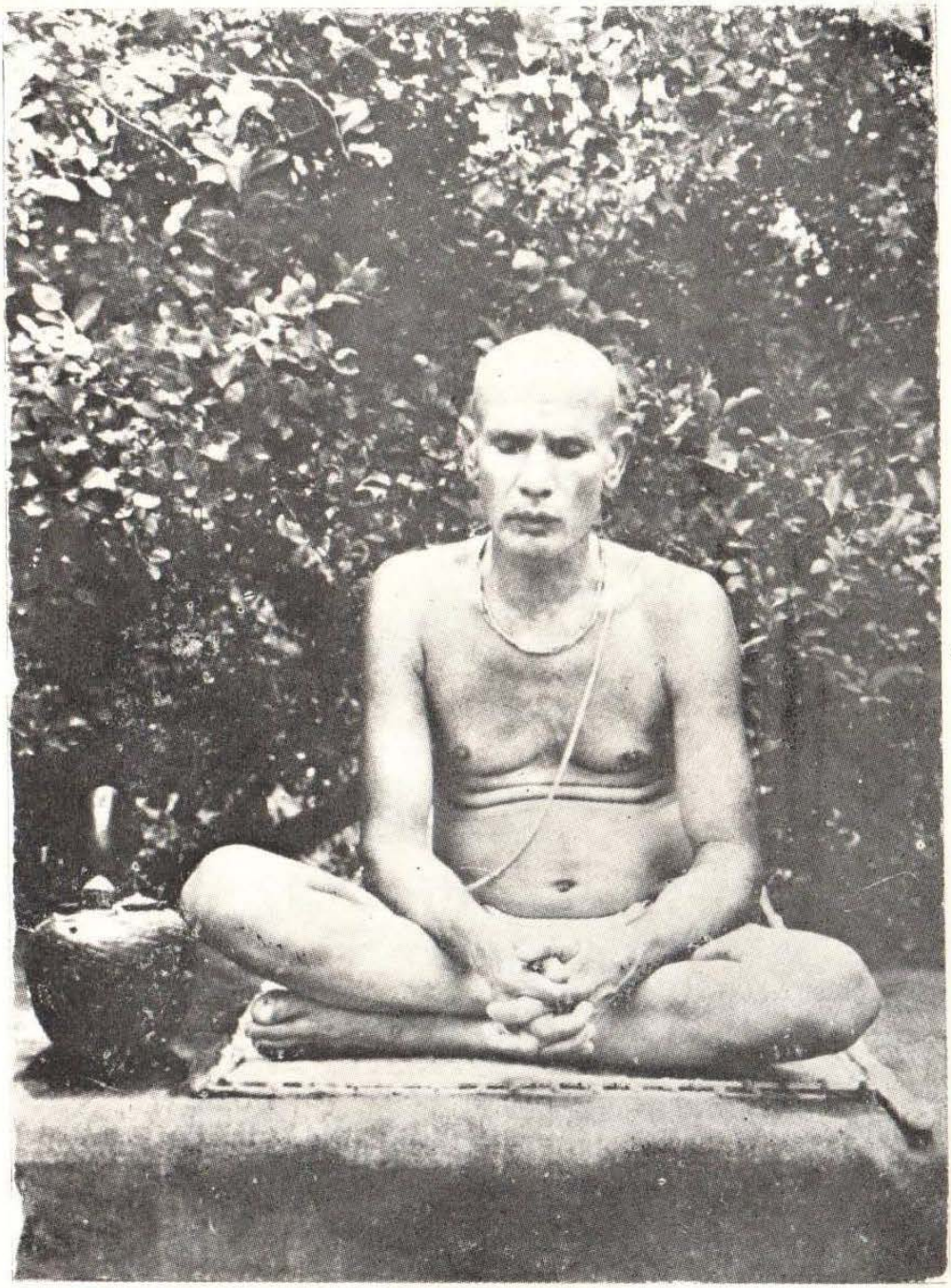

श्री १००८ परमहंस राममंगल दास जी महाराज

गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड

अयोध्या १९४६

संत शिरोमणि

श्री १००८ परमहंस श्री राममंगल दास जी महाराज
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड, अयोध्या १९७५

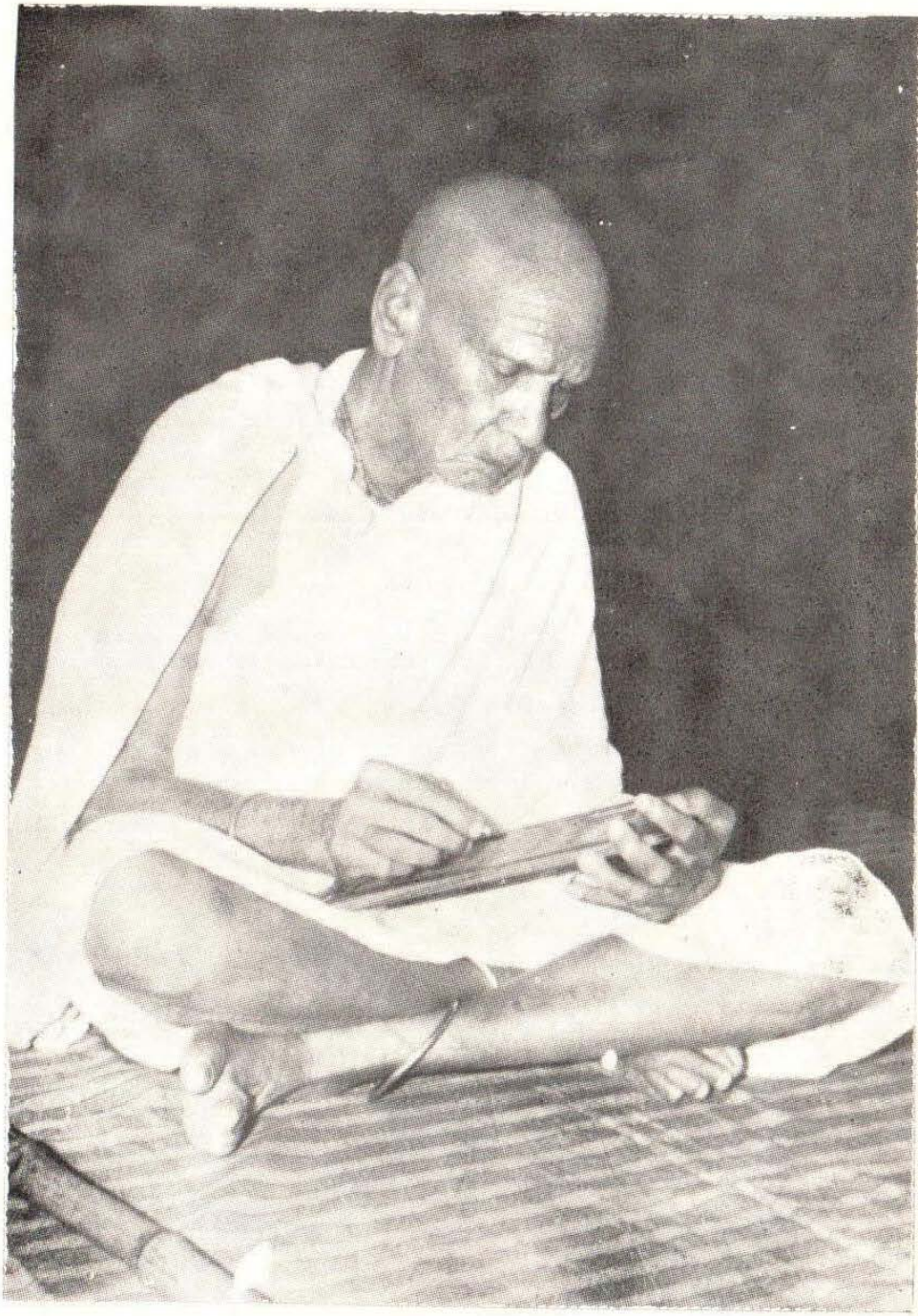

परमपूज्य गुरुदेव स्लेट पर उपदेश देते हुए

समर्पण

परम आराध्य देव,

आप के पुनीत जीवन चरित्र एवं उपदेशामृत का तो एक सागर है। मेरे संस्कारों के अनुसार मेरे पास है एक छोटी सी गागर। इसमें क्योंकर सागर को समाऊँ, था एक जटिल प्रश्न। इष्टदेव की कृपा हुई, प्रेरणा हुई और उठा मन में एक तूफान, बह चला उस तूफान में माँगते हुए बल, बुद्धि और साहस।

लेखनी उठाई, लेखनी में स्फूर्ति अनुभव हुई और सम्भव हुआ छोटी सी गागर में सागर की कुछ बूँदें एकत्र करना। विचार उठते गये, मैं लिखता गया और पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में समर्पित करता गया। दयालु प्रभो पढ़ने का कष्ट उठाते त्रुटियों को सुधरवाते, कमियाँ पूरी कराते और आगे का मार्ग दर्शन कराते। इस तरह उत्साह बढ़ता गया, लेखनी बढ़ती गई और धीरे-धीरे एक ग्रन्थ का रूप बन गया।

पूज्य गुरुदेव इसमें मेरा कुछ नहीं है, जो कुछ है सब आप का है। जैसा आपने बताया वैसा किया है, जैसी लिखने की प्रेरणा होती गई वैसा लिखा है। आपकी ही वस्तु आपके ही श्री चरणों में समर्पित करते हुए अति हर्ष है और लग रहा है इस जीवन की शाम सार्थक हुई।

पूज्य गुरुदेव मैं इस लायक नहीं हूँ। यह आपकी महान कृपा द्वारा ही सम्भव हो सका है। इसके लिए हम दोनों–मैं और मेरी धर्म-पत्नी जिसका घर का नाम है सावित्री देवी और आपका धरा नाम है "लक्ष्मी"—आपके आभारी हैं।

यह छोटी सी भेंट आपके चरणों में समर्पित है।

प्रार्थी

जगत नरायन

सावित्री देवी (लक्ष्मी)

आराध्य देव परमहंस राममंगलदास जी के

दो शब्द

जब हमारी अवस्था ४२ रही होगी, महाराज का शरीर शान्त हो चुका था, तो तमाम अजर अमर सिद्ध सन्त आने लगे, झुंड के झुंड और कहैं हमारा पद लिख लो, हमारा पद लिख लो तो हम कहा, का हमैं यादि रहैगा। तो सरस्वती जी प्रकट हो गयीं और आशीर्वाद दिया कि जो कोई जो कुछ तुमको बतायेगा या सुनायेगा सब तुम्हें यादि हो जायेगा तब से हमें यह सब यादि हो जाता है। हम कागज पर भोर में लिखते, दिन-दिन भर लिखते-लिखते थक जाते तो गोस्वामी जी ने कहा थोड़ी दिवाल के बल बैठकर आराम कर लिया करो, तो वैसा करने लगे, तो थकान चली जाती थी। वही सब बतियाँ इस पुस्तक में संग्रह करके लिखी गयी हैं, थोड़ी सी। हमने अच्छर ब अच्छर पढ़ा है।

सरस्वती जी के आशीर्वाद से सिद्ध संतों ने बहुत बातों का बोध कराया। बहुती बातें महाराज के साथ अनुभव होती थीं। बहुती बातें बाबा टीका दास के स्थान पर मालूम हुई थीं। भगौती का आदेश हुआ कुछ भक्तों के चरित्र लिखने का तो जो लिखे हैं उनमें से २०२ भक्त 'भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत' में छपे हैं। इनको जो पढ़ेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा उसका जीवन सार्थक होगा।

जिसको जिस देवी देवता में प्रेम हो मन लगाकर और अपने इष्ट में विश्वास करके थोड़ा जप या पाठ नित्य करे।

राम विवाह सं० २०३२
दिनांक इतवार
७ दिसम्बर, १९७५

परमहंस राममंगल दास जी
गोकुल भवन
अयोध्या

दो शब्द लेखक की ओर से

प्रेमियों,

पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से पूज्य गुरुदेव के जीवन चरित्र एवम् उपदेशामृत को ग्रन्थ रूप में आपके हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है। यह पूज्य गुरुदेव की प्रसादी है आप सबके लिए। मेरी यह भावना है कि आप अपने इष्ट-मित्रों सहित इसको धारण करके जीवन को कृतार्थ करेंगे और लाभ उठायेंगे।

मैं कोई लेखक नहीं हूँ। मुझको भाषा व मात्राओं का ठीक से ज्ञान भी नहीं है। यह लेखनी केवल पूज्य गुरुदेव की कृपा से सम्भव हो सकी है। यह मेरा प्रथम प्रयास है। इसमें अनेक प्रकार की कमियाँ एवं अशुद्धियाँ आप प्रेमियों को मिलेंगी। आप उन्हें मेरी ही कमियाँ समझकर क्षमा करें और उन अशुद्धियों एवं अपने नये सुझावों को भेजने का कष्ट करें जिससे यदि सम्भव हो सका तो अगले संस्करण में दूर करने का प्रयास करूँगा।

इस महान कार्य में पूज्य गुरुदेव की तो पूर्ण कृपा प्राप्त रही। इसके अतिरिक्त अपने सहयोगियों का भी पूर्ण सहयोग एवं प्रेम प्राप्त रहा है। इन सहयोगियों में विशेषकर हैं—डाक्टर सुरेन्द्र चन्द्र दुबे (अवकाश-प्राप्त)।

मैं सब गुरु भाइयों, गुरु-बहनों, माताओं तथा अन्य प्रेमी भक्तों के प्यार, उत्साहवर्द्धक प्रेरणा एवं सहयोग के लिए हृदय से आभारी हूँ।

विनीत

जगत नरायन

अवकाश-प्राप्त आयकर कर्मचारी

गोकुल भवन

अयोध्या

पिन : २२४१२३

तृतीय संस्करण की प्रस्तावना

इस पुस्तक का प्रथम प्रकाशन १९७७ में परम पूज्य श्री महाराज जी के जीवनकाल में ही हुआ था। पुस्तक की माँग इतनी ज्यादा हुई कि द्वितीय प्रकाशन की आवश्यकता लगने लगी। १९८० में द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् ऐसा लगता है कि पूज्य गुरुदेव श्री महाराजजी को आवश्यकता परलोक में होने लगी, क्योंकि स्वयं पूज्य गुरुदेव ने कहा, "काली जी आई हैं। कहती हैं चलौ, चलौ, चलौ।" बात ऐसी रही कि ३१-१२-८४ के १८ दिन पूर्व आपने अन्न त्याग दिया। १५ दिन केवल जल पीकर रहे। तत्पश्चात् जल ग्रहण करना भी छोड़ दिया और तीन दिन बाद "ओ३म्" कहते हुये स्वेच्छा से अपना शरीर छोड़ दिया। भक्तों को यह निश्चय करना कठिन हो गया कि वास्तव में गुरुदेव ने शरीर छोड़ दिया है या अखण्ड समाधि ले ली है। क्योंकि न तो हृदयगति थी न नाड़ी गति ही थी, पर फिर भी आँखें खुलती बन्द होती थीं। ऐसा न कभी सुना गया था न देखा गया था। तो एकमात्र उपाय अयोध्या के वरिष्ठ महात्माओं से निर्णय लेना था। उन लोगों के विचार से पूज्य श्री महाराजजी ने शरीर छोड़ दिया था। फिर भी शंका रही तो सिद्ध सन्त देवरहा बाबा से पूछा गया तो उन्होंने कहा "बच्चा यह सब सिद्ध सन्तों की लीला है। उन्होंने शरीर छोड़ दिया है। वे तो भगवत्स्वरूप थे। उनके बारे में जो कहा जाये वो थोड़ा है।" तत्पश्चात् मेरे गुरु भाई राजीवलोचन वर्मा ने, जो इस समय आई. आई. टी. कानपुर में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं और पूज्य गुरुदेव के कृपापात्र हैं, सिद्ध योगी संत श्री स्वामी राम जी से प्रश्न किया, "क्या सिद्ध संत श्रीमहाराजजी शरीर छोड़ने के बाद अपने भक्तों को वैसे ही प्यार करते हैं तथा उनका वैसे ही ख्याल करते हैं, जैसे शरीर रूप में करते

थे ?" तो स्वामी जी ने बहुत दृढ़तापूर्वक कहा, "बिल्कुल वैसे ही।" ये बात सिद्ध होती है बहुत से ऐसे भक्तों के वचनों से, जिनका सच्चा भाव है और जिन्हें वे आज भी मिलते हैं, उनकी समस्याएँ सुलझाते हैं और मार्गदर्शन देते हैं।

उदाहरण तो बहुत हैं, पर एक ज्वलन्त उदाहरण पाठकों को यह बताना चाहता हूँ कि गोकुल भवन के अलावा देश की राजधानी दिल्ली में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है, जिसका संचालन श्री विजय कुमार बंसल जी कर रहे हैं और उनके माध्यम से तमाम बहुत से लोगों का कल्याण हो रहा है। उनकी बेटी से पूज्य श्री गुरुदेव की वार्ता भी होती है, जो थोड़ी समय समय पर "अमृत बूँद" नामक पुस्तक में प्रकाशित की जाती है। यह पुस्तक निःशुल्क बाँटी जा रही है और जिन पाठकों की इच्छा हो वे दिल्ली जाकर स्वयं इस बात का अनुभव कर सकते हैं। पता है—

श्री विजय कुमार बंसल
डी १८-१९ राणा प्रताप बाग
दिल्ली—११० ००७

ऐसे उदाहरण भी हैं कि जिज्ञासु केवल चित्र ले जाते हैं और उसी के माध्यम से उनकी सांसारिक समस्याओं का हल हो जाता है। बहुत विस्तार है। थोड़ा लिखा है।

इस पुस्तक की माँग इतनी अधिक होने लगी कि तृतीय संस्करण निकालने की आवश्यकता महसूस हुई और पूज्य श्री गुरुदेव के कृपापात्र श्री सतीश चन्द्र वर्मा जी ने यह भार अपने ऊपर लेकर जिज्ञासुओं की जिज्ञासा पूर्ण करने का पुनीत कार्य किया। यह तृतीय संस्करण पूज्य श्री गुरुदेव के साकेतवास के बाद निकल रहा है, इसलिये ये भी आवश्यक प्रतीत हुआ कि प्रथम संस्करण १९७७ के बाद से ३१-१२-८४ तक का भी विवरण लिखना उचित होगा। एक अध्याय "पूज्य गुरुदेव के उपदेश" के नाम से इस पुस्तक में अध्याय ६ के रूप में जोड़ा जा रहा है, जिससे पाठकों को मार्गदर्शन मिलेगा, प्रेरणा मिलेगी और कल्याण

होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। विदित हो कि इस अध्याय में जोभी कुछ लिखा है वो पूज्य गुरुदेव के शब्दों में ही है जो समय समय पर उन्होंने अपने प्रिय भक्तों को दिये थे।

पूज्य गुरुदेव इतने दूरदर्शी थे कि स्थान गोकुल भवन का कार्य सुचारु रूप से चलता रहे, दीन-दुखियों की सेवा होती रहे, इस हेतु अपने जीवन काल में ही उन्होंने एक समिति का गठन कर दिया था जिसका नाम रखा गया है "परमहंस बेनीमाधव राममंगलदास सेवा संस्थान"। प्रश्न यह उठा कि पूज्य गुरुदेव के बाद गद्दी पर कौन बैठेगा। अयोध्या के संत समाज से विचार-विमर्श किया गया तो उन्होंने कहा, "उनके समान योग्य जब कोई होगा वही बैठ सकेगा। जब तक न होगा तब तक व्यवस्थापक के रूप में प्रतिष्ठित व्यक्ति ही, जिसे समिति का अध्यक्ष माना जायेगा, कार्य करता रहेगा; गोकुल भवन न तो मठ है और न ही आश्रम। यह सिद्ध पीठ है। इस समय अयोध्या में कोई सिद्ध नहीं है।" जो भी कोई गोकुल भवन का शिष्य बनना चाहेगा उसे केवल व्यवस्थापक दीक्षा देगा, पर गुरु केवल परमहंस राममंगलदासजी ही होंगे—जैसा सिक्खों की परम्परा में ग्रन्थ साहब को ही गुरु माना जाता है। इसी प्रकार के ग्रन्थ पूज्य गुरुदेव के भी हैं जो जब समय आवेगा, गुरुजी की कृपा से प्रकाशित किये जायेंगे।

श्री सतीश चन्द्र वर्मा जी का परिचय दिये बिना यह प्रस्तावना अधूरी ही रहेगी। मालूम नहीं वर्मा जी के पूर्व जन्म के क्या संस्कार थे कि उनका संपूर्ण परिवार भगवत्भक्त है और वर्मा जी स्वयं महापुरुषों का बहुत आदर करते हैं। वे शिष्य तो योगिराज श्री देवरहा बाबा जी के हैं, किन्तु परमहंस राममंगल दास जी और सिद्ध संत श्री स्वामी राम जी के भी उतने ही कृपा-पात्र हैं। सेवानिवृत्ति के बाद वे इस समय पूज्य श्री स्वामी राम जी के आदेशानुसार उनके एक महान कार्य हिमालयन इन्स्टीच्यूट हास्पिटल ट्रस्ट का अस्पताल देहरादून के निकट जौली ग्रान्ट में बनवा रहे हैं और अपना जीवन

सफल कर रहे हैं। मेरी हार्दिक बधाई उनके व उनके परिवार के मंगलमय जीवन के लिये है और इस पुस्तक के प्रकाशन में उनके सहयोग के लिये मैं बड़ा आभारी हूँ। यद्यपि ये भी सत्य है कि यह प्रकाशन भी परमपूज्य श्री महाराजजी की इच्छा व कृपा से ही इनके माध्यम से हो रहा है।

मुझे पूरी आशा व विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन के द्वारा भगवद्भक्तों व अध्यात्म-साधकों को प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिलेगा।

गोकुल भवन
अयोध्या
27.5.92

विनीत
जगत नरायन

प्रथम संस्करण की प्रस्तावना

आज संक्रान्ति सं० २०३१ तदनुसार १४-१-७५ है। आकाश निर्मल है। मंद-मंद शीतल वायु चल रही है। पक्षी चहचहा रहे हैं। मैं लक्ष्मी निवास गोकुल भवन वशिष्ठ कुण्ड, अयोध्या, में पूर्व मुँह छत पर बैठा हूँ। सूर्योदय का समय है, आकाश में लाली छाई हुई है। दक्षिण ओर कुबेर टीला, अंगद टीला, हनुमान गढ़ी तक एक ऊँचा टीलों का दायरा है। सामने घाटीनुमा मैदान आलू के खेत से हरा भरा दूर तक नजर आता है। पहाड़ ऐसा दृश्य लग रहा है। मौसम बड़ा सुहावना लग रहा है। मन एकाग्र है। सुमिरन चल रहा है, ध्यानावस्था में कोई अज्ञात शक्ति प्रेरणा देती है कि अपने गुरु जी परमहंस श्री १००८ बाबा राममंगलदास जी के विषय में कुछ लिखो। तरह-तरह के विचार उठने लगते हैं, क्या लिखें, पढ़ा भी अधिक नहीं है, ज्ञान भी कुछ नहीं है। उत्तर मिलता है, जो कुछ जाना सुना है, वही लिखो, जो पढ़ेगा उसका कल्याण होगा, प्रेरणा पायेगा।

उसी अवस्था में यह पुनीत कार्य करने का संकल्प करता हूँ और पूज्य गुरुदेव की महती कृपा के प्रति नतमस्तक हो जाता हूँ। और अपनी टूटी-फूटी भाषा में गुरुदेव का जीवन चरित्र व उनके अनमोल उपदेश लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। गुरु जी तथा हमारे इष्टदेव बल बुद्धि दे और इस पुनीत कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने की शक्ति प्रदान करें। उनका चाहा ही होगा, मुझे विश्वास है।

पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में स्थाई रूप से अयोध्या वास करने के विचार से सन् १९६९ में एक छोटा सा आवास (मकान) गुरुदेव की आज्ञा से गोकुल भवन के प्राँगण में निर्माण करा लिया। ४ जनवरी १९७१ को रिटायर होकर धर्मपत्नी सहित यहाँ निवास करने लगा। तब से चौबीसों घंटा गुरु दर्शन तथा उनके वचनामृत के पान करने का

सौभाग्य अनवरत रूप से प्राप्त हो रहा है। गुरु-भाइयों में अकसर यह चर्चा हुआ करती थी कि पूज्य गुरु जी का जीवन चरित्र लिखा जाय। इसकी कमी सब भक्तों को बहुत खटकती रहती है। यह विषय जब कभी कोई भक्त गुरु जी के सामने रखता तो गुरु जी कह देते "क्या यह कोई भजन है", बस बात रह जाती। १९७२ में राजा राम सिंह, गंगवल राज्य, जिला बहराइच के, अपनी जमीन जायदाद अपने बच्चों के सुपुर्द कर के गुरु चरणों में रहने के विचार से गोकुल भवन, अवध में आये। उन्होंने इस पुनीत कार्य को सम्पन्न करने का प्रयास किया परन्तु दैव-इच्छा कि वह इस महान कार्य को अपने जीवन काल में पूरा न कर सके। उनके द्वारा छोड़े हुए अधूरे कार्य को उस अज्ञात शक्ति द्वारा आदेश दिये जाने पर, नए सिरे से शुरू करके पूरा करने का अपना कर्तव्य समझकर, वही प्रयास आरम्भ किया है। यह प्रयास राजा साहब द्वारा इंगित मार्ग एवं गुरुदेव के समय-समय पर भक्तों को प्रसाद रूप में वितरण किये गये वचनामृत के आधार पर किया। चेष्टा यही की है कि जहाँ तक मिल सके या हो सके चरित्र, उपदेश या घटनाएँ गुरु जी के शब्दों में ही दी जाँय।

—जगतनरायन

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय १ १

जन्म १

कुण्डली २

शिशु अवस्था (१) जब आप ६ माह के थे ३

" (२) जब आप १ साल के थे ३

" (३) जब आप १० साल के थे ३

" (४) जब आप ११ साल के थे ४

विद्या आरम्भ, कान छेदन जनेऊ ५

विवाह, पुत्र, स्त्री-पुत्र निधन ६

बचपन गुरु जी के शब्दों में ८

भक्ति भाव बाल काल में ११

१२ की अवस्था में राम नाम की महिमा का प्रमाण ११

१२ की अवस्था भूलन शाह के दर्शन १२

इलाही काका द्वारा भूलनशाह के उपदेश १३

अध्याय २ १५

पूज्य गुरुदेव की दीक्षा १५

दादा गुरु का परिचय १५

दादा गुरु कितने साल किस स्थान पर रहे १७

गुरु परम्परा १८

स्वामी रामानन्द के द्वादश महाभागवत १९

गुरुदेव का १६वां वर्ष—पिता का शरीरान्त १९

१७वां वर्ष—हनुमान जी का दर्शन २०

१८ से २२ तक भ्रमण २०

बाबा टीका दास द्वारा ३५ अक्खरी का उपदेश
बाबा की कुटी पर २१
हनुमान जी का दर्शन—चारों भाई,
महारानी जी का दर्शन २१
बाबा नन्दराम, जिनकी कोठरी में सर्प घूमते थे, का
दर्शन व वार्ता २२
बाबा तेजादास के दर्शन २३
भरथरी जी के दर्शन २३
२३ की अवस्था—शुकदेव जी का दर्शन २४
१६ की अवस्था—बाबा गुलजार शाह से वार्ता २५
ठा. रामचेतन दास को उपदेश करके ओला गिराने
वाले, अन्धा करने वाले, आग लगाने वाले मंत्र छुड़वाये २६
अध्याय ३ २८
वैराग्य—दो रुखा शीशा का उदाहरण २८
२८ वर्ष की अवस्था से दादा गुरु के साथ निवास २९
दादा गुरु के स्थान रामघाट का परिचय ३०
दादा गुरु के स्थान पर क्या क्या सेवा करते ३०
एक बँधे साड़ की रक्षा ३१
एक जीव की रक्षा ३२
एक गाय की रक्षा ३३
एक दूसरी गाय की रक्षा ३४
एक साँड़ की रक्षा ३४
एक कुत्ते व सर्प की रक्षा ३५
बन्दरों की रक्षा ३६
एक बालक साधू की रक्षा ३७
अनुभव व उपलब्धियाँ ३७
१. राम विवाह देखा ३८

२. राजा जनक जी के दर्शन ३८
३. गुरु नानक देव जी के दर्शन ३८
४. मुसलमान, बंगाली के घर खानपान ३९
५. शंका: क्या भोग लगता है—समाधान ४०
६. भगवान का प्रत्यक्ष स्थूल रूप से सरजू स्नान ४१
७. कच्चा साधक अलग बैठे ४१
(i) दादा गुरु १४ सूर्य तक पहुँचे ४२
(ii) बाबा टीकादास १२ सूर्य तक पहुँचे ४२
(iii) गुरुदेव १२ सूर्य तक पहुँचे ४२
मणि पर्वत परिक्रमा में सिद्धों के दर्शन ४३
दादा गुरु से गुरुदेव ने वर मांगा ४३
३० की अवस्था में काठियावाड़ के अपूर्व भक्त को
दादा गुरु का उपदेश ४४
गोकुल भवन में सिद्धों के दर्शन ४५
दादा गुरु का कंठी जनेऊ त्याग तब गुरु जी की
अवस्था ३३ की थी ४५
सरयू में दूध की लहर ४६
३६ की अवस्था में कई युग के नंगे संत (हठयोगी)
से वार्ता ४६
मर्द शहीद के दर्शन—३७ की अवस्था ४८
३९ की अवस्था में राधा महारानी के दर्शन व वार्ता ५०
३९ की अवस्था में जानकी महारानी के दर्शन व वार्ता ५०
४० की अवस्था में भैरव गिरि औघड़ के दर्शन व वार्ता ५१
४० की अवस्था में दादा गुरु की बीमारी के कारण
कठिन सेवा द्वारा परीक्षा ५२
दादा गुरु का प्रमाण-पत्र सेवा का ५३
फिर कलियुग महाराज का ५३
फिर भद्रसेन जी का ५४

फिर मैथिलीशरण जी माधुरी कुञ्ज का परीक्षाफल—
दादा गुरु का आशीर्वाद ५४
पाँच महावाक्य—उनके बाद प्राणियों का कल्याण
करने का भार सौंपना ५४
कठिन सेवा के कारण स्वास्थ्य का बिगड़ना ५५
गोकुल भवन का परिचय ५६
गोकुल भवन के कुँआ में तंगा जी का आना ५७
अध्याय ४ ५९
४१ की अवस्था सन् १९३४ स्वतन्त्र ५९
४९ की अवस्था सन् १९४२—मंत्र देने में दिन
समय घड़ी का विचार छोड़ दिया ६०
आचार विचार नहीं बताते ६१
भजन की विधि—गृहस्थ व साधुओं के लिए ६२
भूलनशाह का सोंटा—५ तत्व ६३
हर जाति हर प्रकार के शिष्य समुदाय का परिचय-
सब मजहबों को मानते हैं ६४
बड़ी बुआ, मर्द शहीद, कलन्दर शाह, शीश पैगम्बर,
नाजे, गाजे, जिकिर शाह, खजही पीर, नौगजा पीर,
इब्राहीम शाह, अब्दुल अली ६५
१२-८-७३ अफ्रीका नुमाइश में पहुँचे ६६
दरोगा को जन्मभूमि मसजिद में भेजा ६६
फिर कलमा बताया—अयोध्या खुर्द मक्का ६७
अगस्त १९७२—प्रश्न-क्या दादा गुरु के समय ये
मन्त्र देते थे—करामत शाह का पद ६८
दादा गुरु के पांच महावाक्यों का पालन ७०
मुरशिद की पहिचान ७०
मन की बदमाशी रोको ७२
मन पर वार्ता—गीता कंठ किए पण्डित से उन्नाव में ७२

शुद्ध धान्य की परिभाषा ७३
सच्ची कमाई की परिभाषा ७३
दूध भिक्षा रक्त भिक्षा की परिभाषा ७४
माया की चाल—रामायणी रामदास का उपदेश ७५
कटु बचन का असर—शुद्ध अशुद्ध शब्द ७५
रोजाशाह का उपदेश-सतोगुणी ७६
रजोगुणी तमोगुणी शब्द ७६
पर उपकार से तपधन धीरे धीरे इकट्ठा होता है ७७
आँखी कान ७८
झूठ का बाप पाप, पाप का बाप लोभ ७९
भाव पर ८०
सफाई शाह का पद भाव पर ८१
मूर्ति पूजा पर ८१
समय, स्वांसा शरीर भगवान का है ८२
साधु कौन ८२
भला मानुष बुरा मानुष ८३
बदला चुकाना पड़ता है ८४
साइत विचार ८४
सूक्ष्म शरीर, ८५
नाम ८६
चारौं ध्यान ८७
कर्म, संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण ८८
अभ्यास करसे का स्थान ८९
गाजी मियां का पद—हाट, बाट, घाट ९०
साधना के नियम—नागा रामदास ९०
सुमिरन न करने से क्या ९२
गाजी मियां का पद—किया सुमिरन नहीं ९२
गाजी मियां का पद—नाम की फूल रही ९३

दूसरा पद—रूप की छवि देख ... ९३
तीसरा पद—वेद और शास्त्र पढ़ि ९३
नाम की तान—गाजी मियां का पद दीनता शान्ति की नकलें ९४
शंका समाधान ९४
प्रश्न—कल्याण मार्ग कैसे मिले ९५
" राम क्या है ९५
" भजन में अशान्ति ९५
" खफीफ शाह का पद ९६
" जीवन का प्रयोजन ९६
" नाना पंथ ९७
" सतसंग किस का ९८
" ४० के ऊपर बुढ़ापा ९८
" मन शान्त कैसे हो ९९
मन लगने की पहिचान ९९
प्रश्न—दया धर्म का क्या विस्तार है १००
" कृपा १००
" साधु की महिमा १०१
" अयोध्या में कौन-कौन महापुरुष दादा गुरु के पहले हुए १०१
" मनुष्य यन्त्र चलाने वाला गुरु १०२
" भण्डार में बरक्कत क्यों नहीं होती १०२
" मन को रोकने का सरल उपाय १०३
" अन्धे शाह का पद-रकार मकार महीसूर का अर्थ-दुर्गाजी द्वारा १०५
मजीद के पद और दोहा १०५
वजहन का पद १०६
विशेश्वर की कथा द्वारा गुरुदेव नाम के ज्ञाता दादा गुरु के बाद १०६

हुसेन गंज की बूढ़ी माता-बगैर नाम जाने नहीं पहुँच सकते १०९
गुरुदेव द्वापर में कृष्ण भगवान के सखा शुकदेव ग्वाल ११०
जहाँ का संस्कार होता है वहीं होता है ११०
हत्या नीच, वैश्य, छत्री, ब्राह्मण औरत को मारने पर ११०
अयोध्या जी में ४ हठयोगी १११
अयोध्या जी सिद्धों की सराय है १११
समर्थ रामदास का पद—काम, क्रोध, लोभ ··· ११३
राधा जी का पद—गुरु कहत हैं कौन को ११३
योगानन्द जी का पद—करै दण्डवत गुरु की ११४
यहाँ के चार हजार वर्ष कैलाश, बैकुण्ठ का एक दिन ११४
बानियाँ—परा सतयुग की, पैशंती द्वापर की, बेखरी-
कलियुग की ११५
भगवान कठिन कुअंक मिटा देते हैं ११५
पद चंदरानी जी का—सुरति शब्द पर ११६
पद अन्धे शाह का—ज्ञानी से होवै विज्ञानी ११७
चौपाई अन्धे शाह की—मज्जन फल देखी ततकाला ११७
चौपाई-अन्धे शाह की अवध प्रभाव जान सोई प्रानी ११८
पुराने संगी-पूज्य गुरुदेव के विचार ११८
सपन-पूज्य गुरुदेव के विचार ११८
व्रत-पूज्य गुरुदेव के विचार ११९
पद-गोस्वामी जी का—राम विवाह पर ११९
पद-विन्ध्येश्वरी माई—राज सदन में ··· १२०
पद-अलीशाह जी का—मार्ग मुरशिद ने बताया १२०
अध्याय ५ १२२
परस्वार्थ पूज्य गुरुदेव कैसे २ करते हैं १२२
सेवा से संस्कार का उदाहरण-बूढ़ी माता १२४
सर धड़ मान दिया १३०
भगवती वार्ता १३१

दान जप का फल १३१
रोग लेना १३२
कुण्डली विचार १३२
जिस पर दया करते हैं किस खूबसूरती से करते हैं
सन्नो का उदाहरण १३४
जंत्र मंत्र, झाड़ फूँक १३६
खिचड़ी या आटा दान का माहात्म्य १३७
४ अक्षरी मन्त्र का प्रभाव १३७
अन्य उपाय क्या बताते हैं १३७
भूत व्याधि-(१) खजांची के मन्दिर के महन्त १३८
(२) धर्मपुर के ब्राह्मण १३९
(३) फैजाबाद नगरपालिका के अध्यापक १३९
(४) कच्छ प्रान्त की मडेली मां १४०
कानपुर की बुढ़िया का खोया हुआ लड़का ४ अक्षरी
द्वारा घर वापस आया १४१
आर्थिक सहायता १४१
भोग प्रसाद—लाई चना १४२
सहनशीलता—मुसलमान औरत का बच्चा कन्धे पर
सर रखकर ३ घन्टा सोया १४३
निर्माण—विष्णु पद—भरत मन्दिर पर भवन, गंगा
कूप, रानूपाली गुरु सागर, रानूपाली शंकर जी का
मन्दिर : देवीजी का चबूतरा १४३
वन्दना १४५
अध्याय ६ पूज्य गुरुदेव के उपदेश १४६
भजन १४६
देव अनुष्ठान के नियम १५६
भगवान की महिमा १५७
राम नाम की महिमा १६०

सेवा	१६०
आना जाना	१६२
खान पान	१६३
कर्म भोग	१६७
दीनता	१६९
प्रेम	१७२
समर्पण, विश्वास	१७३
भाव	१७३
आश्रम व्यवस्था	१७४
सच्चा भजन	१७५
गुरु प्रेरणा	१७५

।। गुरु-आरती ।।

ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।
जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी स्वामी दीनन हितकारी ।
जय-जय मोह विनाशन, जय-जय मोह विनाशन भव बंधन हारी ।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरति धारी, स्वामी गुरु मूरति धारी ।
वेद पुरान बखानत, वेद पुरान बखानत, गुरु महिमा भारी ।
ओ३म जय-जय गुरुदेवा ।।

जप तप तीरथ संयम, दान विविध दीन्हें, स्वामी दान विविध दीन्हें ।
गुरु बिन ज्ञान न होवे, गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि जतन कीन्हें ।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।।

माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे, स्वामी जीव बहे सारे ।
नाम जहाज बिठा कर, नाम जहाज बिठा कर, गुरु पल में तारे ।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।।

काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारी, स्वामी चोर बड़े भारी ।
ज्ञान खड्ग दे कर में, ज्ञान खड्ग दे कर में, गुरु सब संघारी ।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।।

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें, स्वामी निज-निज गुण गावें ।
सबका सार बताकर, सबका सार बताकर, गुरु मारग लावें ।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।।

गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी, स्वामी सब पातक हारी ।
बचन सुनत तम नाशै, बचन सुनत तम नाशै, सब संशय टारी ।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।।

तन मन धन सब अर्पण, गुरु चरनन कीजे, स्वामी गुरु चरनन कीजे ।
ब्रह्मानंद परमपद, ब्रह्मानंद परमपद, मोक्ष गती लीजे ।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा ।।

अध्याय १

जन्म

संत शिरोमणि परमहंस श्री १००८ बाबा राम मंगल दास गुरुदेव जी का जन्म फाल्गुन कृष्ण १० संवत् १९४९ तदनुसार १२ फरवरी १८९३ दिन बुधवार रात्रि २ बजे (शिवरात्रि से ३ दिन पहले) ग्राम ईसरवारा, तहसील सिधौली, थाना सदरपुर, परगना महमूदाबाद, जिला सीतापुर, प्रान्त उत्तर प्रदेश में एक धोबिया गोपनाथी मिश्र कान्यकुब्ज ब्राह्मण वंश में हुआ। पिता का नाम पं० शिवदर्शन लाल तथा माता का नाम श्रीमती महारानी देवी था। यह चार भाई तथा दो बहने हैं, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

(१) श्री चन्द्रिका प्रसाद (२) श्री भारत प्रसाद (३) श्री अर्जुन लाल (४) श्री सुन्दर लाल (५) श्रीमती मुन्नी देवी (६) श्रीमती जनक दुलारी।

चारों भाइयों में केवल भारत प्रसाद के एक मात्र पुत्र श्री सरजू प्रसाद हैं, बहनों में केवल जनक दुलारी के एक मात्र पुत्र श्री मदन मोहन लाल हैं।

पूज्य गुरुदेव के पिता जी का शरीर ५८ वर्ष की अवस्था में शान्त हुआ था और माता जी का ९६ की अवस्था में। दोनों का अन्तिम संस्कार गुरु जी ने स्वयं ही किया। पिताजी का शरीर जब छूटा तब गुरु जी की अवस्था १६ साल की थी।

कुण्डली के अनुसार आपका राशि का नाम पं० योगेश्वर दास है। माता-पिता ने आपका नाम पं० अर्जुन लाल रखा, गुरु ने आपका नाम राम मंगल दास रखा। कुण्डली का नाम कुण्डली में रह गया, घर का नाम घर में रह गया और गुरु का रखा नाम ही प्रचलित हुआ, न केवल अयोध्या तथा आस-पास के जिलों में बल्कि समस्त भारत में।

इसका पता पाठकों को आगे चलकर उन घटनाओं से चलेगा जो वे इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

ज्योतिष का ज्ञान रखने वाले जिज्ञासु भक्तों के हेतु पूज्य गुरुदेव का जन्मांग टीप देना अनुचित न होगा। जन्मांग इस प्रकार है।

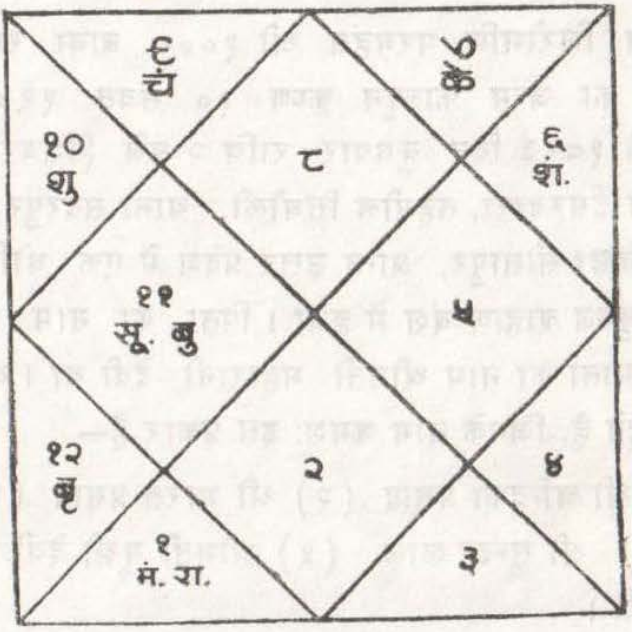

पूज्य गुरुदेव की माता जी बताती थीं कि उनके सब बच्चों में अर्जुन लल्ला का जन्म अद्भुत ढंग से हुआ था। प्रसव के समय ऐसा लगा कि एक तेज पुंज उनकी तरफ आ रहा है और पास आकर विलीन हो गया। उन्हें सुस्ती आ गई और इनके प्रगट होने में कोई विशेष कष्ट न हुआ। कहती थीं कि सेवा सुश्रुषा में भी इन्होंने तंग न किया, पड़े-पड़े मुस्कराया करते थे, हर जाति के स्त्री पुरुष इन्हें देखकर आकर्षित होते और ज्यों ही गोद में लेने को हाथ बढ़ाते, यह उनकी गोद में चले जाते, गोरे-गोरे सुन्दर स्वरूप के थे ही, हमारा स्नेह भी और सब बच्चों की अपेक्षा इनसे अधिक था।

शिशु अवस्था

पूज्य माता जी ने शिशु अवस्था की जो आश्चर्यजनक घटनायें बताईं वे इस प्रकार हैं :—

(१) **जब आप ६ माह के थे**–हम मायके गईं। वहाँ एक पगली कुम्हारिन थी। वह आई और कहने लगी कि अगर हम तुम्हारा लल्ला घंटा-खाँड खिला लें तो हम अच्छी हो जायेंगी, ऐसा हमारा मन कहता है। यह बात हमारी भावजों को पसन्द न थी, पर हमको उस पर बड़ी दया आई और निःसंकोच हमने लल्ला को उसकी गोद में रख दिया, कहा–ले। वह लल्ला को लेकर कोठे पर चली गयी, घंटा-खाँड खिला कर वापस आई और लल्ला को हमारी गोद में देकर बोली "बालक जुग-जुग जिये, मैं तो अच्छी हो गई।" वास्तव में उसका पागलपन जाता रहा। मैं नहीं कह सकती कि केवल खिलाने में कौन-सा जादू था। हाँ, यह अवश्य है कि इस घटना से मेरा वात्सल्य और गहरा हो गया।

(२) **जब आप एक साल के थे**–तो इनको मुहाँ का रोग हो गया, कोई दवा लगती ही न थी, कैसे खाँये, पियें। हम फिर मायके पहुँचीं। मायके में मनमानी करने की स्वतन्त्रता होती ही है। अतः इन्हें शंकर जी के मन्दिर पर लेकर गई, दूध शंकर जी पर चढ़ाया, चढ़ा दूध इनके मुँह में डाला और लगाया, फिर मन्दिर से बाहर आकर पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर प्रार्थना की "महाराज, आप हमारे लल्ला का मुहाँ अच्छा कर दो, मैं कहाँ अब दवा कराने जाऊँ" और पास में पड़े पीपल का पक्का फल इनके मुँह में डाल कर चली आई। तो सबने देखा कि ये फल धीरे-धीरे चूस रहे हैं। दो दिन में मुँहा अच्छा हो गया। अब ऐसा लगता है कि मुहाँ का खेल केवल शंकर जी का प्रसाद पाने हेतु एक वर्ष की अवस्था में किया था।

(३) **जब आप १० साल के थे**–गुरु जी के शब्दों में "जब अवस्था १० साल की थी, घर के सामने एक चबूतरा ५ हाथ लम्बा ३ हाथ चौड़ा बाँधा। उस पर एक पेड़ तुलसी का लगाया। तीन मूर्तियाँ शंकर जी की और कुछ बटियाँ जो घूमने-फिरने में बटोर लाते थे रखा। एक मूर्ति जुगुल काका के यहाँ से उठा कर लाये। जुगुल काका उसे एक मन्दिर से उखाड़ लाये थे और अपने घर रखे थे। उनके तीन

लड़के मर गये तब हम ले आये। दूसरी मूर्ति १२ सेर की ठाकुरों के गाँव धैला से लाये। यह मूर्ति मुसलमानों के पिछवारे शिवाला में थी। मुर्गा मूतते थे। तीसरी मूर्ति घर के पास इमली पर से लाये। यह इमलेश्वर बाजते थे।"

पूज्य माता जी बताती थीं कि इस चबूतरा की रोज सफाई करते, झाड़ू लगाते, लीपते-पोतते खूब सफाई रखते। यह काम इनके पिता, चाचा, ताऊ को अच्छा न लगता था। वे मना करते. ये न मानते तो हमको (हम माँ थी न) बड़ा दुःख होता, जब इन पर डाट पड़ती। एक दिन सवेरे अँधेरे में जब यह झाड़ू लगाने गये तो हम भी पीछे से बुलाने गयीं तो देखा शंकर जी परिवार सहित बैठे हैं, बड़ा प्रकाश है, हम कुछ बोल ही न सकीं। तब भैया ने कहा "अम्मा तुमने देखा, बताओ हम कैसे सफाई न करें," फिर कहा, "अम्मा तुमने दर्शन पा लिया किसी से कहना मत, नहीं तो हमें सब तंग करेंगे।"

तब से हम इनकी रुचि में बाधा न डालती थीं, जो इनका मन चाहे करें। पर यह कोई गलत काम या मर्यादा के विरुद्ध कोई बात न करते थे। शंकर जी के दर्शन के साथ-साथ यह बात हमारे मन में बैठ गई थी कि भैया कोई संस्कारी जीव हैं, क्या हैं, आगे चलकर क्या होंगे इसकी चिन्ता लगी रहती थी। फिर एक घटना ऐसी घटी जिससे यह चिन्ता शान्त हो गई।

(४) जब आप ११ साल के थे—घटना यह थी कि एक महात्मा अलफी पहने हाथ में कमंडल लिए आये। अर्जुन के पिता ने आदर भाव से उन्हें आसन दिया और प्रार्थना की कि जो भोजन आप पावें उसका प्रबन्ध किया जाय। वे बोले "मैं भोजन नहीं पाऊँगा" तब आग्रह करने पर दूध लेना स्वीकार किया। दूध पाकर बोले "जो मांगना हो माँग लो," तो अर्जुन के पिता ने कहा, "आप अन्तर्यामी हैं, सब जानते हैं, क्या माँगू" तो वे कहे "तुम्हारा अर्जुन नामक बालक संसार में प्राणियों का कल्याण मार्ग दर्शक होगा और तमाम जीवों को तारेगा।" बाद में ज्ञात हुआ कि शंकर जी स्वयं इस वेष में आकर बता गये।

तब क्यों न माँ आप को (पूज्य गुरुदेव को) असाधारण बालक समझें।

पूज्य माता जी ने यह भी बताया था कि जब से भैया कुछ चलने-फिरने लगे, बोलने लगे और समझने लगे तब से आज तक जिस बात को मन में ठान लिया पूरा करके ही छोड़ा चाहे वह कितना ही कठिन हो या उसे पूरा करने में कितनी ही कठिनाइयाँ हों। शरीर से कभी कमजोर न रहे, आत्मिक बल अपार था।

विद्या आरम्भ, कानछेदन, जनेऊ

पूज्य गुरुदेव का विद्या आरम्भ ५ की आयु में, कानछेदन ७ की आयु में और जनेऊ ११ की आयु में हुआ था। पूज्य माता जी बताती थीं कि पढ़ने में मन कम लगता था। सिर्फ दो किताब तक पढ़ा है। खेलने-कूदने और पहलवानी का शौक बहुत था। १०, १२ संगी लड़कों के साथ जोर करते और कराते थे। दाँव पेंच स्वतः खूब आते थे। तालाब पर जाते घंटों तैरने का अभ्यास करते थे।

हथियार (फरी, गतका, ढाल, तलवार, लाठी बिनवट आदि) चलाना सीखा। ढ़ेला चलाना सीखा, ढ़ेला बहुत तेज फेकते थे। ढ़ेले का निशाना बहुत सही था।

गाने बजाने का भी शौक था। घर की चौपाल पर गाना बजाना होता था। पहले सुनते रहे, फिर स्वयं ताल सुर मिलाने लगे। जब अपनी मौज में रात को गाते तो मीलों आस-पास के गाँवों में आवाज जाती, लोग कहते अर्जुन बहुत बढ़िया गाता है।

फिर रोगियों की सेवा करने का विचार उठा तो हकीम भूधर दास के पास गये। उनके साथ ४ साल रहकर रोग की पहिचान करना, किस रोग में क्या दवा देनी चाहिए, सीखा। रात-दिन किसी समय भी रोगी आ जाय उसे दवा देते, जरा भी अलसाते न थे। ऐसे रोगी भी आते जिनको डाक्टर, वैद्य, हकीम जवाब दे देते, कहते रोग असाध्य है, उन्हें भी दवा देते, जरूरत पड़ने पर सेवा भी करते, हाथ पैर से, रुपये

पैसे से । वह अच्छे हो जाते । तो लोगों का विश्वास था कि अर्जुन का इलाज अचूक है । रोगियों की बड़ी भीड़ लगी रहती थी ।

पूज्य गुरुदेव ने बताया "हकीम भूधर दास सीतापुर से १५ कोस ग्राम बड़ी सेज में रहते थे । कौम के हिन्दू तेली थे । इनके १४ पुश्त से हकीमी होती थी । इनके छोटे भाई का नाम तेजा दास था । हकीम जी हमारे दूसरे जन्म के बड़े भाई थे । सीतापुर से ८ कोस पर ग्राम हरगाँव में रहते थे, तब जाति के ठाकुर थे । वे छोटी बहन की धरोहर खा गये थे तो इस जन्म में तेली हुए, हम ब्राह्मण हुए । २२ की उम्र में जब मिसरिख में मिले थे तब यह दूसरे जन्म की पहचान खुली, बात हुई । जब हम हिकमत सीखने गये थे तब पूर्व जन्म की पहचान न खुली थी ।

विवाह, पुत्र, स्त्री-पुत्र निधन

पूज्य गुरुदेव का विवाह १५ की आयु में हुआ था । हालाँकि आप तो खेलने-कूदने गरीबों की सेवा करने में, गाने बजाने में, पूजा पाठ करने में, साधु संगति करने में मस्त रहते, पर माँ बाप को शान्ति कहाँ । ज्यों-ज्यों आप की उमर बढ़ती जाती त्यों-त्यों माता पिता को इनकी शादी करने की चिन्ता बढ़ती जाती । उस जमाने में अधिकतर शादी छोटी उमर में हो जाने की प्रथा थी । अब भी बहुत लोग कन्या का विवाह छोटी उमर में कर देते हैं । गौना जब कन्या सयानी हो जाती है तब देते हैं ।

हर माँ बाप का यह कर्तव्य होता है कि अपने बच्चे का सुचारु रूप से पालन पोषण करें, अपनी सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा दें, समय पर शादी कर दें, फिर संसार सागर में अपने-अपने कर्मानुसार सुख-दुःख भोगने को छोड़ दें । अतः आपका विवाह संस्कार करने हेतु जहाँ-तहाँ से बात चलने लगी । १४ की अवस्था में बड़े चाचा ने विवाह पास के गाँव धौकलगंज के लल्लू तिवारी की लड़की से तय किया । पूज्य गुरुदेव शादी न करना चाहते थे, तो क्या किया कि महतारी से २५ रु० लेकर

लखनऊ भाग आये और बँदरिया बाग में बैठ कर भजन करने लगे। संयोग से चचेरे भाई से भेंट हो गई। तो उन्होंने कहा–"तुम्हारी शादी पक्की हो गयी है, घर चलो।" तो उनके साथ चले आये। निश्चित तिथि पर चाचा बारात लेकर लड़की वाले के गाँव धौकलगंज पहुँचे। वहाँ लड़की के पिता ने कहा, "लड़का साधु हो गया है, मैं इसका विवाह अपनी लड़की से न करूँगा।" इस तरह यह शादी टल गई, बारात वापस आ गयी।

पर अगले वर्ष फिर शादी की चर्चा २० कोस सीतापुर से आगे नत्थापुर के पंडित कुंज बिहारी अवस्थी की बहन चन्द्रानी देवी से उठी और खुशी-खुशी विवाह हो गया।

शादी होने के बाद भी पूज्य गुरुदेव के स्वभाव तथा दैनिक जीवन में कोई परिवर्तन न आया। अपना वही कार्यक्रम पूजा पाठ, सेवा धर्म इत्यादि चलता रहा और साधु संगत महापुरुषों व महात्माओं की सेवा में समय और अधिक व्यतीत करने लगे। १८ से २२ की आयु तक घूमे–एक धोती, ४ लंगोटी, १ लोटा-डोरी और १ सोटा लेकर। किसी के दरवाजे नहीं जाते थे, जो पाती कडू न हो या गूलर की गदिया खा लेते थे–चार-चार दिन पानी पीकर रह जाते थे। जाड़ा गर्मी कुछ न लगता था।

भगवान की लीला भगवान जाने। २५ की अवस्था में पुत्र हुआ, सब परिवार वालों को बड़ी खुशी हुई। पर यह खुशी क्षणिक ही रही, क्योंकि तीन माह बाद स्त्री का निधन हो गया और ढाई साल बाद पुत्र का भी शरीर शान्त हो गया। आपके पिता जी का शरीर, जब आपकी अवस्था १६ साल की थी, तभी शान्त हो चुका था।

इस प्रकार २७ की अवस्था तक गृहस्थ जीवन का पालन करने के बाद पूर्ण ज्ञान तथा वैराग्य प्राप्त करने के लिए भगवान ने स्वतन्त्र कर दिया–घर से निकल पड़े, अपना भजन करने, गुरु सेवा करने, दीन-दुखियों की सेवा करने व जीवों को तारने–जिसका उल्लेख हम आगे करेंगे।

बचपन गुरु जी के शब्दों में–

अपने बचपन का हाल पूज्य गुरुदेव ने एक दिन अपनी मौज में २९–११–७२ को स्लेट पर लिखा था। वह इस प्रकार संक्षेप में है।

"बहुत काम सीखे थे, इतनी ताकत रही कि कभी थके नहीं। हमसे कोई काम न लेता था। हम अपने मन से करते थे। लकड़ी एक गाड़ी आम की चीर कर तब हटते थे। झाड़ू आठ बिगहा पक्का रोज लगाते थे। चार फरलांग से बोरा भर-भर कर गल्ला सर पर ढो कर रख देते थे।

जाड़े में शाम से आधी रात तक कुश्ती लड़ते थे। १०–१२ संगी लड़कों को लड़ाते, फिर ताल में कूदते, घंटों नहाते थे। कभी कोई रोग न हुआ। तीसों कोस पानी बरसात में चले जाते थे। छाता नहीं लगाते थे। छाता १६ तीली, १२ तीली के बनाकर दोहरा कपड़ा लगा कर बाँट देते थे। घर में बजाजी होती थी।

गल्ला हजारों मन होता था। गरीबों को देते, कोई कुछ न कहता था, ऐसा समय था। होरा बना कर, चने का और गेहूँ का, मनों भूंजते, सबको खिलाते, मकाई के भुट्टा खूब खिलाते, ऊपर से दही पिलाते। दूध ११ पसेरी होता था। सब लोग हमारा सब काम कर देते थे। कोई भूखा नहीं रहता था।

कहाँ तक लिखें, ३ बागें थीं। आम छाँट-छाँट सबको खिलाते थे। दो बाग बटा देते, एक बाग बचाते थे। वह सावन भर आम देती थी। कोई हिलाता न था, न हम बचाने जाते, सब बीन-बीन खाते थे। पानी हौज में भरा रहता, कुईं कच्ची थी बाग में। वहाँ जो बागें उगिठि जाती थीं, वह बेलदार बिसवाँ के, खैराबाद के, महमूदाबाद के खरीदते थे। वहाँ कुश्ती सीखते, लकड़ी चीरना सीखते, आम की लकड़ी बहुत आसानी से फटती है।

घर से बरतन उठा कर गरीबों को देते थे। सबके सामने रख कर गुड़ बनाते। ढ़ाई-ढ़ाई सेर सबको रस पिलाते, गुड़ मसालेदार बनाते,

सबको खिलाते। एक मन पक्का गुड़ रोज सबको खिलाते थे। ऊखें खूब चुसाते थे।

रिश्तेदारों के यहाँ जाते, सब काम कर देते थे। हमारे पिता को साग बाँटने की शौक थी। कई किस्म की लौकी, तरोई, लम्बे करेला हों सफेद एक-एक हाथ के, कुँदरू, परवल दो किस्म के, खवहा। रोज ढ़ाई सौ घड़ा पानी पाटी पर पाँव रख कर रस्सी से खींचते, थल्हा भरते थे। ताल करीब था, उसका पानी नहीं लेते थे। आठ दिन पर हाथों के घेठा अस्तुरा से काट देते थे। करेला टट्टर बना कर लगाये जाते थे। वे लटकते थे, लील की चिटें लटका दी जाती थीं, जिसमे नजर न लगे। वह करेला दो टुकड़ा करके बाँटे जाते थे। लौकी गोल बहुत मीठी होती थी। उसे 'राम गोला' कहते हैं।

ठाकुर लोग, एक कोस गढ़ी थी, वहाँ बहुत साग ले जाते थे। मूरी नेवार, पालक, धनियाँ आधा बिगहा पक्का में बोई जाती थीं, कोई चुरा कर नहीं लेते। जिसको जरूरत हो दिन में ले जाते जिस साग को चाहें ले जाँय, मनाही नहीं थी। ककरी, कच्ची पक्की, खीरा बाँटे जाते थे, कहाँ तक घर के लोग खायें। सब घर के पास ही होता था।

गाँव में बड़ा मेल था। दरवाजे पर इमली का पेड़ रहा। एक साखा पानी रोक देता था। चौतरा ऊँचा बँधा था। एक हाथ ऊपर दीवाल बनी थी। कोदों का पैरा पड़ा था। ४० आदमी गाँव के रोज आते थे। नीचे बड़े-बड़े लक्कड़ आम के जलते थे, जाड़े में तापने को।

गाना बजाना होता था। बहुत सुबह जाते थे, बहुत १२ बजे रात में चले जाते थे। उसके नीचे जाड़ा नहीं लगता था, ऐसा पेड़ था। बहुत सुबह फिर आते, खूब तापते फिर जाते।

गरमी में चौतरा लीप दिया जाता, जाजिम बिछा दी जाती, जिसकी मौज हो वहाँ बैठे, नहीं तो मैदान में पाखरी बिछी है, गाना बजाना होता है, वहाँ बैठें।

बरसात में मकान के तीन तरफ छप्पर रहते थे, वहाँ लोग बैठते थे, बहुत काफी जगह थी। बारह मास गाना बजाना होता था। दूर-दूर के गाने वाले आते थे, जब तक मौज हो रहते थे। अरोस परोस के गाँवों के सुनने वाले आते। सब की बहुत खातिर होती थी।

गाँव में जाड़े के समय कुतियाँ बियाती थीं, कई मर जाती थीं, उनके पिल्ला जिलाते थे। जब मस्त हो जाँय खाकर, लोग पाल लें, तब हमें शान्ति आती।

गाँव में लोग बीमार हो, उसे देखने जाते, उसे दवा के दाम देते थे। हमारी महतारी बड़ी धनी की लड़की थीं, उनके पास पैसा बहुत था, बड़ी दया थी। किसी को दुःखी सुन, उनके आँसू आ जाते थे। तुरन्त रुपया, पैसा, बरतन कपड़ा जो जरूरत हो फौरन देती थीं। डाकू चोर सब के घर जाते थे।

जब १८ की उमर में घूमे तो कुछ दवा बाबा टीका दास, हकीम भूधरदास, अयोध्या प्रसाद ने बता दिया था। जब घूमना बन्द कर दिया तो चार-चार कोस जाना पड़ता था नंगे पैर। अपने पैसे से दवा बना कर देते थे।

फिर २८ की उमर में महाराज (अपने गुरु जी) की सेवा में आए, तो यहाँ १२ साल दवा बहुत बांटा। महाराज का शरीर छूटा तो कुछ दिन बाद जो लोग यहाँ (गोकुल भवन) आते उनको दवा देते। बड़ी जरूरत हो तो वहाँ देख आते। बहुत मेहनत पड़ती थी।

रामघाट (अयोध्या) पर बरसात में पानी कमर भर, गले भर तक उतर कर जाना पड़ता था कई बार रात दिन में। बहुत विस्तार है।

असाढ़ का महीना था, पानी बरस चुका था, घूमते-फिरते खेत पर पहुँचे, देखा, अरहर की खूंटी एक तरफ से खेत में लगी थीं। चाचा अवध बिहारी ४ आदमी लेकर अपना खेत गुड़वा रहे थे। हमने चाचा से पूछा, "चाचा खेत की अरहर की खूंटी एक आदमी कै घंटा में

गोड़ सकता है ?" चाचा के कहा "बच्चा एक आदमी कई दिन में गोड़ेगा," तो कहा, "चाचा एक कुदारि फादिल हो तो हमें दो" बस कुदारि उठाया और एक घंटा में ६ बीघा खेत गोड़ डाला। तब चाचा ने कहा, "वाह भइया, तुम कोई भूत सिद्ध किये हो जो इतनी जल्दी गोड़ डाला, मेरा तो खेत ४ आदमियों के गोड़ने पर भी अभी आधा हुआ है।" तो हम कहा, "चाचा, हमें पता ही न चला कैसे गोड़ गया, सिर्फ इतना मालूम होता था कि हम जैसे बाबा कुदारि चलाते थे वैसे कुदारि चला रहे हैं और चारों तरफ घूम रहे हैं, यह हनुमान जी की लीला है जो इतनी जल्दी गुड़ गया।"

भक्ति भाव बाल काल में

स्कूल जाते, पढ़ने में रुचि न थी, पर जाप-पाठ में खूब मन लगता था, ४, ६, ८ घंटा जैसी मौज हो बैठे-बैठे पाठ किया करते थे। हनुमान चालीसा का पाठ सुबह ८ से शाम ४ तक करते, घाम वियार कुछ न लगता था। भजन और भगवान में अटूट विश्वास जन्म सिद्ध अधिकार (बर्थ राइट) था। पहले हनुमान जी के पाठ में जुटे, फिर हनुमान जी को छोड़ा शंकर जी के पाठ में जुटे।

भजन करने की प्रवृत्ति ज्यों-ज्यों उमर बढ़ने लगी, बढ़ती गई। १२ की अवस्था से तीव्र हो गई। हम पहले बता चुके हैं कि शंकर जी ने घर में आकर, एक महात्मा के रूप में, एक अल्फी पहने और हाथ में कमण्डल लिए, आपके माता-पिता को बता दिया था और आशीर्वाद दिया था "तुम्हारा अर्जुन नामक बालक संसार में प्राणियों का कल्याण मार्ग दर्शक होगा और तमाम जीवों को तारेगा।" इसका प्रथम परिचय मिला जब आपकी अवस्था १२ वर्ष की थी। पूज्य गुरुदेव के शब्दों में।

एक दिन राम नाम की महिमा के प्रत्यक्ष प्रमाण के प्रसंग पर वार्ता हो रही थी तो पूज्य गुरुदेव ने कहा, "राम नाम की महिमा अपार है, अगम है, अलेख है, अकथ है। इसका प्रमाण हमको–जब हमारी अवस्था १२ की थी, मिला था।" घटना यह थी कि "हमारे पड़ोस

परिवार के एक चाचा नन्द किशोर एक संन्यासी से मंत्र लिये थे। मांस मछली खाते थे, दवा करते थे। ७७ की उम्र में बीमार हुए, तब हम १२ साल के थे। हमारी छत से छत मिली थी। हम उनके घर गए तो चारों तरफ घर के लोग खड़े थे, उनकी आँखों से आँसू चलते थे। हमने पूंछा, "क्या है ?" तो कहा, "बड़े-बड़े भयानक रूप घेरे अस्त्र लिये खड़े हैं," तो हमने कहा "रामायण लावो।" जुगुल काका का लड़का रामायण लाया, हमने कहा "सुनावो," वह सुनाने लगा। हमने सबसे कहा "श्री राम जै राम जै जै राम करो।" सब लोग औरत मर्द करने लगे। कुछ देर बाद हमने पूंछा, "अब क्या हाल है ?" तो कहा "अब कोई नहीं देख पड़ता है।" हमने पाठ करने वालों से कहा कि तुम सुनाते रहो और सबसे कहा "सब लोग जो कर रहे हो करते रहो।" एक घंटे तक सब होता रहा। तब हमने आँसू पोंछ कर गंगा जल सालिक राम जी का चरणोदक दिया और गंगा-जल शरीर पर छिड़का। बस चाचा ने शरीर छोड़ दिया।

पूज्य गुरुदेव कहते थे कि इस घटना से हमारी श्रद्धा को बड़ा बल मिला। विश्वास जम गया। परिवार के गाँव वालों के संगियों के प्रिय थे ही। मनमानी भजन या घर का काम या खेलना कूदना या साधु महात्माओं के पास जाना या किसी की कोई सेवा करना जो जी चाहता करने लगे। रोक टोक तो कोई थी ही नहीं।

इसी १२ की अवस्था में सुना कि गाँव में कँधई तेली के यहाँ एक सिद्ध सन्त भूलन शाह आये हैं तो उनके दर्शन को गये। भूलन जी ने ११ अलिफ नामें और एक पाँच तत्व का सोटा लिखा है। एक अलिफ नामा और पाँच तत्व का सोटा पूज्य गुरुदेव के पास है। शाह जी बहुत गोरे ऊँचे शरीर के थे।

आप (गुरुदेव) इलाही को काका कहते थे। काका भूलन शाह जी के शिष्य थे। गुरुदेव के गाँव से दो फरलाँग पर रहते थे। गुरुदेव ने काका से उनके गुरु भूलन शाह जी का हाल पहले ही पूंछा था।

काका ने बताया था "हम १२ साल की उमर में कुटी पर गये, हमारी शादी हो गई थी, हमसे कहा "भजन सीखने आये हो" हमने कहा

'हाँ' तो हमें खाने पीने को न पूंछा, १० कोस पैदल गये थे, कमलासन से बैठा दिया, ४ दिन उठने नहीं दिया, गर्दन झुका कर सीना ढीला करके दोनों हाथ गोफा लगाकर, आगे रखकर, इसे उन्मुनी मुद्रा कहते हैं, भगवान में हमारा प्रेम था, भगवान की दया से हमें कोई तकलीफ न हुई, न भूख, न प्यास, न थकावट, न निद्रा आई, सारे बदन व रोम रोम से नाम की धुनी रं रं रं रं होने लगी, बड़ा प्रकाश हुआ, मालूम होता था सब प्रकाश ही है और कुछ नहीं देख पड़ा फिर वह गायब हो गया और जर्रा-जर्रा से धुनी होने लगी, हा हा कार मच गया, फिर राम जानकी की छटा सामने हो गई, महाराज महारानी मालूम होता था छिन-छिन में पोशाक बदल रहे हैं, किस्म-किस्म की।

पाँचवें दिन कहा 'उठो, स्नान करो'। स्नान के बाद एक मोटी रोटी का टुकड़ा वजन में १ छटाँक का दिया, एक पाव पानी दिया, दिन भर हिन्दुओं के यहाँ मजदूरी कराते जो पैसा मिलता उसे खैरात कराते, ५ साल एक टुकड़ा रोज रोटी का देते, एक पाव पानी देते, मजूरी कराते, खैरात कराते, ११ बजे रात को शयन कराते, २ बजे उठा कर स्नान कराते, १० माला ओंकार का जप कराते।

पाँच साल में सब देवताओं के दर्शन, सबके घर दिव्य भोजन को सूक्ष्म शरीर से जाने लगे। सारी सृष्टि अपने शरीर में और सारी सृष्टि में अपने को देखने लगे। शुभ लोकों से तार आने लगे, सब देवी देवताओं से सतसंग होने लगा, तमाम सिद्ध संत मिलने लगे, फिर ४० दिन की समाधि सिखा दिया तब घर को भेजा।

काका ने फिर कहा कि उनके गुरु जी एक दफा जौ या गेहूँ की रोटी मूँग की दाल खाते हैं, २ बजे रात नहाते हैं, पसार खाने का काम है और कुछ खेती है। जवानी में चार आदमी काम करने में हार जाते थे और बुढ़ापे में दो हार जाते हैं। घर में एक भाई जुम्मन थे, उनकी औरत और लड़का था, इनके भी एक लड़का था, उसे भजन बताया है घर में सादा भोजन बनता था, लहसुन प्याज कुछ नहीं बनता था। हिन्दू सीखने आते तो सामान कुरमी पड़ोस के यहाँ से दिला देते।

एक दफे सादा भोजन कराते, मुसलमान आता तो घर से खिला दे। ७ दिन आँख बन्द करा कर गर्दन झुका कर वैसे ही बैठारते हैं, उसी से साधक को कुछ-कुछ होने लगता था, दूध, घी कुछ नहीं बताते हैं, कहते हैं धातु रूखे भोजन से कड़ी हो जाती है, दूध, घी से पतली हो करके फेंक देती है, माँस, मछली, लहसुन, प्याज, तेल, खटाई, मिरचा, करेला, कड़ू मूली, यह काम वासना को तेज करती हैं, मीठा शुद्ध एक छटाँक गुड़ जलपान को काफी है। जितने नशा हैं वह भजन में बाधक हैं। अपनी सच्ची कमाई का अन्न और चोरों से बचना तब होता है जब अच्छी संगत हो। अच्छे-अच्छे ग्रन्थ हैं, उन ऋषियों ने जैसे प्रचार किया है वैसे तुम अमल करो। साधक जहाँ दुनियावी बातें होती हों वहाँ न जाय। उसके पास कोई आवे संसारी बातें करे तो उसके हाथ जोड़ दे, हम साधक हैं नीचे गिर जायेंगे। किसी की जीव-जीविका जाती हो तो झूठ बोलने में हानि नहीं है, वैसे झूठ न बोले। आँख से देखे हो तब भी कुछ न कहे।

अध्याय २

गुरु दीक्षा

पूज्य गुरुदेव जी की अवस्था का १५ वाँ वर्ष बड़े महत्व का है। इसी वर्ष में विवाह संस्कार हुआ, इसी वर्ष में विवाह के बाद गुरु मन्त्र मिला। संयोग ऐसा हुआ कि आपके चचेरे भाई पं० अम्बिका प्रसाद गाँव से कह कर अयोध्या आये कि हम गुरु मंत्र लेने परमहंस बाबा बेनीमाधव दास जी, जो रामघाट पर रहते हैं, के पास जा रहे हैं। संयोग से कुछ ऐसा काम आ पड़ा कि उन्हें गाँव वापस बुलाना था। तो पूज्य गुरुदेव ने कहा कि हम जाकर बुला लाते हैं। तो आप परमहंस जी के स्थान पर आये। अपने भाई अम्बिका प्रसाद से हाल बताया, उन्होंने कहा अभी मंत्र नहीं मिला है, मंत्र ले लें तब चलें। तो आपके मन में भी विचार उठा कि हम भी मंत्र ले लें। तो परमहंस जी ने पहले आपको मंत्र दिया, साथ ही साथ ध्यान का उपदेश व विधि भी बता दिया। बाद में पं० अम्बिका प्रसाद को केवल मंत्र की दीक्षा दी। तत्पश्चात् दोनों भाई साथ-साथ घर आये।

दादा गुरु का परिचय

परमहंस बाबा बेनीमाधव दास जी को हम आगे 'दादा गुरु' के नाम से सम्बोधित करेंगे। आप लहरी के त्रिवेदी ब्राह्मण निवासी ग्राम असावरि जिला उन्नाव के थे। नेत्र शंख ऐसे थे, पुतली नहीं थी। पढ़े नहीं थे, गोरे-गोरे दुहरी देह के थे। वस्त्र में केवल एक लंगोटी धारण करते थे। सर में एक पतले तनजेब की चद्दर ढ़ाई हाथ की बाँधते थे जिससे स्नान करने के बाद बदन पोंछने का काम लेते थे। मक्खी मच्छर से बचाव के लिए एक चद्दर तनजेब ७ हाथ की ओढ़ते थे, जब ध्यान करने बैठते।

दिन में तीन बार स्नान करते थे। वीर्य ऊर्द्ध था। गरमी बहुत लगती थी। जाड़े में कुछ विशेष ओढ़ते-बिछाते न थे। गर्मी शान्त करने के लिए प्रति दिन १ पाव खट्टे नीबू का रस पीते थे। आपको राजयोग सिद्ध था। आप गुरु नानक जी के अंश थे। यह बात स्वामी शंकराचार्य जी ने काठियावाढ़ के एक भक्त को बताई थी। इसका प्रसंग आगे विस्तार से लिखा है।

आपको १४ की उम्र में शंकर जी ने प्रगट होकर ध्यान बताया था और बताया था कि यह ध्यान बीच का है, इससे आसान और कोई नहीं है। हमें (शंकर जी को) जानकी जी ने बताया है, वही तुमको (दादा गुरु को) बताते हैं, इससे सब प्राप्त हो जायेगा, तुमको सिर्फ राम मंत्र जानकी मंत्र लेना पड़ेगा। इस विधि के भजन से १५ दिन में ही दाँई जाँघ पर राम जी और बाँई जाँघ पर महारानी जी आकर बैठ गयीं छोटे रूप से। राम जी ने पूँछा 'क्या चाहते हो' तो दादा गुरु ने कहा "हम आपको ऐसे ही देखा करें।" तब राम जी "एवमस्तु" कहकर अन्तरध्यान हो गये। फिर राम जी महारानी जी की झाँकी सामने रहने लगी, मिनट-मिनट पर सिंगार बदला करता था। कुछ दिन बाद फिर राम जी महारानी जी पहले की तरह आकर जाँघों पर बैठ गये और पूँछा 'अब क्या चाहते हो' तो दादा गुरु ने कहा 'हम आपके पास ही रहें' तो भगवान 'एवमस्तु' कहकर अन्तरध्यान हो गये।

गुरुदेव बताते थे कि दादा गुरु अपने लड़कपन में सुने थे कि बड़े महाराज बाबा रघुनाथ दास जी, बड़ी छावनी, अयोध्या को शंकर जी ने भजन बताया है और उनके सामने राम जानकी की छटा रहती है और हनुमान जी भी प्रसन्न रहते हैं तो दादा गुरु की सुरति बड़े महाराज बाबा रघुनाथ दास जी में लग गई थी। उसी ध्यान को हनुमान जी ने दोहरा दिया था।

दादा गुरु का जन्म संवत १८९० तदनुसार सन् १८४२ में हुआ था। जब आप लगभग १४ साल के थे तब आपकी माता जी का निधन हो गया था। आपकी माता जी ने ६ माह पहले ही आपको अपना

शरीर छोड़ने का दिन बता दिया था। मरते समय पास बिठा कर कहा था कि अब हम जा रही हैं, तुमको राम जी को सौंप दिया। वह कह गई थीं कि हमारे मुँह में कपूर बार का शरीर गंगा जी में छोड़ देना। वैसा ही किया गया।

तत्पश्चात् कुछ समय बाद आपके पिता जी ने आपसे कहा 'अब हम भजन करने जाते हैं, जहाँ जन्म ले वहाँ न मरे। तुम इतने पशु पालना जिनका पेट भर जाय, नहीं तो बड़ा पाप लगेगा और जो तुम्हारी दो कुँवारी बहने हैं उनकी शादी कर देना, पैसे की कमी नहीं है' आसावरी गाँव से कुछ दूरी पर उनके बड़े भाई थे, वहाँ जाकर भाई भौजाई के पैर छूकर चले गये, फिर न लौटे।

दादा-गुरु ने बहनों की शादी बड़ी धूम-धाम से की। १४ साल यानी २८ की उमर तक गाँव में रहकर घर गृहस्थी का कार्य भार सँभाला फिर मकान व सामान एक ब्राह्मणी को सब दे कर अयोध्या चले आये। जब छावनी में आये तब चुपचाप आकर बैठ गये। ८ दिन हो गये, बैठे ही रहे, उठे नहीं, तब छावनी के बाबा जगन्नाथ दास, जो बेथर गाँव के बाला के शुक्ल थे, बाबा रघुनाथ दास की गादी की सेवा करते थे, आप (दादा-गुरु) के पास आये और कहा "८ दिन हो गये, न उठे, न नहाये, न कुछ भोजन किये" तो दादा-गुरु ने कहा "कुछ भूख-पियास नहीं है।" तब मंझले महाराज बाबा जगन्नाथ दास ने जबरदस्ती उठाया और पीठ ठोकी। तब आपने लोक रीति के अनुसार गुरु दीक्षा ली, बाबा जगन्नाथ दास से। हालाँकि गुरु दीक्षा लेने के पहले ही 'नाम', 'रूप', 'प्रकाश' सब प्राप्त हो चुका था। संक्षेप में—

वर्ष	संवत्	
२८	१८९७ से १९२५ तक	गाँव में रहे
३६	१९२५ से १९६१ तक	बड़ी छावनी अयोध्या में रहे
१३	१९६१ से १९७४ तक	प्रह्लाद दास मन्दिर रामघाट में रहे
८	१९७४ से १९८२ तक	रामकिंकर दास की छावनी रामघाट में रहे
७	१९८२ से १९८९ तक	गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड में रहे

दादा गुरु का शरीर ९२ की अवस्था में संवत् १९८९ तदनुसार सन् १९३४ गोकुल भवन में शान्त हुआ, तब हमारे पूज्य गुरुदेव की अवस्था ४१ साल की थी। पूज्य गुरुदेव दादा गुरु की सेवा में २८ वर्ष की अवस्था में आये थे।

पूज्य गुरुदेव बताते थे कि दादा गुरु पैसा नहीं छूते थे। एक बार ऐसा हुआ कि पं० राम किशोर २ रु० चटाई के नीचे रख गये। जब दादा गुरु चटाई पर लेटे तो कहे हमारी पीठ में काई लग गई है। तो पूज्य गुरु जी ने कहा कि काई कहाँ से आई, चटाई उलट-पुलट कर देखा तो २ रु० रखे थे, हटाया तब दादा गुरु लेटे, कहे, अब काई नहीं है।

दादा गुरु को बहुत अनुभव होते थे। थोड़े से अनुभवों का उल्लेख पूज्य गुरुदेव ने कथा नं० ४ पुस्तक भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत में किया है। इस पुस्तक में पूज्य गुरुदेव ने २०२ भक्तों की कथायें अथवा पद लिखे हैं। यह पुस्तक फाल्गुन कृ० १० सं० २०३२ तदनुसार २४ फरवरी १९७६ को प्रकाशित हुई है। इसमें १ ईसाई, ३२ मुसलमान, १६९ हिन्दू भक्तों की कथायें हैं।

गुरु परम्परा

गुरु परम्परा जानने की जिज्ञासा पाठकों को हो सकती है। इस विचार से इसकी खोज करना आवश्यक हो गया। जो कुछ हमको मालूम हो सका है, वह इस प्रकार है—

१.	आदि गुरु	स्वामी	रामानन्द जी—भरत जी का अंश
२.	उनके शिष्य	,,	भावानन्द जी
३.	,,	,,	बृजानन्द ,,
४.	,,	,,	बालानन्द ,,
५.	,,	,,	बिठलानन्द ,,
६.	,,	,,	बल्लभानन्द ,,
७.	,,	,,	ब्रह्मानन्द ,,
८.	,,	,,	मानदास ,,

९.	उनके शिष्य	मन्सा राम	जी
१०.	" "	रघुनाथ दास	"
११.	" "	राम चरण दास	"
१२.	" "	बलदेव दास	"
१३.	" "	रघुनाथ दास	"
१४.	" "	जगन्नाथ दास	"
१५.	" "	बेनी माधव दास	"
१६.	" "	राम मंगल दास	" हमारे गुरु

आदि गुरु स्वामी रामानन्द के द्वादश महाभागवतः :–

१	श्री अनन्तानन्द	जी	ब्रह्मा जी का अवतार
२.	,, सुखानन्द	,,	शंकर ,, ,,
३.	" योगानन्द	"	कपिल देव "
४.	" सुरसुरानन्द	"	नारद " "
५.	" गालवानन्द	"	शुकदेव " "
६.	" नरहरियानन्द	"	सनतकुमार "
७.	" भावानन्द	"	जनक " "
८.	" कबीरदास	"	प्रह्लाद " "
९.	" पीपा	"	राजा मनु "
१०.	" रैदास	"	धर्म राज "
११.	" धन्ना जाट	"	राजा बलि "
१२.	" सेन भक्त	"	भीषम " "

इस संकेत मात्र से गुरु परम्परा का विस्तार जानने के जिज्ञासु कृपया जो ग्रन्थ प्रत्येक के विषय में उपलब्ध हों उनका अध्ययन करें। मेरी लेखनी का प्रयत्न तो चरित नायक मेरे पूज्य गुरु संत शिरोमणि परमहंस १००८ बाबा राममंगल दास जी से सम्बन्धित विषयों तक ही सीमित है।

१५ वें वर्ष के बाद १६वां वर्ष दुःखदायी रहा। आप के पिता जी का शरीर सुस्त हो गया। कोई विशेष बीमारी न हुई, जुकाम हुआ,

तबियत गिरती चली गई, लखनऊ से एक डाक्टर भी आया पर पिता जी ने माला हाथ में लिए राम-राम करते-करते शरीर छोड़ दिया। उनका अन्तिम संस्कार पूज्य गुरुदेव ने किया। सारे नियमों का विधिवत पालन किया, एक साल तक आसन जमीन पर ही लगाया और भोजन अपने ही हाथ बनाया खाया।

१७वां वर्ष एक नया मोड़ लेकर आया। आपके मन में कठिन अभ्यास करने का विचार उठा, तो सुखमनी साहब का पाठ करते, हनुमान चालीसा का पाठ करते, हनुमान साहित्य के स्तोत्र पढ़ते। कड़ी धूप में बैठ कर पाठ करने का अभ्यास करते, भूसा के ढेर में गले तक घुस जाते, चार-चार, पाँच-पाँच घंटा बैठ कर जप करते। इतनी कड़ी साधना द्वारा हनुमान जी का दर्शन हुआ और हनुमान जी से आशीर्वाद प्राप्त किया कि अब पाठ की आवश्यकता नहीं है, स्तोत्र व पाठ सिद्ध हो गये।

छः माह के अन्दर ही प्रकाश हो गया। उस प्रकाश में एक जलाशय देखा, जलाशय में एक पहाड़ देखा, पहाड़ पर एक कुण्ड था, उसमें निर्मल जल भरा था, एक पेड़ चाँदी ऐसा चमकता था। उस पेड़ की एक शाखा उत्तर मुँह कई हाथ लम्बी गई थी, उसी पर हनुमान जी पश्चिम मुँह बैठे थे। पैर लटकाये थे तो पैरों पर मस्तक रख दिया, हनुमान जी ने पीठ ठोक दिया, ध्यान टूट गया।

जब अपने गुरु (दादा-गुरु) से हाल बताया तो उन्होंने कहा 'वह गंध-मादन पर्वत है, चारों तरफ जल है, वहाँ राम जी महारानी जी की दिव्य मूर्तियाँ हैं, हनुमान जी शुकुल-रूप से सेवा करते हैं। वहाँ साधक ध्यान में पहुँच सकता है।'

फिर जब आप (गुरु जी) की **अवस्था १८ की आई** तो विचार घूमने फिरने का उठा। तो चार साल १८ से २२ की अवस्था तक घूमे। एक धोती, ४ लंगोटी, १ लोटा डोर और १ सोटा रखते थे। किसी के दरवाजे नहीं जाते थे। जो पाती कडू न हो या गूलर की

गदिया खा लेते थे। चार-चार दिन पानी पीकर घूमते थे। जाड़ा गरमी कुछ न लगता था। शरीर में बड़ा बल था।

घूमते फिरते बाबा टीका दास उदासी संत सिद्ध पुरुष की कूटी गाँव बहादुरपुर नगर, जिला हरदोई पहुँचे। बाबा टीका दास दादा गुरु के समकालीन ही थे। इनका चरित्र पूज्य गुरुदेव ने पुस्तक भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत में कथा नं० ६ में दिया है।

संक्षेप में बाबा टीका दास वैश्य थे। शंकर जी ने उन्हें १२ की उमर में भजन बताया था। उन्होंने ३० की उमर में हनुमान जी को रोटी बना कर खिलायी थी। ८५ की अवस्था में शरीर छोंड़ा था। उनकी जन्म-भूमि जिला गोरखपुर गाँव चौरीचौरा थी।

आपकी (गुरु जी की) बातचीत बाबा से हुई। बाबा ने आपसे कहा 'पैंतीस अक्खरी' को मुँह बन्द करके जबान आगे नीचे दाँतों में सटा कर नाभी पर मन लगा कर उठाओ। इसे 'राजदन्ती' मुद्रा कहते हैं, गर्दन झुकी रहे। आपने बाबा के उपदेशानुसार अभ्यास आरम्भ कर दिया तो दो माह के अन्दर ही नाभि का चक्र खुल गया।

कभी घर, कभी बाबा की कुटी, कभी अयोध्या जिधर मौज होती निकल जाते। कहीं भी रहते अपना नेम १ माला ब्रह्म गायत्री, १० माला राम मंत्र, ५ माला जानकी मन्त्र, समय से करते, बाकी समय सेवा व ध्यान जो गुरु (दादा-गुरु) ने बताया था उसमें व्यतीत करते थे। अधिकतर बाबा टीका दास जी की कुटी पर रहते थे। पूज्य गुरुदेव को यहाँ भी अनुभव होते थे।

पूज्य गुरुदेव ने बताया 'एक दिन हम नरकुल की चटाई पर लेटे थे, बाबा दो बजे रात को एक सफेद कम्बल बड़ा जबर कोई लाया था, हमारे ऊपर छोड़ दिया। कुछ देर बाद हम गरमा गये। महीना पूस या माघ का था। कम्बल उलट दिया। देखा बाबा बैठे हैं और सामने बड़ा भारी सोने का सिंहासन है। उसमें हनुमान जी गदा लिये खड़े हैं। ऐसा सिंगार था कि मारे तेज के आँखें चकाचौंध हो गयीं। १५ मिनट बाद बाबा चले गये और सिंहासन सहित हनुमान जी

अन्तरध्यान हो गये। दूसरे दिन बाबा ने रात में कोई नया लिहाफ लाया था आकर ओढ़ा दिया तो कुछ देर में हम गरमा गये। उसे उलट दिया, देखा, एक बड़ा भारी सिंहासन सोने कैसा जिसमें नग जड़े चमकते थे, प्रकाश निकलता था, चारों भाई महारानी जी सब बैठे थे, हनुमान जी हाथ जोड़े मत्था झुकाये महाराज-महारानी के चरनों के समीप बैठे थे। देर तक हम देखते रहे, जब बाबा उठे तब सब अन्तरध्यान हो गये।'

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि यह हाल हमने बाबा को बताया और कहा 'महाराज जी (दादा-गुरु) ने कहा था कि जो भगवान की प्राप्ती कर लिया वह भगवान का हो गया, कोई जाति हो इससे तुम हमसे अधिक सेवा ऐसे संतो की करना, अपना विश्वास अटल रखना, भाव विशाल बनाये रखना, तो ऐसे संतों की सेवा से सब प्राप्त हो जाता है।' अतः वैसा ही करने की हम कोशिश करते हैं। तो बाबा ने कहा 'यह सत्य है जो महाराज जी (दादा-गुरु) ने आप को बताया है, ऐसा उपदेश अपने शिष्य को वही दे सकता है जिसके आँखी कान खुल गये हों, जियतै सरनि, जियतै मरनि, जियतै तरनि हो गई, जीवनमुक्त उसी को कहते हैं जो जियतै में सब जानि लिया, तब वह भक्त हो गया, शरीर छोड़ कर भगवान के धाम गया और भगवान का रूप बन कर सिंहासन पर विराजमान हो गया।'

बाबा के स्थान पर ही पूज्य गुरुदेव को मालूम हुआ कि पिपरौला गाँव में एक संत बाबा नन्द राम (बाबा टीका दास के शिष्य) भजन करते हैं। बाबा के प्रिय शिष्य हैं तो बाबा से आज्ञा लेकर आप (गुरुदेव) उनके दर्शन को गये तो देखा 'नंगे बैठे हैं, राम-राम करते हैं, होंठ चलते हैं, उनकी कोठरी में तमाम सांप निकलते हैं, भन्नाते हैं।' आप से उनसे दो घंटा बातचीत हुई। सर्पों की भन्नाहट में जब बात सुन न पड़ती थी तो नन्द राम जी मोर पंखा की झाड़ू हिला देते थे तो सब बिलों में घुस जाते थे। इस घटना से पाठकों को पता लगेगा कि हमारे पूज्य गुरुदेव छोटी उमर से ही निडर थे।

बाबा की आप पर बड़ी कृपा रहती थी। जब आप बाबा नन्द

राम के दर्शन से लौट कर बाबा की कुटी पर आये, उनकी दीनता का हाल बताया तो बाबा ने कहा 'उनसे बढ़कर एक और भक्त है तुमको दिखावेंगे, उनका नाम तेजादास है, परिवारदार है, औरत है, लड़का है और लड़की है।' आपने इनके दर्शन किये और आज्ञाकारी, शान्त सच्चे भक्त की शिक्षा ग्रहण की।

बाबा आपको ब्रह्मचारी कहते थे। अन्य कामों के अलावा मूसों को अन्न पानी, सुबह शाम रखना आपका काम था। यदि आपको अन्न पानी रखने में कुछ देर हो जाती तो मूस बाबा के ऊपर चढ़ जाते थे तो बाबा कहते 'ब्रह्मचारी मूस बहुत तंग करते हैं।

पूज्य गुरुदेव दो माह पाराशर की मठिया पर रहे थे। यह स्थान मैंगलगंज स्टेशन से दो कोस पर है। यहाँ पर अमावस को मेला लगता है।

आपको यहाँ भरथरी जी के दर्शन हुये थे। आप बताते थे कि भरथरी जी गोरे-गोरे थे। बाल दाढ़ी सुनहरे थे, जनेऊ पहिरे थे, कमर में पुराना साफ कपड़ा लपेटे थे, अवस्था २५ की लगती थी। संयोग ऐसा हुआ कि बाबा टीका दास के साथ मेला में गये। बाजार में दूध लेने गये तो देखा आप (भरथरी जी) घूम रहे हैं। कोई भीड़ में धक्का दे तो मुस्करा देते हैं। दादा-गुरु से भरथरी जी का भेद मालूम हो चुका था, फिर संदेह दूर करने के लिये आपने बाबा को हाल बताया और पूँछा फिर दर्शन मिल सकते हैं तो बाबा ने कहा 'तलाश करने से मिलेंगे।' पर तलाश करने जाँय कैसे, बाजार से दूध लाये थे, खीर बनानी थी, सबको पवानी थी। पर बाबा आपके मन की बात जान गये। जब सब पा चुके, काम खतम हो गया तो आपसे कहे 'इस अहीर की लड़की का घर २ कोस है नदी पार पहुँचा जाओ।' उसे पहुँचा कर लौटे तो सूर्य बैठ चुका था, नाव उधर बाँधी थी। धोती कमर में बाँध कर लंगोट चढ़ा कर नदी में कूद पड़े। एक तखत भर की मिट्टी की टेकरी रही उस पर दूब जमी थी, दोनों तरफ से पानी बहता था। उस पर श्री भरथरी जी ध्यान लगाये बैठे हैं। दादा-गुरु की आज्ञा थी

कि कोई ध्यान में बैठा हो तो बोलना नहीं चाहिये, बोलने से बड़ी हानि होती है, इससे हम बोले नहीं, दर्शन करके चले आये ।

जब आपकी **अवस्था २३ साल** की थी तब आपको शुकदेव जी के दर्शन हुए थे । जब दर्शन हुए तब यही जाना था कि कोई संत हैं । जब दादा गुरु से हाल बताया तब दादा गुरु ने बताया कि वे शुकदेव जी रहे । वह ब्रह्मज्ञानी ईश्वर के समान सर्व विद्या को जानने वाले हैं । यह नाना प्रकार के रूप रख लेते हैं ऐसे ही हनुमानजी का हाल है वह भी बहुत रूप रख लेते हैं ।

पूज्य गुरुदेव बताते थे कि एक दिन हम तथा हकीम भूधर दास सीतापुर से सरैंया जा रहे थे । स्टेशन सीतापुर गाड़ी छूटने के काफी समय पहले पहुँच गये तो भोजन बना कर भोग लगाया, हम दोनों ने पाया, तो एक संत कहीं से आ गये, नंगे थे, १२ वर्ष के मालूम होते थे, सारा शरीर मूँगे ऐसा लाल था और चमकता था, दोनों फोता कंजे-कंजे के बराबर थे, इन्द्री बहुत छोटी पतली थी, सिर के बाल एक-एक अंगुल के थे । हकीम जी ने हमसे कहा "यह कोई संत बहुत ऊँचे हैं, कायाकल्प किये हैं, इनके पैर जा कर छुओ" जब हम गये तो वे चट हमारे पैर छू लिये और बैठ गये । तो हमने कहा "आप कुछ खाओगे" तो कहा "हाँ" तो हम हलवाई की दुकान पर से अच्छी अच्छी मिठाई कई किस्म की दो सेर लिया दोनों में और एक छोटी हाँड़ी में पानी लिया और अपने हाथ से मिठाई खवाया, बीच बीच में पानी पिला दिया करते । फिर वे उसी जगह लेट गये । एक घंटा बाद एक पुल रहा उसमें चले गये, वहाँ चारों तरफ गंदा था । फिर एक घंटा बाद हम गये, कहा "अब आप दर्शन देंगे, हमारी गाड़ी का समय आ रहा है" तो निकले और आकर हमारे आसन टाट पर बैठ गये । हमने कहा "खिचड़ी आपको बना कर खवावे" तो उन्होंने कहा, "तुम्हारा प्रेम है तो खा लेंगे वैसे तो हम कुछ खाते पीते नहीं हैं, प्रेमियों की इच्छा को पूरी कर देते हैं जिसमें उनको दुख न हो ।" तो हमने खिचड़ी बनाई पत्तल पर रखी, पवाने लगे, तो छोटे-छोटे कई बच्चे कुत्तों के आ गये और खाने लगे । तो उन्होंने कहा "कभी तुम्हारे बाप दादा ने ऐसा खाया था जो तुम हमारे साथ खाते हो" फिर हमसे कहा "तुम भी खावो" तो हमने कहा

"हम नहीं खा सकते, अभी हममें इतनी शक्ति नहीं है, हमें उल्टी हो जायेगी" तो हमसे कहा "बिन हरि कृपा मिलैं नहिं संता।"

पूज्य गुरुदेव बताते थे कि वह आप पर इतना प्रसन्न थे कि रेल में साथ-साथ सफर किया सरैयाँ तक हम गये, आगे चौका घाट पर वह उतर कर अन्तरध्यान हो गये। चौका पर उतरने की बात एक ठाकुर परिचय के जो साथ सफर कर रहे थे, चौका तक गये थे, पूज्य गुरुदेव को बाद में बताये थे।

नंगे संत ने रेल मे पहले ऊनी टोपा गुरुदेव के सर से उतार कर अपने लगाया, फिर अपना सर गुरुदेव पर रखा बगल में बैठे दो ठाकुरों के पेट पर पैर रखकर लेट गये। उनको देख कर कोई बोल न सका। जब गुरुदेव रेल से उतरे तो कहा "तुम से फिर मिलेंगे।"

महीना कुँआर शुक्ल पक्ष में पूज्य गुरुदेव महसोनिया स्टेशन के पास एक लाल मणि सेठ के दरवाजे पर थे, वहाँ से दो कोस नदी थी। डोलडाल स्नान करने हेतु रात दो बजे नदी के किनारे पहुँच गए, तो नंगे संत महाराज वहाँ प्रकट हो गए और दर्शन दिए, बड़ी देर तक टहलते रहे, पर गुरुदेव का मुँह बन्द कर दिये। इससे गुरुदेव हाथ जोड़े बैठे रहे।

आपने १६ की अवस्था में सुना कि विस्वां में एक बाबा गुलजार शाह, अपना परिवार तथा ५० गाँव छोड़ कर, ६० की उमर में भजन करने आये हैं, एक लोटा डोरी और लंगोटी ले कर। तो उनके दर्शन को गये। वे मोहल्ला मगरहिया में एक इमली के पेड़ के नीचे बैठे थे। जब पानी बरसता तो इमली की खोखल में चले जाते, बहुत दुबले थे। दाढ़ी केश थे, सर के बीच में बाल न थे। देवा शरीफ के हाजी जी, जिनका फन्ना फिल्ला सिद्ध था उनके शिष्य थे। आपसे उन्होंने कहा "हमारे यहाँ यह कौल है कि सात दिन चुप बैठे रहो, आठवें दिन नहा कर थोड़ा माँग कर मुँह में डाल कर थोड़ा पानी पी लो।"

आपने (गुरुदेव) पूँछा "जाड़ा, घाम, भूख, प्यास, नहीं लगती," तो कहा "जो सिर्फ मालिक के सहारे रहता है, सुरति उसी में लगी

रहती है तो उसे कुछ नहीं सताता, मालिक शक्ति दे देता है, मालिक भक्त की हर जगह याद रखता है" और कहा "जब सुरति शब्द में लीन हो जाती है तो मालिक को हेरते-हेरते अपने हिरा जाता है, उसे ब्रह्म-लीन कहते हैं, जब समाधि उतरती है तब फिर नाना प्रकार की लीला खुले नैनन देखने लगता है, कानों से नाम की धुनी सुनता है, फिर जर्रा-जर्रा रोम-रोम से, सब लोकों से हा हा कार मचा है, उसका नशा सवार हो जाता है, बिना मालिक के हुक्म के किसी से न कहे।"

इसी प्रकार का उपदेश पूज्य गुरुदेव को इलाही काका से १२ की अवस्था में मिला था जिसका उल्लेख हम पहले कर चुके हैं।

अब हम उल्लेख करते हैं एक ऐसी घटना का जिसे पढ़कर पाठकों को पता लगेगा कि पूज्य गुरुदेव थोड़ी उमर से ही कितने निडर थे। तब आपकी अवस्था १७ की रही होगी।

ऊँचे खैरगाँव के बाबा रामलगन दास की कुटी पर आप को एक ठाकुर रामचेतन दास ब्रह्मचारी मिले। वे मन्त्र से एक खेत में ओला गिरा दें, मन्त्र से गाँव में आग लगा दें, मन्त्र से आग बुझा दें, मन्त्र से लोगों को अन्धा कर दें, दूसरे मन्त्र से आँखें ठीक कर दें। नक्षत्र बली थे, जो लट्ठा ४० आदमी उठावें उसे वह अकेले उठा दें ४ बैल की गाड़ी गल्ला से भरी चहला में फँस जाय तो अकेले जुआ पकड़ कर खींच दें। छोटी लाइन की पटरी एक हाथ से उठा दें। एक पहर एक पाव भोजन करते, अपने हाथ जल भरते, नहाते, किसी के हाथ का भरा पानी न पीते थे। एक लौकी का कमंडल एक तुलसी की माला, एक अलफी और नीचे लंगोटी, बस इतना सामान रखते थे।

आपकी और उनकी मुठभेड़ कुँआ पर हो गई। आपको पानी भरने नहीं दिया, एक घंटा झगड़ा हुआ, आखिर में आपका भाव जान कर कबूल किया। तब गुरु जी ने कहा "आपने घर बार छोड़ा, साधु भेष बनाया, अभी क्षत्रीपने का अर्थ न जाना, पाँचों चोर छटे मन काबू हो जाँय तब वह क्षत्री कहा जाता है, मन्त्र पढ़कर आग लगा देने से तमाम जीव मरते हैं, हजारों का नुकसान होता है—इसका दण्ड बहुत

बड़ा मिलेगा, मन्त्र से अन्धा कर देने से तो जितनी देर लोगों को कष्ट होगा उसका सौ गुना भगवान के यहाँ से दण्ड मिलेगा, कल्पों नर्क भोगना पड़ेगा, आप कैसे साधू हो गये" तो कहा 'हम फोनोग्राफ बजाते थे, माता से कहा 'हम भजन करने जाते हैं', माता ने कहा 'जाओ साल में दो मर्तबा आया करना।' तब हम (गुरु जी) ने पूँछा 'क्या तुमने माता से बताया है कि हम मन्त्र से अन्धा कर देते हैं, आग लगा देते हैं, फिर अच्छा भी कर देते हैं' तो उन्होंने कहा 'नहीं' तब हम कहा 'तुम भजन नहीं कर सकते न इधर के रहे न उधर के रहे और पूँछा किस देवता से प्रेम है' तो कहा 'शंकर जी व पार्वती जी से' तो हम पूँछा 'मन्त्र बताओ' तो कहा 'ॐ नमः शिवाय' जो सब लोग कहते हैं जब जल चढ़ाते हैं और हम कुछ नहीं जानते न किसी से मन्त्र लिया है।' फिर हमने पूँछा 'कितना जपते हो' तो कहा 'एक माला' तब हमने कहा 'अंगहीन मन्त्र नहीं जपा जाता है, राम जानकी, राधा कृष्ण, विष्णु लक्ष्मी, गिरजा शंकर, इनके जुगुल मन्त्र हैं' तो कहा 'पार्वती जी का हमें बताओ' तो हम कहा 'एक माला ब्रह्म गायत्री, १० माला शंकर जी और ५ माला पार्वती जी के जपो तो बता दें' तो कहा 'जपेंगे।'

आपने (गुरुदेव ने) कहा 'हम पहले यही मंत्र जपते थे, १० वर्ष की उमर से १५ बर्ष की उमर तक। दीन बन जाओ, यह भोला नाथ हैं, बड़े दयालु हैं, उन्हीं से राम जी की भक्ति मिलती है, जानकी जी ने पहले शंकर जी को भजन बताया है, वे राम तत्व के ज्ञाता और दाता हैं' और प्रार्थना किया 'वे मंत्र ओला गिराने वाले, अंधा करने वाले, आग लगाने वाले छोड़ दो, वे मंत्र भक्ति की हानि करते हैं।' तब उन्होंने कहा 'अच्छा नहीं करेंगे।' फिर उनको मंत्र व मंत्र जपने की विधि जो आपको मालूम थी बता दिया।

अध्याय ३

वैराग्य

इस तरह बीते जीवन के २७ साल, कभी घर पर, कभी अयोध्या जी में गुरु जी के पास, कभी बाबा टीकादास की कुटी पर, कभी किसी साधु संत के दर्शन में, कभी किसी अन्य स्थान में, आना नेम टेम करते, सतसंग करते, रहनी सहनी सीखते, कठिन अभ्यास करते, सेवा करते इत्यादि इत्यादि। लक्ष्य एक ही था—भजन। स्वामी रामानन्द जी ने काशी के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी वैदिक विसहास (विश्वनाथ) जी को एकान्त में उपदेश किया था कि आँख की पुतली में दो रुखा शीशा लगा हुआ है, इधर देखिये तो प्रपंच उधर देखिये तो सतपंच। प्रश्न व उत्तर इस प्रकार थे।

प्रश्न—मंत्रशास्त्र, तंत्रशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास और पुराण सब में राम नाम ओर तद्बीज की अपूर्व महिमा गाई गई है, भिन्न-भिन्न मत रखते हुए भी इसी एक (राम नाम महिमा के कथन) के कारण उनमें समदर्शिता आई है, मरनी, करनी, धरनी, भरनी समस्त लौकिक व्यौहार में इसी की प्रतिष्ठा है, इष्ट कोई भी देवता हो, उसकी सिद्धि इसी राम नाम से होती है, यह प्रसिद्ध बात है, मानो सब देवता इस में वास करते हैं, शिव जी कुटुम्ब सहित इसी को जपते हैं और आप भी इसी का अनुष्ठान करते हैं, सो बतलाइये 'राम नाम क्या है' इसको हम कैसे समझ सकेंगे जिससे प्रतीति उत्पन्न होती है।

उत्तर—स्वामी जी ने मुस्कराकर कहा, आपका अन्वेषण संकलन और प्रतिपादन सत्य है, परन्तु यह है क्या सो तो केवल योगी पुरुष निश्चय रूप से जान सकते हैं, राम नाम क्या नहीं है? यह जिसने समझ लिया वही जानेगा कि वह क्या है? प्रतीति प्रसव करने वाली विवेक बुद्धि जड़ता से रहित और समता के सहित जब उदय होती है तब पात्रता प्राप्त होती है तभी संत गुरु के प्रसाद से प्राणी महामंत्र के

रहस्य को समझने लगता है, हृदय की थैली में वह हीरा रखा है, आँख की पुतली में दो रुखा शीशा लगा हुआ है, इधर देखिये तो प्रपंच और उधर देखिये तो सतपंच।

हमारे पूज्य गुरुदेव का शीशा सतपंच का साफ खुला हुआ था, जो साफ सिद्ध होता है। पैदाइश से लेकर २७ की आयु तक जो हम ऊपर प्रस्तुत कर चुके हैं और आगे जो भी लिखेंगे वह भी यही सिद्ध करेगा कि आप भी भगवान का कोई विशेष अंश है, जो हम नहीं जानते। आये हैं जन कल्याण करने, राम नाम का सदावर्त बाँटने खुले हाथों। गंगा बह रही है जिसका जी चाहे लुटिया भर ले।

समय आया पूर्ण वैराग्य का, घर की मोह माया के त्याग का, गुरु की २४ घंटा सेवा करने का, जब आपकी अवस्था २७ की थी। सुनिये गुरु जी के शब्दों में :—

बाबा श्री रामकिंकर दास जी की छावनी में महाराज (दादा-गुरु) साढ़े सात साल रहे। महाराज के पास एक भक्त राजा राम डेढ़ वर्ष रहा फिर चला गया। महाराज जी को भोजन की तकलीफ होने लगी। महाराज के सामने राम जानकी की छटा रहती थी। वह भोजन नहीं बना पाते थे। आटा, दाल, तवा हर जगह छटा की चमक रहती थी। तब वह भोजन श्री माधोदास जी के यहाँ करते थे। देर हो जाती थी। महाराज ११ पर भोजन कर लेते थे। हम उस समय बाबा टीका दास के यहाँ रहते थे जो हमारे घर से ३० कोस है। तब हमारी अवस्था २७ साल की थी। महाराज जी वहाँ प्रकट हुए। बाबा से बात हुयी। तब बाबा ने कहा कि अब तुम जाओ हम नहीं रोकेंगे। हम सब हाल अपनी माता जी से जा कर कहा। वह बोली 'जाओ'।

जाओ जाओ ऐ मेरे साधु रहो गुरु के संग—इस प्रकार माँ का तथा बाबा टीका दास का आशीर्वाद पाकर आपने प्रवेश किया वैराग्य आश्रम में, २८ की उमर में। १३ वर्ष, २८ की अवस्था से ४१ की अवस्था तक डट कर दादा गुरु की सेवा की।

दादा गुरु रामकिंकर दास की छावनी रामघाट अयोध्या में एक कोठरी १२ हाथ लम्बी और ७ हाथ चौड़ी मिट्टी से जोड़ी हुई में रहते थे। यह कोठारी पं० रामकिशोर ने बनवाई थी। इसी कोठरी में पूज्य गुरुदेव भी आकर रहने लगे।

आने के बाद आपने इस कोठरी को मिट्टी भूसा, गोबर से भीतर बाहर लेसा था। नीचे जमीन पीटकर बराबर कर दिया, जमीन कच्ची रखी गई थी। फिर बाबू प्राग नारायण ने ईंटा लाकर अपने हाथ से दो पावा बनाकर पटरा चार लगा दिये थे। उस पर सब सामान भोजन का रहता था। आगे और दक्खिन तरफ दो चबूतरा बन गए, कमर की बराबर एक १२ हाथ लम्बा ६ हाथ चौड़ा और एक ७ हाथ लम्बा ६ हाथ चौड़ा, नहीं तो बरसात में पानी भर जाता। बाबू मिट्टी खोदते थे, आप ढ़ोते थे, चार दिन में दोनों चबूतरा ठीक हो गए। कड़ी पड़ी थीं, चौका मिट्टी के थे, उसकी ही झाँप थी। सर्द बहुत था। दादा गुरु खजूर की चटाई पर रहते थे, चटाई छोटी रखते थे गांठ के बराबर पैर जमीन पर रहते। गुरु की चटाई सुखाते थे, वह ८ दिन पर सड़ जाती थी। आपको एक साधु १ हाथ चौड़ा, ५ हाथ लम्बा एक पटरा दे गया था, उस पर रहते थे। जाड़े में आप दो बोरा रखते थे– एक पैरों की तरफ छोड़ लेते और एक सर की तरफ से छोड़ लेते थे। दादा गुरु को छोटे पर से ही जाड़ा-घाम नहीं लगता था।

गुरु सेवा

भंडार बनाना, खिलाना जिसके लिए दादा-गुरु आपको बाबा टीकादास की कुटिया से लाये थे, के अलावा आपके काम थे :–

(१) कोठरी के आस-पास की सफाई करना।
(२) भगवान की पूजा आरती करना।
(३) बरतन मलना, रसोई लीप पोत कर साफ रखना।
(४) बाजार से साग सामान लाना।
(५) आटा पिसाने सर पर गेहूँ रख कर फैजाबाद फतेहगंज चक्की पर ले जाना और लाना।

(७) प्रसाद भोग तैयार करना–फलों को भोग लगाने के देने से पहले चख कर निश्चय कर लेना कि खट्टा तो नहीं है।

(८) दीन दुखियों के लिए दवायें तैयार करना, सब जाति की दवा करते, दवा का दाम न लेते।

(९) असहायों के मल मूत्र साफ कर देना।

(१०) दादा गुरु के पैर व बदन दाबना, पंखा करना, मक्खी मच्छर न बैठने देते थे।

(११) साधुओं गृहस्थों का सम्मान सत्कार करना, जाति-पाँति का भेद न करते थे।

(१२) मेला आदि होने पर आस पास यात्री जो टट्टी कर जाते दातून डाल जाते, उसकी सफाई करते–दो बीघा पक्के में–चैत, सावन, कार्तिक में।

(१३) ताउन, हैजा की बीमारी में रोगियों की सेवा करते, मर जाते तो कंधा देते, उनके घर व वस्त्रों को धो सुखा देते।

(१४) जिसको रुपया पैसा की जरूरत होती और आप के पास होता तो फौरन देते।

(१५) जीवों की रक्षा करना, खतरे की चिन्ता न करना आप रात को ११ पर शयन करते २ पर उठ जाते।

जीवों की रक्षा

पहले मैं कुछ घटनाएँ 'जीवों की रक्षा' की ही लिखता हूँ जिससे पता चलेगा कि पूज्य गुरुदेव किस प्रकार संकट में ग्रस्त जीवों की रक्षा अपनी जान पर खेल कर करते थे। इस प्रकार की घटनाएँ गुरु जी जब कोई प्रसंग आता तब बताते। पढ़िये, आप ही के शब्दों में।

(१) एक बँधे साड़ की रक्षा–तपसी जी की छावनी के दक्खिन करीब ही अहिराना है। उसमें तीन अहीर मिलकर एक साँड़ को एक गूलर के पेड़ के नीचे चारों पैर साँदि कर गरदन में रसरी

लगाकर बाँध दिया था। मुँह नीचे रहता था, ऊपर नहीं उठता था। हमारे करीब आधे बीघा पर था। ३ दिन हो गये थे, तब दामोदर दास सीढ़ीपुर मन्दिर से आये ८ बजे रात को और हमसे कहा "बड़ी तकलीफ साँड़ को है, ३ दिन से बँधा है, पानी तक नहीं पाया है, डर के मारे कोई छोर नहीं सकता है, दूर तक नागफनी काट काट कर बिछा दिया है।" तो हम बड़ी छुरिया लेकर गए, उजेरी रात थी, सब रसरी पैरों की काट कर, गले की काट कर पीछे से उसे दोनों हाथों से धकिया दिया, वहाँ से बाहर निकाल दिया, हमें नागफनी का कुछ पता न चला। सबेरे अहीर देखने आए, हमारे पास आए तो हमने कहा "हमने छोर दिया।" उन्होंने कहा "आपने कैसे छोरा ?" हमने कहा "८ बजे रात को मालूम हुआ कि ३ दिन से बांधा है, हमें दया आ गई, छुरी लेकर रसरी काट कर निकाल दिया।" तो तीनों पांय पड़े और कहा "वहाँ नागफनी चारों तरफ पड़ी थी।" हमने कहा "हम नहीं देखा" तो हमें ले गये, हम देख कर आये तो महाराज (दादा-गुरु) से कहा—दयावश भगवान ने रक्षा करी।

(२) एक जीव की रक्षा—अरसा ४८ साल (सन्-१९२६) का हुआ होगा, चन्द्रहरी के दर्शन को गए। वहाँ १२ शंकर भगवान पधरे हैं, काले अरघा में। एक बीच में हैं और ११ चारों तरफ हैं। सभी मूरती बहुत अच्छी हैं। वहाँ से लौट कर विदेही जी के मन्दिर के सामने जो बुरजा है उस पर कई भक्त बैठे थे, हम भी बैठ गए। बसन्त राम और बस्ती जिला के एक साधु लाला हमारे परिचय के थे। वह भी बैठे थे। शाम हो गई थी। भादों का महीना था। पानी बुरजा के नीचे एक गज तक आ गया था। एक आदमी नहाने आया। कमर भर में गया। एक मगर बुड्डी लगा कर आया। जब २० हाथ का फासला रह गया तो पानी पर आकर उसे पकड़ने दौड़ा। तब लाला ने कहा "मगर आ गया," छर छर छर पानी पर चला, हम कूद पड़े और लाला भी कूदे। लाला ने कहा "आ गए साले।" हम तो मगर की पीठ पर गिरे, लाला पूँछ पर गिरे, मगर डुब्बी मार गया, वह आदमी नहा कर चला गया।

(३) **एक गाय की रक्षा**—हम और दुर्गा चौबे की बहिन का लड़का राम आसरे भगवानपुर बाजार को गए। गाँव से शायद डेढ़ कोस हो। उधर से लौटे तो हमने कहा "अब की जंगल में होकर चलेंगे। जंगल बहुत पुराना था। पहले ठाकुर लोगों की कच्ची गढ़ी थी और बहुत गहरे खावां चारों तरफ रहे, एक जगह से निकास था। चारों तरफ बाँस की बेनई लगी थीं। वे बाँस बड़े ठोस होते हैं और एक में जकड़े होते हैं कि बिना काटे कोई अन्दर नहीं जा सकता। उन बाँसों को हमारे यहाँ झँखरा कहते हैं, कहीं-कहीं कटबाँसी कहते हैं, उनकी लाठी डंडा बहुत मजबूत होती है।

जब खावाँ के पास पहुँचे तो देखा एक गऊ उसमें खड़ी थी, चारों पैर मिट्टी के अन्दर फंसे थे, पूरे पैर मिट्टी के अंदर थे। वह मिट्टी सूख गई थी। दो माह हो गये, चरवाहा ढूँढ़ कर लौट गये, समझे कहीं चली गई या कोई बाँध लिया होगा।

वह गाय सूख गई थी, रोवाँ खड़े थे, आँखें बड़ी-बड़ी थीं, कान तक न हिला पाती थी। हमारे दोनों के पास बाँस के मजबूत डंडे थे, ढ़ाई ढ़ाई हाथ के। वह हमसे ३ साल बड़े थे जोरदार थे, हम उनसे कुछ ऊँचे थे। उनसे कहा "पहले आगे के पैर डंडों से खोदे जाँय फिर पीछे के। हम दोनों जुटे। चारों पैरों की माटी निकाली, फिर हम कहा पेट के नीचे की माटी निकाली जाय तब ठीक बैठेगा। पेट के नीचे की निकाली फिर हम कहा, डंडे पेट के नीचे लगाकर उठाने में उसकी हड्डी चोट खा जायगी तो उन्होंने कहा फिर कैसे उठावोगे। हमने कहा "खेंच से उठावेंगे। गऊ के नीचे मूढ़ छोड़ कर, छाती तक पहुँच कर उसे उठा लिया, एक हाथ थनों की तरफ एक आगे की तरफ, आसानी से निकाल कर लिटा दिया। पैर सीधे थे, मुड़ नहीं सकते थे, दो माह से धँसे पड़े थे। फिर हम जंगल में जाकर आवाज लगाया। चरवाहे आये, एक ने कहा "गाय हमारी है, दो माह हुए खो गई थी, हम समझे थे कि कहीं चली गई।"

फिर बैलगाड़ी लाए, उसमें पाखरी बिछी थी, सब लोग मिल

कर, उठा कर, लिटा दिया। घर ले गए। उसे पानी ऐसा सतुवा बाँस के चोंचले में पिलाया, फिर दाल पिलाने लगे, फिर आटे गुड़ की लपसी देने लगे, कड़ू तेल गरमा कर पैरों में मलते, धीरे-धीरे मुलायम चारा देने लगे, उठ कर खड़ी होने लगी। ४ माह बाद फिर ठीक हुई, ३ साल की थी। बहुत अहीरों ने सेवा की।

जिन्दगी वाले को कौन मार सकता है, पुराना भोग था, भोग कर ठीक हो गई।

(४) एक दूसरी गाय की रक्षा—हम पछाँह बाबा टीका दास की कुटी पर से आ रहे थे। घर से ३० कोस है। जब सीतापुर १० कोस रह गया तब एक चमार गऊ लिये जाता था। उस गाय के आँसू बहते थे। हमने पूँछा "गाय क्यों रोती है" तो कहा "इसका बच्चा घर में है" तो हमने पूँछा "इसे तुम कहाँ लिए जाते हो" तो कहा कसाई के यहाँ बेचने, हम कई गाय बेच चुके हैं" तो हमने पूँछा "कितने की बेचते हो" तो कहा ५) या ६) की।" तब हमने कहा "हम ७) देंगे, सीतापुर से २ कोस हमारे भाई की ससुराल है, वहाँ चलो, भोजन भी करवावेंगे, अगर बछरा दे जाओगे तो उसके दाम अलग देंगे।" वह गाय हमारे पीछे-पीछे चलने लगी। हमने कहा रसरी छोड़ दो, उसने छोड़ दी।

रास्ते में जो कसाई खरीदता था मिला, हमारे साथ एक फरलांग तक आया। हमने कहा "हम गऊ खरीद चुके हैं ७) में अब तुम पा नहीं सकते हो चाहे एक-एक रोवाँ की एक-एक अशरफी दो," तो लौट गया। हम भाई की ससुराल में आये, उसे भोजन कराया, रुपया दिया और कहा "बछरा दे जाना" फिर वह नहीं लाया। गाय हार में छोड़ दी गई, जब खाकर मस्त हो गई, तब गोशाला में पहुँचा दी गई।

(५) एक साँड़ की भगवान ने रक्षा की—हम और पंडित शिव प्रसाद, पंडित मोहन लाल के यहाँ सरगद्वार जा रहे थे। राजेन्द्र रोड पर एक साँड़ ने दूसरे साँड़ को रपटाया। जो भागा था वह कुछ

कमजोर था, पीछे वाला बड़ा जबर था। आगे वाला ५० हाथ निकल गया था। पीछे वाला गुस्से से हमारे सन्मुख आ गया। पंडित ने कहा "महाराज, बचो बचो" वह दूसरी तरफ हो गये। हमने उसके चारों पैरों के बीच में सोंटा फँसा दिया और खड़े हो गए। वह रुक गया। १५ मिनट खड़ा कर दिया, तब तक आगे का साँड़ दूर निकल गया। पंडित ने कहा "महाराज जी क्या बात है" हमने सोंटा खींच लिया, साँड़ का गुस्सा शान्त हो गया था। हमने कहा "देखो, भगवान ने कैसे उस कमजोर साँड़ की जान बचाई।

बड़े साँड़ को बाहर के लोग यहाँ छोड़ गये थे, वह बैलों को और साँड़ों को तंग करता था। फिर यहाँ के लोग उसे सरजूपार उतार आये। फिर नहीं आया।

(६) एक कुत्ते व सर्प की रक्षा—१२ की उमर में दिवाली के दिन हमारे यहाँ खेत जगाए जाते हैं। हर एक खेत के कोने पर थोड़ा फूस रख कर दियासलाई से जला कर कह देते हैं "खेत राजा जागो, खेत राजा जागो हो।" कई खेत जगा कर ३ बजे मंगल बाबा तिवारी की बाग करीब थी, वहाँ गए। उसमें एक कच्ची कुइयाँ का ओदर करीब १५ हाथ था, पानी नहीं था। उसमें एक कुत्ता पड़ा था और एक काला साँप खूब मोटा कुएँ के अन्दर चारों तरफ घूमता था। हमने झाँक कर देखा तो कुत्ते ने हमारी तरफ मुँह उठाया।

एक आम के पेड़ की डार पड़ी थी, हवा से गिर गई थी, पत्ते सूख कर गिर गये थे, गीली थी, हमारे शरीर ऐसी मोटी लम्बी २० हाथ की थी। हम उसे उठा लाये और उस कुएँ में धीरे धीरे एक किनारे से सरकाये। वह जाकर बैठ गई, ऊपर ५ हाथ निकली थी। सर्प उस पर चढ़ कर निकल गया। फिर हम उस डार को निकाल कर बाहर फेंक दिया।

कई बकरी आ गईं, एक ने उसी जगह मरा बच्चा पैदा किया। वह उसे सूंघ कर जान गई कि मर गया, तब सब बकरिन के साथ

चली गई। हमने मरा बच्चा उठा कर कुंआँ में डाल दिया। कुत्तो ने उसे खा लिया। गाँव गये, रस्सी लाये, रसरी का फदा चौड़ा कर दिया और कुएँ में छोड़ा। कुत्तो ने आगे के पैर फंदे में छोड़ दिये। हमने खींच लिया। फंदा न बहुत कसा था, न ढीला था। खोला तो पूंछ हिलाने लगा, पीछे पीछे चल दिया। वहाँ जा कर पानी पिलाया। दूध ३–३ पसेरी भैंस देती थीं, साढ़े ९ सेर गाय देती थीं। कच्चे दूध में गेहूं की रोटी दोनों समय देते थे। दूसरे दिन गरम पानी से रीठे के फेने से उसको खूब साफ किया, शरीर चमकने लगा।

४ दिन बाद हींगा पासी आया, कहा, भय्या यह कुत्ता खराब है, बड़ी बड़ी बछियाँ, बड़ी बड़ी बकरिन पर चोट करता है, छोटिन से नहीं बोलता है, बड़े बड़े कुत्ते कई हों, सबको नोच कर भगा देता है, बन्दरों को तंग करता है, हम इसे कुएँ में डाल आए थे, १० दिन हुये, समझा था मर गया होगा, आप इसे निकाल लाये। हमने कहा "हम क्या करें, हम दयावश ले आये, इसकी मौत अभी नहीं थी, नहीं तो साँप जो कुएँ में था काला वह काट खाता, मर जाता।"

पाँचवें दिन मझियां गाँव से कुचबंधिया आये। हमसे कहा "हमें दे दो इसे खूब मांस खिलावेंगे, यह गोहें भी मारता था, सब कुत्ते नहीं मार सकते।" हमने कुचबंधिया और कुत्ते को भोजन कराया और कहा "तुम इसके साथ जाओ।" बस चल दिया।

(७) बन्दरों की रक्षा–१६ की उमर में हम और स्वामी दयाल चाचा नीमसार जा रहे थे, २० कोस हमारे यहाँ से है, जब दो कोस रह गया तो सड़क से दो फरलांग जंगल है। हमने कहा "जंगल हो कर चला जाय" तो उन्होंने कहा "चलो।" वहाँ गये तो एक बाग आम की पड़ी, चारों तरफ खन्दक लगी थी। उसी खन्दक में हाथ पैर बाँधे सैकड़ों बन्दर पड़े थे, कुछ मर गये थे और कुछ के शरीरों को सियार खा गये थे, करीब ३० जिन्दा थे।

उनके हाथ पैर छोरे, उठा कर बैठाया वे फिर गिर पड़े न

मालूम कितने दिन के भूखे प्यासे होंगे। शरीर सूख गये थे। वहाँ कहीं दूर तक पानी न था। हमने कहा, "देखो यहाँ खोल देते तो पेड़ पर बैठते, आम के टेबुआ खाते और पत्ती। ऐसे-ऐसे निरदई जीव हैं, उनको घोर नर्क हुआ होगा।"

(८) एक बालक साधु की रक्षा—महीना भादों का था। सरजू जी में पानी का बड़ा बेग था। साधु बहुत नहा-नहा कर ऊँचे खड़े थे। एक छोटा साधु नहाने गया तो पानी के बेग से रुक न पाया, बह चला, एक लोटा हाथ में था जिसमें पानी ५ या ६ सेर आता, दोनों हाथ में साधे रहा। सब साधु ऊपर से हाय-हाय करते थे। हम (गुरु जी) आ गये कूद पड़े। करीब ६० हाथ निकल गया था, पास पहुँचे, एक धक्का मोढ़े का मारा, फिर हम पानी के बेग से बह चले। सरजू जी ने उसे किनारे कर दिया। हम पैर कर एक किनारे गये। वहाँ से उसके पास आये, वह काफी पानी पी गया था, और लोटा न छोड़ा था। उससे लोटा लेकर पानी फेंक दिया और उसे उठाया। एक साधु ने कहा 'इसकी बाँह पकड़ कर ऊपर खींचों', करार थी, उसने खींचा, हम लोटा लेकर गये, उसकी टाँगे पकड़ कर उलटा कर दिया, सब पानी पेट का मुँह से निकल गया, देर तक पड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे बोलने लगा।

हमने कहा "लोटा काहे नहीं छोड़ा" तो कहा "आश्रम में मारे जाते।" हमने कहा कि देखो, इसकी सुरति लोटे में लगी रही। फिर धीरे-धीरे खाली लोटा लेकर आश्रम को गया। तुलसी बाड़ी में आश्रम था, करीब ४ फरलांग पर। लोटा दोनों हाथ से थामे था, इसी से पानी पी गया।

इन उदाहरणों से पाठक स्वयं निर्णय करें कि पूज्य गुरुदेव का दया-भाव किस कोटि का हो सकता है। मैं तो कहूँगा 'बहुत विशाल।'

अनुभव

अब मैं प्रस्तुत करूँगा पूज्य गुरुदेव की उपलब्धियाँ, जो आपको दादा-गुरु की सेवा के समय २८ से ४१ की अवस्था तक प्राप्त हुई थीं।

जहाँ तक हो सकेगा आपके जो जो अनुभव मुझे मालूम हुये हैं मैं गुरु जी के शब्दों में ही प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगा।

राम विवाह

(१) राम विवाह देखा—हम (गुरु जी) अपने गुरु जी परम-हंस बाबा बेनी माधव दास जी महाराज के पास आये २८ की उमर में। २ माह बाद सबसे पहले शुरू-शुरू ध्यान में राम विवाह देखा था। महा-रानी जी दस हजार सखिन के बीच में जै माल लेकर धीरे धीरे चलती थीं, सब सखी मंगल गाती थीं, २० कड़ी का था, ऐसे स्वर मिले थे मालूम होता था एक जनी गा रही है। हम सुबह लिखना चाहते थे तो महाराज जी ने मना कर दिया, कहा, 'पहिले पहिले न लिखो, नहीं तो फिर कुछ न होगा', तब सब भूल गये।

राजा जनक जी के दर्शन

(२) राजा जनक जी के दर्शन—फिर एक दिन नित्य दरबार गये। वहाँ बीच में राजा जनक जी बैठे थे, गलमोच्छा रखाये, गोरे-गोरे, पतरे-पतरे बन्ददार लम्बा अँगरखा पहिने, सफेद धोती, चोगसिया टोपी सर पर थी। हमने पूँछा "आप कौन हैं ?" तो कहा "हम राजा जनक हैं।" हमने कहा "आप राजा जनक हैं तो हमको राम जी का कोई पद सुनावो" तो खड़े होकर, कुछ झुक कर, दाहिना हाथ सामने कर के पद सुनाने लगे, चारों तरफ ठौर पर घूम कर, पहिली कड़ी सुना कर मस्त हो गये। तब हमें सब याद हो गया।

नानक देव जी

(३) गुरु नानक देव जी के दर्शन—इसके ६ माह बाद नानक देव रामघाट पर (संवत् १९७७ सन् १९२१) दिन में ११ बजे बट वृक्ष के नीचे प्रकट हुए। शुकुल धोती पहिने थे जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहिनाई जाती है, पीली रँगी, इस रीति से बहुत पंडित अभी पहिरते हैं। सफेद बाल चाँदी ऐसे चमकते थे, दाढ़ी भी सफेद चमकती थी।

बहुत गोरे थे, शरीर महकता था। हम दण्डवत किया। फिर उनके गले के पास से पेट तक चाँदी कैसी पटरी प्रकट हो गई। उसमें पैंतीस अक्खरी खुदी थी काली रोशनाई की। हम से कहा 'सुनावो'। हमने कहा "हम रोज इसका पाठ करते हैं।" सुनाया तो वह पटरी उलट गई, पेट की तरफ अक्षर हो गये, हम से कहा "यह स्तोत्र, तुमको सिद्ध हो गया।" फिर हमने चरनोदक उतारा, तब अन्तरध्यान हो गये। फिर थोड़े दिन में प्रकट होकर थोड़ा बताया, फिर तीसरी बार सब बता कर अन्तरध्यान हो गये। हमें सब याद हो जाता सब लिख लेते।

गुरु नानक देव जी का पद बिलक्षण वाणी नामक पुस्तक में छपा है।

(४) शंका समाधान—जब रामघाट पर आये दो माह बीत गये तो ३ बजे रात्रि में ध्यान में दादा गुरु के साथ बैठे थे, तो आपके मन में विचार उठा "मुसलमान हिन्दुओं को मारते हैं, गौवें काटते हैं, तो भगवान उनके यहाँ कैसे खाते होंगे" तो एक बूढ़े मुसलमान तथा उसकी बुढ़िया, बड़े सच्चे भक्त के घर पहुँच गये। वहाँ भगवान राम एक कुरसी पर बैठे थे, एक कुरसी खाली थी, उस पर आपको राम जी ने बैठा लिया। वहाँ एक मेज पड़ी थी बीच में। वह बूढ़ा मुसलमान अन्दर से कढ़ी पकौड़ी एक प्याले में लाया, एक तश्तरी में बड़ी रोटी लाया, मेज पर रखा, भगवान ने कहा "खाव" तो आप खाने लगे। उस कढ़ी पकौड़ी में बड़ा स्वाद था। मिट्टी की तश्तरी, मिट्टी का गेड़वा और मिट्टी का प्याला था, जल पिया, ध्यान टूट गया।

दूसरे दिन फिर ध्यान में ३ बजे आपको यह शंका उठी कि बंगाली मछली भात खाते हैं और कीर्तन करते हैं तो भगवान इनके यहाँ कैसे खाते होंगे ? तो आप एक बंगाली के यहाँ पहुँच गये। वहाँ कृष्ण भगवान बैठे थे, आप भी बैठ गये। बंगाली एक पत्तल लाया, फिर भात लाया, उसमें खूब महक थी और कटोरे में मछली चार-चार अंगुल की लाया, रखा, भगवान ने कहा 'खाइये'। आप खाने लगे, उन मछलियों में काँटे न थे, बड़ा स्वाद मछली भात में था, खाकर जल

पिया गिलास में, फिर बंगाली लोटे में जल लाकर हाथ धुलाया, ध्यान टूट गया।

तबसे आपने कान पकड़े और कहा "भगवान साँचे मन के मीत हैं, जाति कोई हो।" यह शंकायें दादा गुरु की शक्ति से राम भगवान और कृष्ण भगवान ने दूर कर दी।

शंका, क्या भोग लगता है, समाधान–दादा गुरु जब भोग लगाने बैठते और भोग लग जाता तब बताते थे कि 'आज सनातन भगवान बड़ी छावनी के भोग पाये हैं।' रोज का हाल बतलाते थे कि 'आज कनक भवन के सरकार, आज रतन सिंहासन के, आज जन्म स्थान के, आज जन्म भूमि के, आज बड़ी जगह के, आज तपसी जी की छावनी के, आज मनीराम जी की छावनी के, आज लक्ष्मन किला के, आज हनुमत निवास के, आज हनुमान गढ़ी के, आज जानकी घाट के, आज नरसिंह जी के, आज पं० राम बल्लभशरन जी के जानकी घाट वाले, आज गोला पर के जानकी बल्लभशरन जी के, आज बड़ी कुटिया के, आज त्रेता के ठाकुर, जिनके एकादशी को सबको दर्शन मिलते हैं, आज काले राम जी के, आज माधुरी कुंज के, आज बलिराम आचारी के, आज जगदीशपुरी के, आज द्वारिकाधीश जी, आज बद्री नाथ जी, आज श्री रंग जी, आज बिहारी जी वृन्दाबन के, आज बावन भगवान, आज राम घाट के राघौ जी, आज ददुआ के राधा माधव, आज राधा बृजराज, आज भगवान दास आचारी तुलसीचौरा के, आज रामकिंकर दास की छावनी के, आज वशिष्ठ कुण्ड के, आज मणी पर्वत के आये।" और भी बहुत बताते थे सब याद नहीं है। बताते थे कि ऐसी पोशाक पहिने थे।

जब (दादा गुरु) महाराज मनीराम की छावनी कथा में जाते थे तब हम (गुरु जी) देखने जाते थे। वही पोशाक पहिने देखते थे। यह शायद दो माह या कुछ अधिक देखा होगा, तो आवाज आई कि क्या गुरु की परीक्षा करता है, तब जाना बन्द कर दिया।

पूज्य गुरु जी बताते थे कि हमें देखने में बड़ी खुशी होती थी, हम परीक्षा नहीं करते थे।

(६) राम जी, महारानी जी, तथा लखन लाल जी को सरयू स्नान कराया—पूज्य गुरु जी के शब्दों में साढ़े पाँच साल राम-घाट पर रहे। हर उत्सव समैय्या पर भगवान को एक तख्त पर लिटा कर मज्जन स्नान कराते और पूजा करते थे। एक दिन हमारे मन में यह इच्छा हुई कि पास में सोती है, खूब निर्मल जल बह रहा है, तो भगवान को स्नान कराते। हम भगवान के सामने आये और कहा "आप सब में बहुत बजन है सो कैसे ले चलेंगे।" तो लखन लाल जी ने कहा "तुम आवोगे तो हम हलके हो जायेंगे। गर्मी का महीना था, उजाली रात थी, ४ बजे का समय था, हम दाहिने काँधे पर राम जी को और बाँये काँधे पर लखन लाल जी को बैठाया, तब लखन लाल जी ने कहा "राम लला जी को हमें दो।" तब लखन लाल जी ने दो राम लला को काँधे पर और एक राम लला को गोद में ले लिया और हम महारानी जी को दाहिनी गोद में ले लिया। जब तो सब फूल की तरह लगते थे। साथ में एक हजार से अधिक बन्दर खों खों करते हुये थे। सब के सोती के किनारे पहुँचते ही सब अपने आप खटाखट उतर कर स्नान करने लगे। पहले लखन लाल स्नान करके और राम लला को स्नान करा कर, फिर पहले की तरह तीनों राम लला को लेकर और हम महारानी जी को गोद में लेकर वापस आये। सब बन्दर भी स्नान करके कूदते हुए साथ में आये। जैसे ही पधराया तैसे ही पहले कैसी मूरती हो गईं और सब बन्दर चले गये।

(७) दादा गुरु का उपदेश—साधक जब तक कच्चा हो अलग बैठे—पूज्य गुरु जी के शब्दों में—

बाबा नारायण राम रानूपाली के स्वर्गवास के भण्डारा में बाबा टीका दास आये, महाराज (दादा गुरु) ने कहा "जाओ ले आओ।" हम जाकर बाबा से मिले, बाबा कहे "भीड़ मिट जाय बिदाई हो जाय, तब चलना ठीक होगा, चार दिन बाद आना।" हम एक बार रोज जाते थे, जब सब बिदा हो गये तब आये। महाराज (दादा गुरु) बट के पास तखत पर बैठे थे, दण्डवत किया, बात हुई भजन की।

महाराज ने कहा—हमें १४ की उमर में घर पर शंकर जी ने भजन की विधि बताई थी, सब काम हो गया, सिर्फ मन्त्र मझले महाराज (बाबा जगन्नाथ दास) से लेना पड़ा। हम १६ सूर्य तक पहुँचे।

बाबा और महाराज की भजन की बातें ३ दिन होती रहीं। महाराज ने हमसे कहा "तुम सुनोगे तो सब दिमाग में भर जायेगा, तो फिर बहुत कसर रह जायेगी, इससे अलग बैठो, अपनी सुरति पर ख्याल करो।"

जब महाराज से दिन में किसी देवी, देवता, सिद्ध सन्त से बात होती थी तो हमने एक बार पूँछा "आप किससे बात करते हो तो कहा' "तुम हमारा बोल सुन सकते हो पर उनका बोल नहीं सुन सकते, न उन्हें देख सकते हो। जब भगवान की कृपा हो जायेगी तब देख सकोगे और सुन सकोगे।"

पूज्य गुरुदेव १२ सूर्य तक गये हैं

यह बात सुन कर रानी साहेबा इटौंजा, (जो इटौंजा हाउस, छाछूकुआँ, लखनऊ में रहती हैं) तथा श्री महाबीर प्रसाद श्रीवास्तव (जो कचहरी रोड लखनऊ में रहते हैं) ने पूज्य गुरु देव से प्रश्न किया दिनांक १८-८-७५ को—

प्रश्न—महाराज जी, आप कितने सूर्य तक गये हैं।

उत्तर—१२ तक।

प्रश्न—तो क्या-क्या उसके भीतर देखा।

उत्तर—सूर्य का रूप विष्णु भगवान कैसा है, ४ भुजा हैं, श्याम वर्ण है, प्रकाश शुक्ल है। सूर्य चन्द्र अगणित हैं। भगवान के रोम-रोम में ब्रह्मांड है, स्वासां से तमाम निकलते, फिर स्वासां में समा जाते हैं, उनका हाल कौन जान सकता है। जितने में सुई खड़ी की जाती है उतना भी कोई नहीं जान सकता है। जितना जाने उतने में विश्वास कर ले तो वह पार हो जाय।

(८) मणी पर्वत परिक्रमा में सिद्धों के दर्शन २९ की अवस्था में—गुरु जी के शब्दों में—बाबा हरनाम दास जी मणी पर्वत के रामकुमार दास रामायणी के गुरु रोज १२ बजे रात को ५ परिक्रमा करते थे, चाहे पानी बरसे या पत्थर पड़े, नेम नहीं छूटता था। महाराज जी (दादा गुरु) के पास सरजू नहा कर आते थे तो बताते थे कि "परिक्रमा करने में सिद्धों के दर्शन होते हैं, तो हम हाथ जोड़ते हैं तो वह सीताराम बोलते हैं, उनकी आवाज आसमान की तरफ जाती है १४ हाथ के, २१ हाथ के, २५ हाथ के, ३० हाथ के, हजारों सिद्ध मणी पर्वत पर हैं।" बाबा ८० वर्ष के थे, हम २९ के थे। परिक्रमा में हमारे साथ चलते, हम एक घंटा में ४ कोस चलते थे, पर उनके आगे निकल नहीं पाते थे।

हमें दो बार दर्शन हुए हैं। तब हमारी अवस्था २९ की रही होगी।

(९) दो बर्ष सेवा करते बीते तो एक दिन शाम को आपने (पूज्य गुरुदेव) दादा गुरु जी (जब वे तखत पर बैठे थे आप चौतरा पर बैठे थे), से कहा "महाराज जी एक बात हम माँगते हैं" तो दादा गुरु जी ने कहा "कौन बात" तो आपने कहा "जो आपके बाद हमारी सेवा करे, उससे अधिक जो जाल करे, परेशान करे, मारे, उसकी गती ऊँची हो" दादा गुरु ने आपको अपने पास बुलाया और पीठ पर दोनों हाथ थपथपाया, सिर पर हाथ फेरा, हँसे और कहा—

उमा संत की यही बड़ाई ।
मंद करत जो चहैं भलाई ।।

आप कहते थे कि "तब हमें खूब आँसू आये, फिर आँसू पोंछ कर हाथ मुँह धोया।"

(१०) जब आप ३० साल के थे तो आपको मालूम हुआ कि महाराज जी (दादा गुरु) नानक जी के अंश हैं—प्रसंग इस

प्रकार आया कि सन् १९२३ में काठियाबाड़ से एक संन्यासी आये, उमर ७० साल की थी। वे पीनस पर चलते थे, बड़े धनी थे, बड़े सुकुमार थे और पढ़े थे। उनको तीव्र वैराग्य हो गया, एक चेले को को सौंप कर अकेले यहाँ अवध चले आये। पं० राम बल्लभाशरन जी के यहाँ ठहरे। बातचीत हुई। पं० राम किशोर जी के साथ दादा गुरु के पास आये। पंडित जी ने महाराज जी (दादा गुरु) से कहा "यह संन्यासी इतने विद्वान हैं कि यहाँ इनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता है, कहते हैं कि मत्थे ज्ञान से गती नहीं होती बिना हत्थे के आये, जो हमें रास्ता बतायेगा उसी के दास हो जायेंगे।" भक्त राज १६ गंगा के सालिगराम की पूजा करते, कनक भवन में भागवत सुनाते, रोज शाम को वेद की स्तुति भगवान को सुनाते, तुलसी की माला बनवा कर धारण किये थे।

दादा गुरु ने कहा "अपने भेष में रहो। गती भजन से होगी, भेष बदलने से नहीं और बैर बढ़ेगा।" तब दादा गुरु जी ने 'ध्यान' बताया, वह जुटे, पहले उनको स्वामी शंकराचार्य के दर्शन हुए, स्वामी जी ने कहा "तुम बड़े भाग्यशाली हो, भगवान ने तुमको ऐसे महापुरुष के पाप भेज दिया है कि तुमको सब कुछ प्राप्त हो जायेगा, सब का समय भगवान बाँधे है, जीव धीरज नहीं रखता, यह महाराज बेनीमाधव दास जी 'नानक जी' का अंश है।"

भक्तराज आपके (गुरु जी के) पैर पकड़ते तो आप उनके हाथ पकड़ लेते थे, पर वे नहीं मानते थे, दीनता की मूर्ति थे, एक दफे थोड़ा भोजन करते थे। दो माह बाद महाराज (दादा गुरु) की आज्ञानुसार अपने आश्रम पर गये। वहाँ सात साल रहे। शरीर छोड़ने के पहले अपने शिष्यों को चार उपदेश दिए। पत्र आया था।

[१] कोई अतिथि आवे, भूखा न जाय।
[२] जीवों पर दया करना।
[३] कोई कपड़ा या पात्र, जो कुछ माँगे, उसे देना।
[४] अपनी तकलीफ सह लेना, दूसरों को आराम देना।

पं० राम किशोर जी ने दादा गुरु जी से कहा था "महाराज जी,

अगर आप न होते तो अयोध्या की बड़ी बदनामी होती, कोई साधु यहाँ ऐसा नहीं है जो भक्तराज को ठीक मार्ग बता देता, भगवान ने अपने धाम की मर्यादा रख ली।"

पाठक, इसी प्रकार का प्रसंग आप आगे पढ़ेंगे, जहाँ मैं प्रस्तुत करूँगा कि विशेश्वर दास पासी को कोई सही उपदेश करने वाला न मिला, तब पूज्य गुरुदेव ने उसे उपदेश दिया, जिसके द्वारा उसने भी सब प्राप्त किया था।

(११) सिद्धों के दर्शन—रामघाट से गोकुल भवन दादा गुरु शाके १८४७ संवत् १९८२, सन् १९२७ में आ गये थे। इस बात का पता लगता है एक पत्थर से, जो गोकुल भवन में दक्खिन-पश्चिम की बुरजी जी के पास बरामदा में कोने में लगा है। तब पूज्य गुरुदेव की अवस्था ३३ वर्ष की थी।

इसके लगभग डेढ़ दो वर्ष बाद—महीना गर्मी का था, उजेला पाख था, चौदस थी—दक्षिण-मुख बरामदे में पूरब तरफ दादा गुरु लेटे थे, समय १२ बजे रात का था—आप (गुरु जी) करीब ही लेटे थे। मणी पर्वत के सिद्ध लोग आये, सब हाता भर गया, सबने बारी-बारी दण्डवत किया। वे सिद्ध १४ हाथ, २० हाथ, २५ हाथ, ३० हाथ के थे। शरीर पर सिर्फ लंगोटी लगाये थे। दाढ़ी केश सब सुनहले थे, शरीर तेज से चमकते थे। दादा गुरु उठ कर बैठ गये।

कई सिद्धों ने आपसे कहा "इनको (दादा गुरु को) अब कंठी जनेऊ की जरूरत नहीं है, इनका नाम सिद्ध हो गया है, सहज समाधि हो गई है, राम जानकी हर समय सामने रहते हैं, लय समाधि हो गई है, प्रेम समाधि हो गई है, अवध में किसी को नहीं हुई है।" दो घंटा सब रुके, फिर अन्तरध्यान हो गये।

सबेरे दादा गुरु ने आपसे कहा "कंठी हमारे गले से छोर लो, जनेऊ निकाल लो, आलस लगता है।" तब आपने निकाल लिया।

आपने दादा गुरु से पूछा "ये कुछ खाते पीते हैं", तो दादा गुरु

जी ने बताया "सरजू जी में दूध की एक लहर आती है–किसी दिन, दिन में दो बजे, किसी दिन रात में दो बजे–तब ये सब अपना अपना पात्र भर लेते हैं।" फिर पूछा "और किसी नदी में भी आती है ?" तो कहा "हाँ, शारदा, गंगा, जमुना, त्रिबेणी, गोमती में।" फिर पूछा "यहाँ और सिद्ध पुरी में हैं" तो कहा "लाखों हैं, जो प्रेमी सच्चा हो, वह रात में सरजू किनारे रहे, निश्छल हो, उसे देख पड़ेंगे, वैसे कोई उनको देख नहीं सकता, ये पुरी में प्रधान प्रधान जगहों में रोज दर्शन करते हैं, यह पुरी सिद्धों की सराय है, इसका वर्णन कौन कर सकता है, सब पुरिन में श्रेष्ठ है, अपना भाव ठीक हो तो कुछ देख सुन सकता है। यहाँ बड़े-बड़े प्रतापी राजा हो गये। भगवान की जन्म भूमि है।"

यह बात पूज्य गुरुदेव ने अपनी मौज में एक दिन शायद माह अक्टूबर १९७३ को लिखी थी। तब एक संन्यासिनी माता ने पूछा—

प्रश्न–क्या वह सिद्ध संत अब भी आपके पास आते हैं ?

उत्तर–पूज्य गुरुदेव हँसे और बोले "कभी-कभी"

प्रश्न–राजा रामसिंह ने पूछा–क्या इन लोगों पर जल नहीं पड़ता।

उत्तर–पूज्य गुरुदेव ने कहा 'इन पर जल नहीं पड़ता है, न घाम लगता है न जाड़ा लगता है, इनके ऊपर भगवान के नाम की छाया रहती है।'

(१) **कई युग के एक संत**–बहुत काले, नंगे, हाथ में बीना लिए थे, प्रकट हो गये उस कमरे में जो उत्तर पूर्व कोने पर गंगकूप के सामने है। यह बात सन् १९२९ की है। दादा गुरु का शरीर सुस्त था, लेटे रहे, आप और पं० राजेन्द्र दास बैठे थे। तब यह कमरा बहुत अच्छा छप्पर से बना था, काफी ऊँचा था, ईंटा के पावा थे डबल दो-दो ईंटा के।

संत जी के दाढ़ी केश थे, हाथ में बीना था, बैठने पर उनके सिर के जटा बड़ेर में लगते थे। सितार बजाने लगे तो पूज्य गुरुदेव ने कहा "सितार न टुनटुनाओ, हमको कोई भजन की विधि बताओ" तो वे अपनी जबान निकाल कर मस्तक ऊपर लगा कर फिर अन्दर कर

लिया तो गुरुदेव ने कहा "हम जानते हैं यह खेचरी मुद्रा है। इसको, खोपड़ी के अन्दर बीच में छेद है, उसमें सटा देने से अमृत जो गगन से टपकता है वह रसना में आता है, उससे आयु बढ़ती है, एक दिन की समाधि से १० दिन की आयु बढ़ जाती है, स्वांसा २१६०० रोज नासिका से निकलते हैं, इसी तरह धीरे-धीरे बढ़ाते-बढ़ाते योगी अजर अमर हो जाते हैं।" फिर पूज्य गुरुदेव ने कहा "जब अन्दर तरह-तरह के बाजे बजते हैं तो इसको रखने की क्या जरूरत है, यह ऊपरी शौक है, अभी छूटा नहीं, हमें कोटिन युग के हठ योगी मिले, ऐसा योगी कोई न मिला जो नंगा हाथ में सितार लिये हो, जितने मिले सब लंगोटी लगाये मिले, कोई भभूत रमाये लंगोटी लगाये थे" तो वे कुछ न बोले।

तब फिर आपने (गुरुदेव ने) कहा "इस योग से तमाम सिद्धी हो जाती है, सब जीव का रूप धारण कर लेते हैं, मन्दिर मकान जवाहिरात को छिन भरे में रच देते हैं, पर भगवान की प्राप्ति नहीं होती।" फिर कहा सुनो एक कथा। एक नट कला करने वाला एक साधु से दो माह की समाधि सीखा और एक राजा के दरबार में गया और कहा कि "मैं एक साधु से समाधि सिख आया हूँ" तो राजा ने कहा क्या इनाम लोगे, तो कहा, "एक घोड़ा, एक धोती का जोड़ा" बस बैठ गया, न यह बताया कि दो माह की समाधि करते हैं, न मन में संकल्प किया। गरीब था, मारे खुशी के स्वांसा खींच लिया तो ब्रह्मरंध्र में समा गया, ३ दिन बाद राजा ने जाना मर गया, तो उसे मिट्टी का गहरा गड़हा खोद कर गाड़ दिया, हजारो वर्ष बीत गये, सब गाँव डीह हो गया। उधर से तीन हठयोगी निकले तो दिव्य दृष्टि से देखा और अड़ोस पड़ोस के लोगों को बुलाया। वे फरुहा कुदारि लेकर आये, बड़ी मेहनत की, उसे बाहर निकाला, एक हठयोगी ने उसकी गर्दन के पीछे की नसें दाबी तो समाधि भंग हुई और बोला "घोड़ा जोड़ा"। तब तीनों हठयोगी बोले कि "तेरा मन घोड़ा जोड़ा मे लगा रहा, हजारों वर्ष बीत गये, न राजा है न रानी, न गाँव में कोई है, सब डीह हो गया, तेरे घर का पता नहीं है, जा देख ले, कोई तेरे बाद में है।" तब पं० राजेन्द्र दास जोर से हँसे, तो दादा गुरु

उठ कर बैठ गये, कहा 'पंडित क्या बात है' तब पंडित ने कहा 'एक हठयोगी बैठे हैं आपके दर्शन को आये हैं इनकी बात है।'

तब संत जी ने कहा 'यह सब संस्कार होता है' और दादा गुरु को दण्डवत करके चले गये।

(१३) मर्द शहीद के दर्शन—पूज्य गुरुदेव को, जब आप की अवस्था शायद ३७ वर्ष की थी, सन् १९३० रहा होगा, तब हुए थे—कैसे सो सुनिये पूज्य गुरुदेव के शब्दों में—

इनके गुरु की मजार रुदौली में है। महाराज जी (दादा गुरु) के पास एक मुसलमान आया। महीना गर्मी का था। यहाँ से दक्खिन १० या १२ कोस गाँव है, नाम हम भूल गये। उसकी उमर २५ साल की थी। यहाँ (गोकुल भवन में) ३ दिन रहा। हाल बताया। लूक चलती थी। महाराज को हम सुरंग में रखते थे। वह महाराज के ताड़ का पंखा बैठा हाँका करता था। भोजन करा देते थे। स्नान सरजू में रोज करता। उसके जगह जिमीदारी थी। उसने कहा 'हमारे भाई-बाप, मांस, मछली, लहसुन, प्याज खाते हैं, हम सादा भोजन करते हैं, शादी नहीं की है, गाँव के लोग खाने को देते हैं, हम अपने हाथ बना लेते हैं, हमें कुछ हिस्सा खाने भर को मिल जाय तो हमारा बसर हो जाय।'

हमने उसे मर्द शहीद के पास शाम को भेज दिया। रात दो बजे आवाज आई 'तुम फिक्कू हलवाई फैजाबाद के यहाँ से सवा सेर वर्फी लावो, एक खुशबूदार हार लावो, एक हल्की सफेद चादर, दो इतर की फुरहरी, दो किस्म के सफेद लोबान, तब तुमको मिलेंगे और पहले उनको मिलेंगे, जिन्होंने तुमको बताया है।'

वह मुसलमान लड़का हमारे पास आया, हाल बताया। महाराज के चरनों पर कुछ रुपये चढ़े थे। हमने दिये, भोजन कराया, फिर फैजाबाद भेजा, सामान लाया, शाम को सब सजावट किया। हम कुवाँ पर ११ बजे जा कर पानी से धुला दिया और कम्बल धो कर सुखा कर बिछा दिया, गुलाब के फूल रख दिये, अगरवत्ती लगा दिया, इतर की दो फुरहरी रख दिया। वहाँ बैठ गये। ठीक १२ बजे फकीर प्रकट हो

गये। तारकशी का टोपा ऊँचा था, तनजेब लपटी थी, ऊपर थोड़ा देख पड़ता था, सफेद पायजामा था, सफेद अचकन थी। साथ में थे एक संन्यासी हरिहरानन्द, जो सितार बजाते थे, बड़े गोरे महीन तनजेब का अचला गेरुआ रंग का था, सारा शरीर देख पड़ता था। एक मियाँ काले-काले, उमर उनकी भी ४० होगी, सर में बाल दाढ़ी थी, तबलची थे, उनका नाम गुलाम अली था। सब से हम दण्डवत किया, फिर बैठक हो गई। तबला सितार बजने लगा। संन्यासी ने एक ध्रुपद शुरू किया, बहुत जोर से उठाया. इतनी जोर से अलाप भरा कि वह ध्रुपद आसमान में चक्कर लगाने लगा। पहली कड़ी याद है सो लिखता हूँ :—

"सीतापति रामचन्द्र मेरो दुःख हरहु नाथ
पार ब्रह्म परमात्मा स्वामी नारायण हो।"

हम तो सुन कर लय दशा में हो गये, सुधि बुधि भूल गये, यानी ज्ञान, ध्यान, भान सब का पता ही न रहा। फकीर की दया से शरीर में होश आया। तब फकीर ने कहा 'आँखें बन्द करो, राम जी के चले जाने के बाद मन्दिर में जो मूर्तियाँ वहाँ पधारी गईं उनके दर्शन करावें।' हम आँखें बन्द किया तो फकीर आगे-आगे चले ऊपर-ऊपर, हम कमलासन से पीछे-पीछे सर सर सर सर चले, बहुत मन्दिरों के दर्शन कराया, बहुत बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ थीं, छटा छबि सिंगार की शोभा वर्णन में नहीं आ सकती। फिर फकीर ने कहा 'आँखें खोल दो।' खोला तो कुवाँ पर कमलासन से बैठे थे, फिर सब अन्तरध्यान हो गये।

वहाँ जाकर लड़के को लेकर रुदौली गुरु की समाधि पर उसी रीति से ले गये, कहा, 'आँखें बन्द करो' फिर कहा 'आँखे खोलो' मजार के करीब बैठा था, आप भी बैठे थे, पाँच तवाफ मजार की दोनों ने लगाया, आवाज आई, 'जा तेरा मनोरण पूरा हो गया।' फिर फकीर ने उसे आँख बन्द करके घर भेज दिया। वहाँ भाई बाप खुशी से हिस्सा दे दिया, उसका आदर करने लगे, आप अन्तरध्यान होकर अपनी मजार पर आये।

हम से यहाँ कहा था "सात दिन हमारी मजार पर बैठे, मन लगा कर, तो हम उसका सब काम पूरा कर दें–संसारी धन, जश, पुत्र, संकट, ईश्वरीय भजन की विधि बता दें, खान, पान, रहन-सहन तो ईश्वर की मेहरबानी उस पर हो जाय। एक छोटा रोटी का टुकड़ा रोज खाते थे। १२६ पर शरीर छोड़ा। यह अरब से आये थे।

(१४) राधा महारानी से वार्ता–जब आपकी अवस्था ३९ की रही होगी–माघ का महीना था, ३ बजे दिन में महाराज (दादा गुरु) के योग अग्नि बढ़ी, पसीना से तर हो गये। आप (गुरु जी) जान गये तो ताड़ का पंखा झलने लगे। राधा महारानी दादा गुरु के पीछे प्रकट हो गयीं, एक हाथ में उनके हरा पंखा गोल झालरदार था। पर आप के हाथ से पंखा ले लिया और आपसे कहा 'तुम तो बहुत सेवा करते हो, अब हम कुछ दिन करेंगी' और पंखा करने लगीं। दादा गुरु की गरमी शान्त हो गई। तब आपसे (गुरु जी से) कहा 'भक्तों को भोग यहाँ भोगा कर अपने धाम को भेज देती हूँ। इन्होंने (दादा गुरु ने) १४ की उमर में राम जानकी से जो बरदान माँगा वह मिल गया।' तो पूज्य गुरु जी ने पूछा 'क्या माँगा था' कहा 'चुप ध्यान में बैठे थे, शंकर जी ने ध्यान बता दिया था, दाहिनी जाँघ पर राम जी और बाँई जाँघ पर महारानी जी छोटे स्वरूप से बैठ गये। राम जी ने पूछा क्या चाहते हो तो इन्होंने कहा बस आपको हर समय देखा करें, तो राम जी ने 'एवमस्तु' कह दिया, दुबारा १५ दिन बाद फिर प्रकट हुए और पूछा अब क्या माँगते हो, तो बोले हम हर समय आपके साथ रहें, तो राम जी बोले 'एवमस्तु'।

(१५) जानकी महारानी से वार्ता–गुरु जी के शब्दों में महाराज जी (दादा गुरु) का बीमारी मे, समय, गरमी का महीना था गोकुल भवन मन्दिर के उत्तर तरफ बरामदे में तखत पड़ा था। महाराज जी की सेवा में पं० राजेन्द्र दास जी थे, वे चँवरी हाँकते थे कि महाराज के ऊपर मक्खी न बैठे। तब जानकी जी दोनों खम्भों के बीच में

लता-पता हरी हरी थी, उसके बीच में प्रकट हो गईं। छटा छबि सिंगार ऐसा था जो देखते ही बनता था, कहने में नहीं आ सकता, शरीर से बड़ी सुगन्ध आती थी। थोड़ी थोड़ी हवा चलती थी।

हमसे कहा "कब तक सेवा करोगे ?" हमने कहा "जब तक हमारा शरीर रहेगा तब तक।" पंडित जी ने दण्डवत किया। हम ताकते रहे तो दाहिना हाथ हमारी तरफ उठा कर अंतरध्यान हो गईं। सुगन्ध बहुत देर तक आती रही।

महाराज जी की बीमारी में तमाम देवी, देवता, सिद्ध संतों के प्रत्यक्ष दर्शन होते थे।

(१६) भैरव गिरि से वार्ता—यह घटना लगभग सन् १९३३ की है, जब पूज्य गुरुदेव की अवस्था ४० रही होगी। सुनिये पूज्य गुरुदेव के ही शब्दों में—

भैरव गिरि औघड़ गिरिनार पर्वत के महाराज (दादागुरु) के दर्शन को आए। भेष दूसरा था। बहुत दुबले, हड्डी-हड्डी शरीर में थीं, एक लँगोटी लगाए थे, झोरी छोटी सी थी, उसमें एक काठ का टुकड़ा और एक गड़ाँसा था। श्री महाराज जी ध्यान में बैठे थे, ३ बजे रात का समय था, महीना बरसात का था। जहाँ भगवान पधारे हैं, भगवान की दाहिनी ओर महाराज जी थे, बांई तरफ हम थे। किवार बन्द थे। वे प्रकट हो गए। महाराज को दण्डवत करके हमारे पास सामने बैठ गये। कुछ देर बाद खड़े होकर लंगोटी खोल कर हमारे ऊपर मूतने लगे। हम आँखें बन्द करके बैठे रहे, फिर अन्तरध्यान हो गए, वह मूत सब गायब हो गया। फिर आये, हमारे ऊपर इतना डोलडाल किया कि सारा शरीर भर गया तो हमने कहा "हम घिनाते नहीं हैं, सब साफ कर लेंगे। तब अन्तरध्यान हो गए। फिर आये तो हमारे मुँह पर और सारे बदन पर अपना मुँह लगा कर चाट दिया। हम कुछ न बोले। फिर अन्तरध्यान हो गये। फिर आये, हमसे कहा "भूख लगी है" तो हमने दोनों पैर उनके सामने उठा दिए। वे झोरी से

काठ और गड़ासा निकाल कर पैर काट कर चबा गये, हम कुछ नहीं बोले, कुछ तकलीफ नहीं हुई, खून नहीं आया, पैर फिर देखा जैसे के तैसे हो गये। फिर अन्तरध्यान हो गये। फिर आये तो सात महीन चावल दिये, कहा कि बाँध लो, कल रात भर कैलाश की लीला देखोगे। हमने कहा "महाराज जी ध्यान में हैं, आप रुकें" तो कहा "नहीं, वे खुद जान जाँयगे, कोई ध्यान में हो उससे बोलना महा पाप है, उसका आनन्द चला जाता है तो उसे दुःख होता है", फिर महाराज जी की दण्डवत करके अन्तरध्यान हो गये।

दूसरे दिन ११ पर शयन जैसे ही किया बस कैलाश की लीला शुरू हो गई। शिव जी के गणन का नाच गान, जै जै कार, ४ बजे रात को बन्द हुआ। वह चावल गाँठ लगी रही गायब हो गये। दिन में महाराज जी (दादा गुरु जी) से कहा तो बोले "भैरव गिरि थे, हमें पहले भी मिले थे।"

यह हैं थोड़े से अनुभव अथवा उपलब्धियाँ जो पूज्य गुरु देव को अपनी ४० साल तक की तपस्या में प्राप्त हुईं। मुझको जितनी मालूम हो सकीं लिखी हैं।

परीक्षा

अब चलिए, देखें, ४० साल की तपस्या का क्या फल हुआ, उस फल की क्या कोई परीक्षा भी हुई और यदि हुई तो क्या और कैसे ?

मेरी तुच्छ बुद्धि के अनुसार दादा-गुरु की बीमारी और आपकी लगन से सेवा करना ही परीक्षा रही—ऐसी सेवा, जो साधारण व्यक्ति की शक्ति के बाहर है, वह आपने की। यह समय आया संवत् १९८४ तदनुसार सन् १९२७ में, जब आपकी अवस्था ३६ की रही और दादा गुरु की ८६ थी।

दादा गुरु बीमार पड़े, ज्यों-ज्यों दवा की गई त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता गया वाली कहावत सिद्ध हुई। कफ, खाँसी का प्रकोप रुकता ही

न था, दादा गुरु का शरीर कमजोर होने लगा, डोलडाल (टट्टी पेशाब) की दिक्कत होने लगी, बीमारी लगभग साढ़े पाँच साल चली, पर पूज्य गुरुदेव ऊबे नहीं, खाने पीने आराम की चिन्ता छोड़ कर बड़े प्रेम व लगन से अपने गुरुजी की सेवा में मग्न रहते। टट्टी पेशाब कराते, डोलडाल यहीं काठ में ईंटा बनवाकर दो लोहे की टेबल तस्तरी रख कर कराते, फिर चक्र धोते, कफ हाथ पर ले कर फेंकते, पंखा झलते, बदन दबाते. दवा देते, कपड़ा बदलते, साफ करते, साफी भिगोकर सब बदन पोंछते इत्यादि, यानी पूरी ४ नर्सों व एक जमादार का काम आप अपने अकेले दम पर करते।

इन सेवाओं के कारण भंडार बनाने का समय ही न मिलता था तो अपनी बहन मुन्नी देवी, जो इस समय बुआ जी के नाम से पुकारी जाती हैं, को भंडार बनाने के लिये बुला लिया। घंटा खाँड़ को भी हटना मुशकिल था, पाठ पूजा के लिए भी समय न मिलता था। नींद छोटे पर से ही बहुत थोड़ी थी, सेवा काल में सोये ही नहीं, बराबर दादा गुरु के पास ही रहते, स्वास्थ्य की कोई चिन्ता न की, शरीर में उष्णता बढ़ गई, दिमाग का खून काला पड़ गया, पर आप अड़े ही रहे जब तक दादा गुरु जी की साँस रही, उनके पास से हटे नहीं।

परीक्षा का प्रमाण पत्र

तब दादा गुरु ने कहा "राम मंगल ने जैसी सेवा की आगे किसी ने न की होगी और आइन्दा शायद ही कोई करे।" यह आपको मिला प्रथम प्रमाण पत्र अपनी सेवा भाव का–तपस्या का।

दूसरा प्रमाण पत्र आपको कलियुग महाराज ने दिया स्वयं प्रकट हो कर, जब आपकी अवस्था ३८ या ३९ की रही होगी। दोहे में :–

दोहा– धन्य धन्य तुम धन्य हो, धन्य धन्य तुम धन्य।
सब देवन के दरस भै, तुम पर हम परसन्न ॥१॥

तुम हमार गुरुभाय हो, हम तुम्हार गुरुभाय।
ताते विनती करत हों, बार बार सिर नाय ॥२॥

गुरु सेवा का फल यही, आँखिन देखो भ्रात ।
आवागमन न होय अब, छूटे जग से नात ।।३।।
चहे तहाँ अब तुम रहौ, राम कृष्ण हैं संग ।
अब तुमरी रक्षा करें, शिव समेत बजरंग ।।४।।

तत्पश्चात् श्री भद्रसेन जी ने आपको स्वयं इस प्रकार आशीर्वाद दिया –

राम मंगल दास तेरा नाम कहते संत जन ।
श्री गुरु जी के चरण सेवा में रहता था मगन ।।
दुनियाँ की मौज उड़ा चुका, करता है अब प्रभु का भजन ।
किरपा हुई सरकार की छूटिगा आवागमन ।।

श्री युगल माधुरी कुंज, नजर बाग, अयोध्या जी के श्री मैथलीशरन भक्तमाली जी द्वारा रचित भक्तमाल "संत चरितामृत", जो विक्रमीय सं० २०२४, फाल्गुन शुक्ल १२ को प्रकाशित हुई है, उसके छप्पय १२५ पृष्ठ ४७ में पूज्य गुरुदेव की प्रशंसा इस प्रकार लिखी है :–

श्री परम हंस परमारथी मंगलदास महान हैं ।
आवें जेते दीन दुखी त्रय ताप तपाये ।
योग सिद्ध बल तिन्हैं तोष पोषत सत भाये ।
अनुभव गूढ़ रहस्य अलौकिक कहैं नवीनौ ।।
ज्ञान विराग निधान भक्ति दसधा में भीनौ ।
प्रत्यक्ष देव दरशन करें इन सम कोउ न आन हैं ।
श्री परमहंस परमारथी मंगलदास महान हैं ।

यह तो रहे केवल प्रमाण-पत्र अथवा भावनायें अथवा आशीर्वाद अथवा शुभ कामनायें । दादा गुरु ने आपको परम योग्य अधिकारी जान कर सौंपा संसार का कार्य भार अपने बाद और आपको यह उपदेश किये, जिनको पूज्य गुरुदेव "पाँच महावाक्य" कहते हैं–

[१] अयोध्या जी में रहना चाहे तहाँ पर,

[२] कोई जमीन दे, तो न लेना,
[३] मरे पर पास में कफन को पैसा न निकले,
[४] कोई मारे तो हाथ न चलाना,
[५] किसी से बैर न करना,

तब हमारे पास पहुँच जाओगे। यह पाँच बातें कहकर दादा गुरु ने शरीर छोड़ दिया था, श्रावण एकादशी का दिन था और सन् था १९३४।

पूज्य गुरुदेव बताते थे बली भगत से १२) कर्ज लिया था, बाबू प्राग नारायण को तार गया था, जब वह आ गये तब दादा गुरु जी को सरजू जी ले गये–४० घंटे बाद। दादा गुरु कह गये थे कि रामघाट पर पधारना। महाप्रयाण की शाम को वहाँ गाँठ भर पानी था, पर सबेरे इतना जल बरसा कि वहाँ बहुत पानी हो गया था। अथाह था, निकलना मुशकिल हो गया। पानी का वेग भी बहुत तेज था।

स्वास्थ्य

लगातार ५-६ साल की कठिन सेवा, कोई विश्राम नहीं, खाने पीने की कोई चिन्ता नहीं, समय कुसमय जो मिल गया तो खा लिया, नहीं तो पानी पी कर ही रह गए, आदि कारणों से आपको (गुरु जी को) बड़ी कमजोरी आ गई; वायु बिगड़ गई, जिससे वायु कई हाथ ऊपर फेंक देती थी, सिर टपकने लगा। एक दिन रात के दो बजे माथे के बाईं तरफ बड़े जोर से आवाज हुई। ऐसा मालूम पड़ा कि दुनियाँ घूमती है, फिर हड्डी के पाँच टुकड़े हो गए, बाईं आँख व नाक से लौ निकलने लगी। टूटी हड्डी का एक टुकड़ा सरक कर बाईं ओर जबड़े में लटका, चिमटी से वह हड्डी बाहर खींच ली, उसके बाद काला सीरा ऐसा तमाम बदबूदार खून निकला। चार दिन के बाद दूसरा टुकड़ा हड्डी का उसी तरह निकला और मवाद बहुत निकला, फिर उसी तरह चार दिन बाद तीसरा हड्डी का टुकड़ा व मवाद निकला, फिर उसी तरह चार दिन बाद चौथा हड्डी का टुकड़ा व मवाद उसी

तरह निकला। एक, पाँचवा बाकी रह गया। जाड़े का मौसम था, प्यास बहुत लगती थी, पर पानी नहीं पिया, केवल अमरूद एक माह खाया, जिससे गरमी शान्त हो गई।

पांचवा हड्डी का हिस्सा एक साल बाद उतरा। मुंशी जी से कहा कि जबड़ा चीर दो तब इस हड्डी के टुकड़े को खींचो। वे न माने और ज्यों ही हड्डी को हिलाया वह ऊपर चढ़ गई। फिर एक साल बाद उतरी। पहले की तरह मुंशी जी ने फिर हिलाया तो वह ऊपर चढ़ गई। तब से अभी तक नहीं उतरी। उस समय से हजारों प्रकार की आवाजें होने लगी हैं।

गोकुल भवन का परिचय–पूज्य गुरुदेव ५-६ साल रामघाट पर रहने के बाद अपने गुरु जी के साथ-साथ गोकुल भवन में सन १९२७ में आये। बाबू प्राग नारायण, वकील, उन्नाव आपके गुरु भाई थे, उनके मेली डिप्टी कमिश्नर होवार्ट साहब जब फैजाबाद बदल कर आये, तो बाबू जी ने उन्हें लिखा कि हमारे महाराज जी (दादा-गुरु) को रामघाट पर तकलीफ है, आप कहीं कोई अच्छी जगह दे दें तो कृपा होगी। तब साहब, लाला शिव प्रसाद डिप्टी कलक्टर, जो अच्छे भक्त थे, के साथ रामघाट स्थान पर आए, दादा गुरु को ३ बार सीताराम, सीताराम, सीताराम किया, जगह देखी और कहा "हमारे पास वशिष्ठ कुंड पर जमीन है देख लो, अगर पसन्द है तो हम आपको दे दें।"

तब आप (गुरुदेव) जमीन देखकर आए, पं० रामकिशोर के पास गए, सब हाल बताया, तो पंडित जी जा कर साहब से मिले और सब बात जान समझ कर बाबू जी को पत्र लिखे, उन्नाव। बाबू जी ने उत्तर में सलाह दी कि साहब के पास आप जाकर जमीन लिखा लें। तब पंडित जी ने साहब के पास जा कर सब बात किया और जमीन का पट्टा, शायद ३० साल का, बाबू जी के नाम बनवाया और पूज्य गुरुदेव को लाकर दिया।

तब आपने (गुरु जी ने) दादा गुरु की आज्ञा से नीव पूजन की

साइत महीना आषाढ़ सम्वत् १९८१ में निश्चय किया। निश्चित तिथि पर दादा-गुरु रामघाट से रात ३ बजे चले आये और जमीन के सामने सड़क पर जो वट का वृक्ष था उसके नीचे आसन लगा कर ध्यान-मग्न हो गए, तो देखा एक शुकुल हाथी बड़ा सुन्दर खूब सजा हुआ आया, उस पर चारों भाई और गुरु वशिष्ठ जी बैठे थे, पीलवान बहुत सुन्दर सजा था। हाथी बैठ गया, चारों भाई और वशिष्ठ जी उतरे तो दादा गुरु ने सब को दण्डवत किया, तो सब ने दादा गुरु के सर पर हाथ रख दिया, फिर सवार हो गये हाथी पर और जन्मभूमि की ओर चले गए। सुबह नींव पूजन हुआ, प्रसाद बटा। बाबू प्राग नारायण भी आ गये, ईंटा आने लगा। लगभग एक साल लगा गढ़ा पाटने में, जमीन हमवार करने में, चौहद्दी, चार कमरे और भंडार बनने में।

संवत् १९८२ में बरसात के पहले ही गृह प्रवेश हुआ, भंडारा हुआ। भंडारे के बाद जब दादा गुरु ध्यान में बैठे तो कृष्ण भगवान ने दधि लूटन लीला आरम्भ कर दी और दही का भरा हाथ दादा-गुरु के मुँह में खोंस दिया। तब दादा गुरु हँसे और गुरु जी को पुकारा और कहा "राम मंगल सुनो–इस स्थान का नाम 'गोकुल भवन' रखना।"

तदनुसार बाबू जी ने पत्थर लगवा दिया। ऊपर सनातन राम और हनुमान जी का नाम पीछे से लिखा गया।

तब यहीं एक पुराना कुँआ था, उत्तर पूर्व के कोने पर। एक दिन शाम को आप जब पानी भरने गए तो ढ़ाई हाथ रसरी कम पड़ गई, रसरी जोड़कर पानी खींचा और दादा गुरु जी से हाल बताया, तो दादा गुरु कुछ न बोले, चुप रहे, पर सुबह जब पानी लेने गये तो ढ़ाई हाथ पानी आ गया खूब सफेद, रसरी बढ़ गई। यह भी बात आपने दादा गुरु से कही तो दादा गुरु बोले "गंगा जी आ गईं।"

इस कुआँ के पूर्व में खेत दो बीघा है, सब में झाऊ चार चार अंगुल का जम गया। तमाम साधु देखने आये तो कहा "कहीं से बीज उड़कर आ गया है", तो आपने (गुरु जी ने) कहा "बीज इसी खेत में जमा, दूसरे में क्यों नहीं जमा।"

यह कुआँ पूज्य गुरुदेव ने पक्का बनवा दिया है सन् १९७३ में।

अध्याय ४

स्वतन्त्र

वर्ष ४१ संवत् १९८९ सन् १९३४ में छुट्टी पाई, अपने गुरु जी की सेवा से स्वतन्त्र हुए, पर कहावत है–

राम काज कीने बिना,
मोहि कहाँ विश्राम ।

वह समय आया जिसकी भविष्यवाणी, जब आपकी अवस्था ११ की थी, शंकर भगवान ने एक महात्मा के रूप में आकर की थी कि "तुम्हारा अर्जुन नामक बालक संसार में प्राणियों का कल्याण मार्ग-दर्शक होगा और तमाम जीवों को तारेगा ।" प्रिय पाठक, तब पूज्य गुरुदेव को विश्राम कहाँ, चैन कहाँ, जब तक वह सब कार्य, जिसके लिए भगवान ने भेजा है पूरे न हो जाँय । दादा-गुरु गुरु-दीक्षा देने का अधिकार दे ही गये थे ।

पूज्य गुरुदेव जब कोई मन्त्र लेने आता तो दिन समय घड़ी विचार कर मन्त्र देते, तो आपको एक कथा सुनाते हैं जिससे पता चलेगा कि उन्होंने दिन समय घड़ी का विचार क्यों छोड़ दिया । सुनिये उनके ही शब्दों में—

एक पं० गंगा प्रसाद, निवासी कूड़ेभार के समीप, एक गाँव के आये । यह पहले जन्म के पासी थे । काम अच्छा करने से ब्राह्मण हुए इस जन्म में । जब यह १२ साल के थे, तो इनके ऊपर एक औघड़ आने लगा, तो वह दोनों हाथ का माँस खा ले फिर पुर जाय । इनको तकलीफ न मालूम हो । वह बं शंकर बं शंकर करे और ब्रह्म जिन्न जिसको पकड़े हो उस पर कुल्ला कर दे तो वह छोड़ भागे । फिर दुर्गा जी का आवेश आने लगा तो औघड़ भाग गया । दुर्गा जी, बिन्दबासिनी जी, धमसा देवी जी, तीन खुश हो गईं । दुर्गा जी ने ढोलक से बहुत गाना सिखाया ।

पंडित ने एक दिन माता से कहा कि हम राम मन्त्र लेने जाते हैं तो माता भगौती ने कहा "जाओ, मन्त्र ले आओ, उस जन्म के पासी हो, काम अच्छे करने से ब्राह्मण हुए, राम मन्त्र हम भी जपती हैं, हमारे सामने राम जानकी की छटा हर समय रहती है।" तब गंगा प्रसाद हमारे पास आये और कहे "हम माता से पूछ कर मंत्र लेने आये हैं।" वह मंगलवार की शाम को आये थे, हम (गुरु जी) समझे अपनी माता को कहते हैं, सुबह (बुधवार को) ८ बजे इसी जगह (गोकुल भवन के दक्खिन मुँह) बरामदा में बैठे थे, मन में विचार आया कि कल गुरुवार है और एकादशी है तो कल मंत्र बताना ठीक होगा।

बस इसी जगह माता दुर्गा जी प्रकट हो गईं, लाल वस्त्र धारण किये, दस भुजा, दसों में अस्त्र लिये थीं, शरीर बहुत गोरा था, मुकुट में ऐसे नग जड़े थे जो प्रकाश होता था, उसमें नेत्र चौंधिया जाते थे, दोनों नेत्र खुले थे, पलक नहीं पड़ती थी, पैर जमीन से एक बीता ऊँचे पर थे, शरीर महकता था। हम से कहा "शुभ काम में कोई दिन की जरूरत नहीं है, रात दिन भगवान के हैं।" फिर अन्तर्धान हो गईं।

तब से पूज्य गुरुदेव ने निश्चय कर लिया कि अब दिन समय घड़ी का बिचार न करेंगे और गंगा प्रसाद को बुला कर तुरन्त राम-जानकी मंत्र का उपदेश किया। वह शुक्रवार को चले गये।

गंगा स्नान के बाद पं० गंगा प्रसाद फिर आये बताया कि भगौती की कृपा से राम जानकी के दर्शन १५ मिनट हुए और कहा कि भगौती ने कहा है कि "तुमको १४ वर्ष राखूंगी, शादी नहीं करने दूँगी।" कुछ दिन रह कर चले गये।

फिर तिवारी आये तो शाम को जब आरती का समय आधा घंटा बाकी था, कुछ लोग भगवान के मंदिर के समीप बैठे थे, तब हमने बिन्दबासिनी का ख्याल किया तो वे उन पर (पंडित पर) आ गईं। गंगा प्रसाद ने जोर से अपना माथा जमीन से मारा और हम से कहा "तुमने हमारी याद किया, हम विन्धाचल से आ गईं।" हमने कहा

"अब आरती हो जाय, गाय के दूध का भगवान का भोग पा कर जाना।" तो कहा "अच्छा"। फिर जो कोई कुछ पूछा सो बताया, फिर परिक्रमा दण्डवत किया, दूध पिया, फिर माथा गंगा प्रसाद ने जमीन में जोर से मारा और कहा "हम जा रही हैं" और चली गईं। यह घटना सन् १९४२ या १९४३ की है, जब आपकी अवस्था ४९ की रही होगी।

आपने दिन, घड़ी, साइत का विचार तो छोड़ दिया, पर इतना जरूर है कि भूखे पेट मंत्र देना पसंद नहीं करते, कहते हैं कि भूखे पेट मंत्र कमजोर रह जायेगा, कुछ खा पी लो, भोजन कर लो, लेट पोट के पचा लो, तब बतावें। पर यह कोई नियम नहीं है, अगर कोई किसी कारणवश भूखे पेट ही लेना चाहता है तो उसकी इच्छानुसार वैसा ही कर देते हैं।

आचार विचार

पूज्य गुरुदेव कुछ ऐसे आचार विचार भी नहीं बताते जिनके पालन करने में भजन में बाधा पड़ने की सम्भावना हो। आमतौर से यह धारणा है कि जब तक पूजा न कर लो कुछ खाओ पिओ नहीं, इसके विपरीत आपका यह उपदेश होता है कि कुतिया को टुकड़ा डाल दो ताकि वह शान्त हो जाय, मन इसी में न लगा रहे कि किसी तरह पूजा समाप्त हो तो जल पान करें, कुछ हल्का जल पान करके तब सुख आसन से बैठ कर भजन करो, मन से। जो भजन मन से किया जाता है तो शब्द देवता के कान में पहुँचते हैं, तुम्हारा काम हो जायेगा। मन तो यों ही शुभ काम में नही लगता, भूखे में और भी बाधा डालता है, क्रोध बढ़ा देता है, क्रोध तो कसाई है।

स्नान का भी नियम विशेष पालन करने को नहीं बताते। स्वास्थ्य ठीक है तो अवश्य स्नान करना चाहिए, शरीर स्वच्छ होने से, बदन हल्का रहता है, आलस्य तंग नहीं करता। पर यदि तबियत ठीक नहीं है तो कहते हैं, हाथ पैर धो लो, टट्टी पेशाब के कपड़े बदल लो। आज तबियत ठीक नहीं है, भजन न करेंगे, ऐसा नहीं होना चाहिए।

भला सोचो, तबियत ठीक नहीं है इससे नियम को नागा कर दिया जाय, पर खाने का नागा तो होता नहीं, कैसे मजे की बात है । हाँ अगर तबियत बहुत खराब है, तेज बुखार चढ़ा है या टट्टी बहुत आ रही है, तो ऐसी हालत को नागा की माफी भगवान दे देते हैं ।

भजन विधि

भजन करने की विधि इस प्रकार बताते हैं कि सुबह ३ से ११ बजे दिन तक पूर्व मुँह बैठ कर पूजा पाठ करना चाहिए, दोपहर ११ से दो बजे दिन तक उत्तर मुँह और शाम दो बजे से रात १० बजे तक पश्चिम मुँह बैठना चाहिए । इसमें एक बात यह छिपी गूढ़ है कि इस विज्ञान के युग में बहुत से लोग यह जानते हैं कि सूर्य की किरणों का प्रभाव पड़ता है तो आप यही जान लीजिए कि यदि सूर्य सम्मुख भजन होगा तो सूर्य की किरणें सहायक होगी ।

पूज्य गुरुदेव अधिकतर बल इस बात पर देते हैं कि गृहस्थ साधक ९ पर शयन करे, ३ पर उठे, एक घण्टा डोलडाल (टट्टी) स्नान आदि में लगता है, ४ बजे से भजन करने बैठ जाय और अपना नियम सूर्य उदय के पहले समाप्त कर ले, सूर्य उदय से सूर्य अस्त तक सांसारिक काम करे । दुनियाँ जागी तो मन भागी–६० घड़ी में से एक हर की और ५९ घर की–एक घड़ी मन लगा कर भजन कर ले तो ५९ घड़ी की माफी भगवान दे देते हैं ।

हाँ, साधुओं के लिये, आप कुछ कठिन नियम बताते हैं । कहते हैं–"उनका दो ही काम है–भजन व भोजन, इसीलिये जो साधु हो वह ११ बजे रात में शयन करे और दो बजे रात में उठ जाय । छूत पाक आचार-विचार का पूर्ण रूप से पालन करे । उसे गृहस्थ आश्रम नहीं चलाना होता, नौकरी या कोई अन्य काम खेती बाड़ी, दूकानदारी, मजदूरी नहीं करनी होती, इसलिए ऋषि मुनि, शास्त्र जितने नियम बताते हैं, उन सब का उसे (साधु को) पालन करना चाहिए ।"

यात्रा में दिशा का कोई नियम पालन की आवश्यकता नहीं

बताते। जहाँ बैठा हो जिस दिशा में बैठा हो, चुपचाप अपना नियम कर ले। और कहते हैं "सादा भोजन, सादे कपड़े सादी चाल से रहना चाहिए, जैसा खावोगे अन्न वैसा बनेगा मन।"

पूज्य गुरुदेव विश्वास करते हैं तुलसीदास जी के इन पदों में :—

१. रामहि केवल प्रेम पियारा,
जानि लेहु जो जानन हारा।

२. निर्मल मन जन सो मोंहि पावा,
मोंहि कपट छल छिद्र न भावा।

श्री भूलन शाह जी, जिनका दर्शन पूज्य गुरुदेव ने १२ की अवस्था में किया था, और जिनका उपदेश इलाही बेहना ने आपको सुनाया था, उन्होंने अपने सोंटा में साधक को पाँच बातें बताई हैं। क्या उपदेश थे उसका उल्लेख पहले कर चुके हैं।

सोंटा पांच तत्व का दोनों दीनों पर

क्या भयो लिखने पढ़ने से, क्या भयो रोजा के रखौटे से।
क्या भयो काबा के जाने से, क्या भयो मत्था के घसौटे से।
क्या भयो चिल्ला के खींचे से, क्या भयो अल्ला के कह टे से।

भूलन शाह कहैं सुन मूरख राखौ साँस मंझौटे से।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानो तो सोंटे से ॥१॥

क्या भयो अजान कहे से, क्या भयो मसजिद के पैठे से।
क्या भयो कुरान पुरान पढ़े से, क्या भयो महफिल के बैठे से।
क्या भयो बाज बयान सुने से, क्या आलिम के ठैठे से।

भूलन शाह पाक तब ह्वै हौ दिल को लखौ कसौटे से।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानो तो सोंटे से ॥२॥

क्या भयो सर मूड़ मुड़ाय से, क्या आबलक के सफौटे से।
क्या भयो कफनी के पहिने से, क्या भयो सेली के गजौठे से।
क्या भयो तस्बी के बाँधे से, क्या सुमिरन के हतौटे से।

भूलन शाह कहैं सुन मूरख ह्वै है प्रेम के औटे से।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानो तो सोंटे से ॥३॥

क्या भयो मोहनी बोले से, क्या भयो शंखों के फुकौटे से।
क्या भयो गल मुंदरी बजाये से, क्या पूजा के करौटे से।
क्या भयो श्लोक के पढ़ने से, क्या बम्भन के चुनौटे से।
भूलन शाह कहैं सुन मूरख होवैगा दुई के मेटे से।
मानौ तो मूरख भली बात है, न मानो तो सोटे से ॥४॥

क्या भयो भजन के नित गाए क्या खँझड़ी के पीटे से।
क्या भयो माला के फेरे से क्या कंठी के लपेटे से।
क्या भयो तीरथ के जाने से क्या काशी के करौटे से।
भूलन शाह कहैं सुन मूरख ह्वै है आप को मेटे से।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानो तो सोंटे से ॥५॥

शेर—सोंटे पाँच तत्व हम कहे,
पाँचों का मजा भूलन शाह लै रहे।

दोहा—जो दुविधा में फँस रहे न किये प्रेम से चाह।
उनका दोज़ख यहीं है कहा है भूलन शाह ॥

शिष्य सम्प्रदाय

हिन्दुओं में आपके हर जाति के और हर प्रकार के शिष्य हैं, जैसे, राजा या बड़े जमीनदार, काश्तकार, मजदूर, दूकानदार, नौकरी पेशा वाले, जज, कमिश्नर, इन्जीनियर, अध्यापक, वकील, बाबू, चपरासी और साधु सन्यासी इत्यादि। सब एक साथ बैठते हैं, एक साथ भंडार में खाते हैं, कोई भेद भाव नहीं होता बड़े छोटे का, गरीब अमीर का।

सब मजहबों को मानते हैं, मंदिरों में भी जाते हैं, मसजिदों में भी जाते हैं। मन्दिरों का भी जीर्णोद्धार करते हैं, मजारों की भी मरम्मत कराते हैं। मुसलमानों में तमाम आपके मुरीद हैं। बहराइच के सूफी अबू मुहम्मद सिद्दीकी जब भी कभी फैजाबाद किसी उर्स में

या किसी और वजह से आते हैं तो पूज्य गुरुदेव के दर्शन को जरूर आते हैं, एक दो रात गोकुल भवन में ठहरते भी हैं। दूसरे एक ऊँचे भक्त कानपुर में रहते हैं श्री मंजूर आलम साहब । वह अपने पत्र में आपको लिखते हैं–"संतों के गवर्नर।" आपकी और मर्द शहीद की वार्ता का जिकिर मैं पृष्ठ ४८ पर कर चुका हूँ।

२१-८-७३ को पूज्य गुरुदेव के भक्त डाक्टर रमेश किदवई नगर, कानपुर के, बड़ी बुआ की मजार पर चादर चढ़ाने आये। गुरु जी के साथ हम भी बड़ी बुआ की मजार पर गये थे। वहाँ पहुँच कर आपने सफाई कराई, चद्दर ओढ़ाई, हार पहनाया गया, अगरबत्ती लगाई गई, पेड़े का भोग लगाया गया, तब गुरुदेव आँख बन्द करके कुछ देर बैठे। मास्टर हरिनाथ सिंह मेहरोत्रा और जगदीश शंकर मिश्रा, नरही, लखनऊ वाले, भी साथ थे। तो बड़ी बुआ जी ने आपको बताया कि यहाँ अयोध्या जी में इतने मुसलमान फकीर अच्छे हैं–

१. मर्द शहीद-राम भक्त, सरजू के किनारे टीले पर। यहीं पर दो और भक्तों की समाधि हैं–एक श्री गुलाम अली तबलची और दूसरे श्री हरिहरानन्द संन्यासी जो सितारिया थे।

२. कलन्दर शाह-राम भक्त, जानकी बाग में।

३. शीश पैगम्बर-हनुमान भक्त, मणि पर्वत पर।

४. राजे गाजे-राम भक्त, जानकी बाग से मर्द शहीद की तरफ जाने पर पड़ती है।

५. जिकिर शाह-राम भक्त, साकेत महाविद्यालय के अन्दर।

६. खजट्टी पीर-राम-भक्त, कुबेर टीला पर।

७. नौ गजा पीर-राम भक्त, अयोध्या पुलिस थाने के पीछे।

८. इब्राहीम शाह-कृष्ण भक्त, अरगड़ा मोहल्ले में।

९. अब्दुल अली-राम भक्त-वशिष्ठ कुंड मोहल्ले में।

इसके अलावा हैं ७०० के ऊपर मुसलमान फकीर जो आपको (गुरुदेव को) ध्यान में मिले तथा अपने अपने पद लिखाए।

१२-८-७३ को पूज्य गुरुदेव ध्यान में एक नुमाइश में अफरीका पहुँच गए। वहाँ का हाल सुनिए गुरु जी के ही शब्दों में–

आज रात ३ बजे हम ध्यान में ऐसी जगह पहुंचे, जहाँ नुमाइस-सी लगी थी। तीन चार कोस का मैदान था, जिसमें घास करीने से काटी गई थी। बीच में एक बड़ा पक्का कुआँ बना था। वहाँ सुन्दर घोड़े हाथी की दौड़ हो रही थी। फाटक पर दो मुसलमान पहरा दे रहे थे। एक मण्डप एक किनारे बना था, जिसे चारों तरफ से कनातों से घेरा गया था। उसमें कसरत और कुश्ती हो रही थी। बड़ा मजमा था। तीन प्रकार के बन्दर १२-१२ मन के वहाँ पर थे, जिनके नाम बाद में हमें बताए गये—(१) औरंग ऊटन, (२) गोरेला और (३) सिपैंजी। यह तीनों जाति के बन्दर अफरीका के जंगल में, दूसरे का नाम हम भूल गये, मिलते हैं। वहाँ पर सूती, ऊनी व रेशमी कपड़े बिक रहे थे। वहाँ संसार के सब देशों से लोग आये थे, नैपाल, काश्मीर, अरब, अमरीका वगैरा वगैरा। सब मुसलमान ही मुसलमान नजर आ रहे थे। सब बढ़िया कपड़े, साफा, पगड़ी व रकम रकम की टोपी पहने थे। वहाँ पर गाना बजाना हो रहा था।

फाटक पर खड़े दरवान हमें अन्दर ले गये और सब ने हमें कायदे से बैठाया। एक बुजुर्ग ने कहा "आप हमारे मजहब को भी मानते हैं, इसी से आपको रोका नहीं, यहाँ हिन्दू नहीं आने पाते हैं। हम एक घंटा तक वहाँ रहे।

अब मैं एक घटना और बताता हूँ जिससे मालूम होगा कि अयोध्या में भी मुसलमान पूज्य गुरुदेव को बड़ी आदर की दृष्टि से देखते हैं और बहुत अदब व इज्जत करते हैं।

यह घटना शायद सन १९३७ की है, जब पूज्य गुरुदेव की अवस्था ४४ की रही होगी। एक रिटायर्ड दरोगा, राय बरेली के ६८ की अवस्था में एक ब्रह्मचारी के साथ मऊ एक हाफिज के पास गये, कहा, 'भजन बतावो'। उन्होंने कहा 'तुम्हारे सौ जूता मारे जाँय, तुम

रंज न हो, तब भजन सिख सकते।' दोनों लौट पड़े–ब्रह्मचारी कहीं चले गए। दरोगा को एक संन्यासी फिर मिले। वे एक शंकर का मन्दिर बनवा रहे थे, तो कहे "कुछ मदद करो शिवाला शंकर जी का बनवाने में" दरोगा ने घर जा कर २२००) का इन्तजाम कर दिया। जब मन्दिर बन गया तो दरोगा गये और संन्यासी से कहा "अब भजन बताओ" तो संन्यासी ने कहा "हम भजन नहीं जानते हैं।"

तो किसी ने उन्हें पूज्य गुरुदेव के पास गोकुल भवन भेज दिया। उन्होंने गुरुदेव को सब बात बताई, तो गुरुदेव ने कहा "तुमने अच्छा किया, बाबा आदम के शिवाले में मदद किया।" अब यहाँ आये तो दो माह–पूस माघ–इसी बरामदा में उत्तर तरफ रहे, ७ दिन बैठे रहे, न कुछ खाया, न कुछ पिया, न नहाया, न उठे। तब आठवें दिन पूज्य गुरुदेव ने गाय का माठा एक कुल्हड़ में दिया तो उठे स्नान किया, उसे पिया, फिर धीरे धीरे थोड़ा एक पहर खाने लगे।

तब पूज्य गुरुदेव ने कहा "जन्मभूमि पर मसजिद है, शुक्रवार को मुसलमान नेमाज पढ़ने आते हैं, वहाँ जाया करो।" गये तो मुसलमानों ने पूछा "कहाँ रहते हो" तो कहा "गोकुल भवन में" तो सब ने कहा "यहाँ और कोई साधु मुसलमानों को अपने यहाँ नहीं रख सकता है।"

फिर पूज्य गुरुदेव ने उन्हें कलमा बताया, फिर ध्यान बताया फिर भजन की सब विधि बता दी। उनका प्रेम था, उन्होंने सब प्राप्त भी कर लिया था।

मुसलमानों में 'अयोध्या' खुर्द मक्का मानी जाती है।

जाति पाति पूछत नहिं कोई
हरि को भजे सो हरि का होई

प्रश्न

एक दिन, (महीना शायद अगस्त १९७२ था) शाम को आपस में कुछ चर्चा हो रही थी 'गुरु बनने के विषय पर', तो मैंने पूज्य गुरुदेव

से पूछा "गुरुदेव, क्या दादा गुरु के समय में आप भी गुरु दीक्षा देते थे?" तो पूज्य गुरुदेव ने कहा "नहीं, एक बार महाराज (दादा गुरु) ने ४ आदमियों को मंत्र बताने को कहा था, बस केवल उन ४ के अतिरिक्त हमने न किसी को मन्त्र बताया, न गुरु दीक्षा दी।"

फिर कहा "गुरु होना कोई खेल नहीं है"–फकीर कामिल ने कहा है–

गुरू वही जो शिष्य करि हरि सन्मुख करि देय।
करम भरम को नाश करि यहाँ वहाँ यश लेय॥

फिर कहा–जो बात कह के पलटे वह नर नहीं. है धुनिया।
जो जियति नहीं लखावे वह गुरु नहीं, है बनिया॥

शर्त –"शिष्य के लिए सर्वतो भावेन आत्म समर्पण"

फिर कहा, 'गुरु शिष्य दोनों ही होना बड़ा कठिन है– कोटिन में कोई गुरु होता है। कोटिन में कोई शिष्य होता है। आज कल तो तमाम गुरु ही गुरु हैं, कोई काहू का गुरु, कोई काहू का गुरु। करामत शाह ने पूज्य गुरुदेव को ध्यान में लिखाया है,

॥ श्री करामत शाहजी हमीरपुर ॥

दोहा :–सरिता में जिमि मीन हैं, वैसे जग में दीन।
बिन जाने जावें गटकि, रहते सदा मलीन॥१॥
बिन मुरशिद दोज़ख पड़ें, छुटें नहिं गुण तीन।
कहैं करामत शाह भजि, खुदा को लीजै चीन्ह॥२॥

गजल (ख्याल बहार-शिकश्त) :–

क्या सान मान का है चसका मज़हब को मज़हब खाय रहे॥१॥
त्यागे सब बैन बुज़ुर्गों के बस मनमानी खुद गाय रहे॥२॥
दस झूँठी सांची एक कहैं ते जग हुशियार कहाय रहे॥३॥
पढ़ि सुनि के कोरा ज्ञान कथें मुर्शिद बनि पायँ पुजाय रहे॥४॥
धन ठगने हित चेला करते क्या कान में मन्त्र बताय रहे॥५॥

पत्थर की नाव बने बैठे औरों को संग डुबाय रहे ॥६॥
माया के चक्कर में परिके अपना परिवार बढ़ाय रहे ॥७॥
तन छोड़ि पड़ैं जब दोज़ख में सब के सब हाय मचाय रहे ॥८॥
झूठे मुरशिद चेला झूठे कह मारैं जम दुख पाय रहे ॥९॥
अबहीं तो ख्याल नहीं करते धोखे में उमिरि बिताय रहे ॥१०॥
मुरशिद करि जियतै लखि लीजै घट ही में सुर मुनि छाय रहे ॥११॥
अस्नान करो सब तीर्थ भरे अनहद धूनि मधुर सुनाय रहे ॥१२॥
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि हो सन्मुख सिय राम दिखाय रहे ॥१३॥
सब में हैं रमें नहिं भेद कोई सब को जल अन्न कराय रहे ॥१४॥
नागिन षट् चक्कर ठीक होयँ सातौं क्या कमल फुलाय रहे ॥१५॥
अजपा कि जाप को जिन जाना सुखमन पर मौज उड़ाय रहे ॥१६॥
नहिं जीभ हिलै कर माल नहीं बस शब्द पै सुरति लाय रहे ॥१७॥
जब नाम खुला तब क्या कहना अपनै अपने को ध्याय रहे ॥१८॥
तुमको अब कछु नहिं है करना आपै को आप रिझाय रहे ॥१९॥
तन छोड़ि वतन को हो रुखसत जहं अगणित संत दिखाय रहे ॥२०॥
सब श्याम रूप औ चार भुजा तन भूषन बसन सुहाय रहे ॥२१॥
अनइच्छित बोल नहीं सकते तहं यानन बैठक पाय रहे ॥२२॥
छबि यानन की को बरनि सकै क्या लहरि-लहरि लहराय रहे ॥२३॥
पृथ्वी मणियों की भाँति भाँति क्या वृक्ष विचित्र दिखाय रहे ॥२४॥
हैं रंग रंग के फूल खिले तहँ मन्द सुगन्धि उड़ाय रहे ॥२५॥
अन्तरगत प्रभु के महरानी लखि कोटिन मदन लजाय रहे ॥२६॥
ऊँचा सिंहासन है सबसे पितु मातु उसी पर छाय रहे ॥२७॥
कहते हैं करामत शाह सुनो सब के हित हम समुझाय रहे ॥२८॥

शेर :—

अभिमान जिस बशर के तन से हट नहीं सकता ।
वह राम ब्रह्म के करीब अंट नहीं सकता ॥१॥
जैसे कि शालिगराम हों पय फट नहीं सकता ।
वैसे ही सच्चा भक्त कभी हट नहीं सकता ॥२॥

कहता है करामत शाह करामत नाम की।
बेकार सिद्धियाँ हैं और कौन काम की ॥३॥
देंगी फंसाय जग में जाने न दें उधर।
कहते करामत शाह बस आशा लगी इधर ॥४॥

फिर कहा, "हमको गुरु बनने का कोई शौक नहीं था, बड़ी जिम्मेदारी का काम होता है, पर महाराज (दादा गुरु) का हुक्म था, तो उनकी आज्ञा शिरोधार्य करके गुरु दीक्षा देना आरम्भ किया।"

पूज्य गुरुदेव उन पाँच महावाक्यों का, जो दादा गुरु ने आप से कहे थे, आज तक पालन कर रहे हैं। संक्षेप में वे इस प्रकार हैं–

(१) अयोध्या जी में ही रह रहे हैं और कहते हैं रहेंगे।

(२) कोई जमीन नहीं लेते। मेरे सामने ही २-३ व्यक्ति आये, कहे, महाराज हमारे कोई नहीं है, हम अपनी जमीन आपको लिख दें, तो कह देते हैं, "हम जमीन नहीं लेते, तुम किसी और को दे दो या भरत कुंड पर भरत जी के मन्दिर में लगा दो। हमारे गुरु हम से कह गए थे, हम न लेंगे।"

(३) पहिले तो पैसा छूते ही नहीं, और जो चरणों पर रख ही जाता है तो खूँट में बाँध लेंगे या मास्टर को दे देंगे, शाम तक खूंट खाली हो जाता है, किसी गरीब को दे दें, किसी काम में लगा दें–फिर खाली के खाली।

(४) कोई आपको चाहे कुछ कहे, आपको न तारीफ व्यापती है और न कोई किसी की अनुचित बात। आप एक रस प्रसन्न चित रहते हैं। आपकी प्रसन्नता का वार पार उस दिन देखने में आता है, जब कोई आ कर भजन की बात पूछता है।

(५) आपका किसी से बैर नहीं है।

मुरशिद की पहिचान

पाठकों के मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि "करामत शाह जी ने अपने पद में 'मुरशिद बन पाँय पुजाय रहे' जो कहा है, तो यह कैसे

जाना जाय कि अमुक मुरशिद योग्य है ?' इस प्रकार का प्रश्न मेरे मन में भी उठा था, जब मैं जनवरी १९७१ में अवकाश प्राप्त करने के बाद स्थायी रूप से पूज्य गुरुदेव के चरणों में रहने लगा। रामायण के प्रेमी तो संत महापुरुष की परिभाषा जानते ही होंगे, क्योंकि तुलसीदास जी ने लिखी है। मुझको इसका ज्ञान साफ साफ तब हुआ, जब अन्तर्यामी पूज्य गुरुदेव ने मेरे मन की बात जान कर मुझसे कहा "तुमने पलटू साहब की बानी पढ़ी है ?" हमने कहा "जी नहीं", तो आपने कहा "आज शाम को एक पुस्तक पलटू साहब की बानी की खरीद लाना।" मैं और मास्टर रोज शाम को बाजार जाते हैं, पुस्तक खरीद लाए। तो देखा कि आपने (पलटू साहब ने) कुंडलियां नम्बर २२ से ३१ तक में "संत" की परिभाषा लिखी हैं। इन कुंडलियों की पहिली लाइन यहाँ लिख देते हैं। विस्तार से जानने के जिज्ञासु पाठक कृपया पुस्तक पढ़ें। इन लाइनों से ही आपको ज्ञान हो जायगा महापुरुष, रोशन जमीर, औलिया, संत को पहिचानने का।

	कुंडली नं०
१. बड़ा होय तेहि पूजिए संतन किया विचार।	२२
२. सीतल चन्दन चन्द्रमा तैसे सीतल संत।	२३
३. संत बराबर कोमल दूसर को चित नाहिं।	२४
४. राम समीपी संत हैं वे जो करैं सो होय।	२५
५. संत सासना सहत हैं जैसे सहत कपास।	२६
६. संतन के सिर ताज है सोई संत होई जाय।	२७
७. तीन लोक से जुदा है उन संतन की चाल।	२८
८. फाका जिकर किनात ये तीनों बात जगीर।	२९
९. कबही फाका फकर है कबही लाख करोर।	३०
१०. साध महातम बड़ा है जैसो हरि यस होय।	३१

मैं डंके की चोट पर घोषणा करता हूँ कि इंच-इंच पाई-पाई जो पलटू साहब ने लिखा है पूज्य गुरुदेव पर घटित होता है, जिसका जी चाहे, आये और देख ले। तब क्यों न मैं, आप सब, पूज्य गुरुदेव को

महापुरुष, संत, औलिया, रोशन जमीर समझे, और यदि मंजूर आलम साहब कानपुरी आपको (गुरुदेव को) संतों के गवर्नर कहते हैं, तो क्या गलत करते हैं। ऐसे संतजन मिलते उनको ही हैं, जो तुलसीदास जी की कही परिभाषा में आते हों–

पुण्य पुंज बिन मिलैं न संता।

पाठकों, आपके पुण्यों का संग्रह होगा तो ऐसे संत जन मिलेंगे आपको भी।

मन

मैंने पृष्ठ ६१ पर लिखा है–गुरु जी का उपदेश–"जो भजन मन से किया जाता है तो शब्द देवता के कान में पहुँचते हैं।" तो आइए पहले इसी पर देखें पूज्य गुरुदेव के उपदेश। आप ही के शब्दों में :–

मन की बदमाशी पहले रोको, वह पानी से अधिक शर्बत पीता है, शरबत से अधिक दूध पीता है, रोटी से अधिक पूड़ी खाता है, अच्छे काम में नहीं लगता, खराब काम में खूब लगता है।

सादा भोजन, सादे कपड़े, अपनी सच्ची कमाई का अन्न खाओ, सबके सुख दुख में शरीक रहो, बेईमानी का अन्न न खाओ, जीवों पर दया करो, तुम तकलीफ सह लो, दूसरों को आराम पहुँचाओ, कोई बेखता कसूर गाली दे तुम रंज न हो, जो कोई भूखा आवे उसका यथाशक्ति सत्कार करो, दरवाजे पर भिक्षुक आवे उसे एक मुट्ठी भीख दो, खाली न लौट जाय। यह बातें बिना किए गति नहीं होती, न मन सुधर सकता है।

इसी विषय पर एक बार १०-२-७५ को शाम ४ बजे पूज्य गुरुदेव ने कहा "गीता को कंठ किए एक पंडित उन्नाव में मिले थे। मन पर बातचीत हो रही थी कि बिना मन काबू किए शुभ काम नहीं होता। हमसे कहा 'भगवान ने गीता में कहा है कि 'मन तो जड़ है, मन कोई चीज नहीं।' हमने कहा 'भगवान सब में हैं और सब से न्यारे हैं, वे सर्व शक्तिमान हैं, तुम गीता कंठ किये हो–जब कचहरी में रुपया

अधिक मिलता है तो तुम्हारा मन खुश रहता होगा और जिस दिन कम मिलता होगा उस दिन उदास, यह बात है कि नहीं, तो कहे–'हाँ'। तब हम कहा जो मन कंठ होता तो तुम्हारे पट खुल जाते। बन्ध मोक्ष का कारण मन ही है।

मन इस शरीर को चलाने वाला ड्राइवर है, अच्छी जगह ले जाये तो जीव की अच्छी गति हो, खराब जगह ले जाये तो खराब गति हो।

तो तुम भगवान की बराबरी की बात बेकार करते हो। यह मत्थे का ज्ञान झूठा है, इसमें प्राण नहीं है, इसे मुसलमानों ने भी आडम्बर का ज्ञान कहा है।

शुकदेव जी ने कहा है कि जहरीले जानवर मार देने में कोई दोष नहीं है। ऋषियों ने कहा है कि जो चोरी करते हैं, जो डाका डालते हैं, जो घर फूँकते है, जो बिरानी औरतों से पाप करते हैं, जो लड़कियों को बेचते हैं, उनको मार देने में कोई दोष नहीं है।

सच्ची कमाई

पूज्य गुरुदेव का उपदेश होता है "सच्ची कमाई का अन्न खावो।" एक दिन मास्टर पद पढ़ रहे थे, एक पद में आया "शुद्ध धान्य सुखदाय" तो मेरे मन में आया कि इसकी परिभाषा क्या है, तो स्लेट पर मैंने प्रश्न किया :–

प्रश्न–गुरुदेव, शुद्ध धान्य की क्या परिभाषा है ?

उत्तर–पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा–यह बात १७-५-७५ शाम ६ बजे की है–"सच्ची कमाई का अन्न व सात्विक भोजन दोनों होना चाहिये, तब साधना में बाधा नहीं होती है।"

प्रश्न–सच्ची कमाई की क्या परिभाषा है ?

उत्तर–कार्यकर्ता ५ मिनट पहिले अपनी नौकरी पर जाए, ५ मिनट बाद वापस आवे, अपना काम ठीक से करे, जो कोई खुशी से कुछ दे,

उसका काम हो जावे, उसको ले ले, उसकी आत्मा खुश हो जायगी, वह दूध भिक्षा है। आगे ऋषि दसम अंश धर्म कराते थे। जो १००) पाता हो वह महीने में १०) गरीबों को बाँट दें। जिसके खेती हो वह दस अंश अन्न भिक्षुकों के लिए अलग रख दे, उसमें से दिया करे, कोई भूखा आ जाय उसे भोजन दे। सबके सुख दुख में शरीक रहे। बेईमान का अन्न न खाये, सादा भोजन, सादे कपड़े, किसी को कटु बचन न कहे।

प्रश्न–दूध भिक्षा क्या होती है?

उत्तर–भिक्षा दो प्रकार की कही गई है – (१) दूध भिक्षा (२) रक्त भिक्षा।

दूध भिक्षा, खुशी से जो दे–रक्त भिक्षा, धोखा देकर लेना, ले कर काम न करना और झगड़ा भी करना।

माया और मन की वासनायें

मन की वासनाओं पर और माया पर पूज्य गुरुदेव ने २८-९-७२ को लिखाया था, "बिना कोई कारण के काम रुकता नहीं, बिना कोई कारण के काम होता नहीं। माया माता हर समय चोरों को लिए छिद्र देखा करती है, बात करने में, खाने-पीने में, चलते बैठते, खड़े होती जहाँ कोई बात उनके ठगने की मन में आई, बस साफ कर दिया, बिना, ऐसा हुए हानि हो नहीं सकती।

मन की वासनायें भी तो बहुत हैं, उनसे बच वही सकता है जो फजल की बात पर चल जाये :–

"शांति की समसेर के संग दीनता की ढाल हो,
सारा जहाँ हो वे दखल तेरा न बांका बाल हो।"

मन की वासनाओं को कोई याद रख पाता नहीं है, माया भुला देती है, इसलिए सारा सुकृत लूटा करती है, पूँजी बढ़ने नहीं देती है। यह तन इलाका है, मन कोरट करा दिया है।

मन चोरों का संगी है, खुफिया पुलिस है, तुम्हारे संग हो जाय

तो तुमको तार दे और वह भी तर जाये।

हर एक योनि में वही मन रहता है।

माया की चाल

माया की चाल के विषय पर २१-९-७२ को रामायणी राम दास को संबोधन कर के स्लेट पर पूज्य गुरुदेव ने इस प्रकार उपदेश दिया–

माया त्रिभुवनपति की छाया है। राम नाम में अपार शक्ति है। शान्ति की तलवार व दीनता की ढाल से यह चुप होती है। अपने पाँचों पुरखों को भी चुप कर देती है। उस रीति से चलना सीखना चाहिए।

मन जीव का वजीर है। जीव बादशाह है। वजीर को उसने सब सौंप दिया है, उससे कभी हिसाब नहीं लेता, वह सब दखल बैठा लिया है, माया और पाँचों चोरों का संगी बन बैठा है, जीव को डाटता है, अकेला जीव कुछ कर नहीं पाता। अगर राम नाम में जुट जाय तो मन को नाम खींच कर जीव का संगी बना देता है, तो सब काम पूरा हो जाय।

मनुष्य का तन, समय, स्वांस नित प्रलय में बीता जा रहा है। अब चेत कर भजन में लगाओ, सुखी हो जाओ।

कटु बचन न कहो न सुनो

पूज्य गुरुदेव जोर देकर समझाते हैं कि कटु बचन किसी से बोलना न चाहिए। २१-१२-७२ को आपने लिखाया–खराब शब्दों के रूप काले होते हैं और नंगे होते हैं, जहां तुम्हारे मुँह से निकले कि रोकर कहते हैं "तुमने अनमोल नर तन पा कर अपने मुँह से हमें ऐसा बनाकर निकाला" शाप देकर अन्तर्धान हो जाते हैं। शुद्ध शब्द सिंगार किये बड़े सुन्दर होते हैं। जहाँ मुँह से निकले तो हँसते हुए आशीर्वाद दे कर अन्तर्धान होते हैं।

यह लिखाया गया है, अशुद्ध शब्द जो साधक सुनता है वह उसके अन्दर प्रवेश हो जाते हैं और उसकी बुद्धि उलट देते हैं, दिमाग खराब कर देते हैं, क्योंकि वह साधक कच्चा है। अगर साधक सिद्ध हो तो उसके अन्दर जा नहीं सकते।

शुद्ध शब्द सुनने से साधक के हृदय में बल बढ़ता है। वे सब बड़े पवित्र हैं, अन्दर पहुँच कर अपना प्रभाव जमा देते हैं, नीचे गिरने नहीं देते। इस पर बहुत लिखाया गया है, जो इतने पर अमल करे तो सुधर जाये।

जहाँ अशुद्ध शब्द कोई कहता हो वहाँ से साधक उठ जाय, नहीं तो गिर जायगा। अभी उसके आँखी कान नहीं खुले हैं। वह दूसरों से सुनी बात कहेगा, जिस की बात होगी वह कसूर नहीं किया है, उसे दुख होगा तो कहने वाले पर असर आवेगा, बस वह गिर जायगा।

शब्दों पर

फिर २८-१२-७४ की सुबह पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा- आज रात लगभग १२-१ बजे अजर अमर संत रोजा शाह आये और कहे–

जिस देवी देवता का तुम जप, पाठ, पूजन कीर्तन मन लगा कर करोगे तो सब शब्द उसके पास पहुँच जावेंगे, तुम्हारा काम हो जायगा। सारा खेल मन का है–मन के जरिये से गति होती है, मन के जरिये से कुगति होती है। मनुष्य वही है जो मन को बस में कर ले।

जो शब्द भगवान की प्राप्ति के लिए मुँह से निकलते हैं, साधक को बताए जाते हैं, वह शब्द भगवान के लेखपाल चित्रगुप्त जी लिख लेते हैं और मन में जो विचार उठता है वह भी लिख लेते हैं, वह पहिले आकाश मंडल में रहते हैं।

जो पर उपकार के शब्द हैं वह दूसरे मंडल में रहते हैं।

जो तमोगुणी शब्द है वह तीसरे मंडल में रहते हैं।

सतोगुणी शब्द शुकुल वस्त्र धारण किए हैं, रजोगुणी (पर-

उपकार वाले, शब्द पीले, हरे, लाल वस्त्र धारण किये हैं और तमोगुणी शब्द काले रंग के नंगे रहते हैं।

सतोगुणी–सतयुग के हैं
रजोगुणी–त्रेता, द्वापर के हैं
तमोगुणी–कलियुग के हैं
हर एक युग में चारों की शाखा रहती है
जैसे पांचों तत्व में साझा रहता है।

सतगुण से मुक्ति, भक्ति, ज्ञान प्राप्त होता है। रजोगुण (पर-उपकार करके) चारों बैकुण्ठ ले जाता है। तमोगुण नर्क ले जाता है।

हर एक विद्या के शब्द जिस तरह निकलते हैं, सब वहाँ मौजूद रहते हैं, उनसे पूछा जाता है, वह सब बताते हैं। इसी जुबान से सुगति होती है और इसी जुबान से कुगति होती है। उसी रीति से कर्मानुसार दुख सुख भोगना पड़ता है। इससे मनुष्य का अर्थ यह है कि मन को रोके, और तब मन को रोकने से जुबान रुक जायगी–खराब शब्द मुँह से न निकलेंगे।

पाप का रूप काला, नंगा, बड़े बड़े दांत, भयानक रूप दाढ़ी केश, बड़े बड़े चार भुजा, चारों में दुधारा अस्त्र धारण किए है। जितने खराब शब्द हैं उनका परिवार है। यह नर्क को ले जाता है।

जो जीव सतोगुणी हैं उनके लिए सतयुग है, जो रजोगुणी हैं, उनके लिए त्रेता, द्वापर हैं, जो तमोगुणी हैं उनके लिए घोर नर्क है।

श्रद्धा विश्वास से भजन करने से मन स्वतः स्वच्छ हो जाता है।

पर उपकार

पूज्य गुरुदेव ने बताया "दीन दुखियों पर दया करने से भगवान

बहुत खुश होकर अपना लेते हैं।" भागवत में व्यास भगवान ने कहा है "पर उपकार से बढ़ कर कोई भजन नहीं है। जिसके साथ भलाई करोगे, उसकी आत्मा खुश होगी–इसी तरह तप धन इकट्ठा होते-होते सब कुछ प्राप्त हो जायगा।"

पहले ऋषि सेवा धर्म सिखाते थे उसी से पट खुल जाते थे। फिर मंत्र बताते थे, शिष्य के पूछने पर इशारा कर देते थे, उसे पूरा पूरा पता चल जाता था, जब पढ़ाते थे, तब शब्द शब्द के रूप प्रकट हो जाते थे, सब लीला दरसने लगती थी।

पहले पढ़ाने से सब दिमाग में भर जाता है, तो द्वैत नहीं छूटता। विद्या का मद दीनता आने नहीं देता, उसमें अपनी जीत चाहता है, अविद्या घुसी है।

हमें (पूज्य गुरुदेव को) किसी ने लिखाया है।

"धन मद बल मद रूप मद विद्या मद ये चारि।
भव सागर के वारि में पकड़ि देत हैं डारि।।"

आँखी कान

पृष्ठ ७६ पर अशुद्ध शब्दों का प्रभाव समझाते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा "साधक वहाँ से उठ जाय उसके आँखी कान नहीं खुले हैं" तो प्रश्न उठा 'आँखी कान खुले की क्या परिभाषा है?' तो आपने (गुरुदेव) ने बताया 'महापुरुषों की भाषा में आँखी कान न खुलना या आँख के अन्धे कान के बहरे उसे कहते हैं जिसे आँख से न भगवान दिखाई दे न चलता फिरता महापुरुष, संत, रोशन जमीर, औलिया। कान का बहरा उसे कहते हैं जिसे राम नाम न सुनाई देता हो।" राम दास नागा ने कहा है :–

जब तक नैन श्रौन नहिं खुलते, तब तक किसी को मत उपदेश।
नागा राम दास कहें भक्तों मिले न अपना देश।।
शंका लघु शंका भई राम नाम को जान।
राम दास नागा कहैं सुमिरन सब सुख खान।।

आँखी कान गये खुलि भक्तों, तन मन भरा उमंग ।
अमृत छकौ बजें घट बाजा सुर मुनि रहते संग ॥

झूठ

पूज्य गुरुदेव ने एक दिन बताया झूठ का बाप पाप, पाप का बाप लोभ, यह काम, क्रोध, मद, मोह का बाप है। इन सब का बाप है आलस्य। यह भगवान के भजन और शुभ काम में बाधा डालता है। मन इनका संगी है। जमुहाई, नींद, नेत्रों में कड़ुवाहट और रह रह कर झिटका लगाना इसका काम है। शरीर को बेचैन कर देना, व्याकुल हो जाना, घबराहट पैदा करना इसका काम है।

आलस्य पर लात मार कर कितने भजन कर अजर अमर हो गए। खान, पान, कपड़े की परवाह न की। प्राण का लोभ छोड़ दिया। निर्भय हो गए। आपको मिटा दिए। दीनता की ढाल, शान्ति की तलवार भगवान ने दे दी। द्वैत भाग गया। प्रेम आकर लिपट गया। लाला राम सहाय ने कहा है :—

वही वही सब वही वही वह वार पार भरपूर रहा।
सरमद शम्स तबरेज सदा इस नूर में चकनाचूर रहा॥
गुरु सैन सहूर से सूझ पड़ा बे बूझ बहुत दिन दूर रहा।
पीवो सहाय सब मस्तों से यह नगद नशा मंजूर रहा।

दो शब्दों के आठ बनाये गए हैं, अर्थ एक ही है।

मान अपमान हर्ष औ शोका।
सुख दुख हानि लाभ दुई ढोका॥१॥
समय पाय के मुँदे उघरैं।
जब तक प्राण न तन से निकरैं॥२॥
जो कोई भजन की बिधि को जानै।
सोई इनको सम कर मानै॥३॥

श्री रोजा शाह जी ने भी आप (गुरुदेव) से कहा था "झुठ का बाप पाप है, पाप का बाप लोभ है, लोभ का बाप आलस्य है—यह दोनों

तरफ की किसनई (खेती) नास करता है–यह भगवान के यहां से माफ नहीं है।

भाव पर

पूज्य गुरुदेव बल देते हैं अपना अपना भाव बनाने पर। पाठक, हम आप सब इस बात से सहमत होंगे कि संसार में जितने भी काम हैं और जितनी भी हमारी आपकी नित्य की आवश्यकताओं की चीजें हैं, सब का भाव होता है, भाव जानना होता है–बेभाव एक ही चीज है, जो कही जाती है जब भी कोई बुरा काम करता है, वह "बेभाव के जूते चप्पल।"

पूज्य गुरुदेव कहते हैं "भगवान भाव के भूखे हैं। अपना भाव विशाल बनाओ, जीव की गति भाव से होती है, भगवान की लीला भगवान जानै, जितना जनावें उतने में विश्वास कर ले, बस पार हो जाय। जब उधर लगो तो सब देवी देवता बड़ी दया करते हैं इन्हें तो ऊँचा उठाना है।

पाँच ब्रह्म सिर में हैं, सोऽहं, ओंकार, ररंकार श्री मन्नारायण और महाविष्णु। इनके साथ पाँच देवी हैं, वे समय-समय पर जगा देती हैं। अपना सूक्ष्म शरीर जैसे लोहा तपाया लाल ५ वर्ष का नंगा, जै बजे कहो तो जगा देता है।"

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि आपने इलाही काका से पूछा था– "भगवान की लीला अपरम्पार है, इस शरीर में सब लोक बने हैं, सब देवी देवता, मनुष्य, पर्वत, सरिता, सागर और सब जानवर देखने में आते हैं– तो कहाँ।" काका ने कहा था "भगवान की लीला अकथ, अलेख, अकह, अपार है, जितने में सुई की नोक खड़ी होती है उतना कोई नहीं जान सकता, जिनके रोम रोम में ब्रह्माण्ड हैं स्वास से बाहर हो कर फिर अन्दर समा जाते हैं, उनकी लीला कौन जान सकता है, जितना देखे सुने उतमें में विश्वास कर ले, बस पार हो जाय।" फिर काका ने कहा "भगवान तो प्रेम के बन्धन में हैं, अपना भाव विशाल

बनाने वाले कितने अजर-अमर हो गये, पट खुल गये।

भजन के दो दल हैं परमार्थ और परस्वार्थ। पूजन, पाठ जप, कथा कहना या सुनना, कीर्तन करना या सुनना परमार्थ है। जीवों पर दया करना परस्वार्थ है। साधक को दोनों दल ले कर चलना चाहिए।

सफाई शाह और खैरियत अली शाह, अजर अमर संतों ने पूज्य गुरुदेव को भाव पर यह पद लिखाये थे।

श्री सफाई शाह का पद

भाव सब में मुख्य है जो भाव की गहि ले लता।
भाव से सुमिरन करै प्रभु गोद में नित खेलता।
परकाश धुनि औ ध्यान लय में भाव ही लै पेलता।
भाव ही विधि गति को छेकै फिर न भव में ठेलता।
भाव सतगुरु करके करिये भाव तन मन मेलता।
कहता सफाई शाह मानुष भाव बिन दुख झेलता।

श्री खैरियत अली शाह का पद

भाव से भगवान मिलते, भाव से मुनि देवता।
भाव सब में है शिरोमणि, भाव भव में खेवता।
भाव से परकाश लय हो, भाव नामक धेवता।
भाव से ही ध्यान होवै, भाव बिधि गति छेवता।
भाव से अनहद का सुख लो, भाव अमृत पेवता।
भाव सतगुरु करि के जानो भाव भावक लेवता।

मूर्ति पूजा पर

एक दिन (४-१०-७२) चर्चा हो रही थी मूर्ति-पूजन पर, तो पूज्य गुरुदेव ने कहा "कितने मूर्ती का पूजन करते हैं, कितने खंडन करते हैं। कितने पूज कर अजर अमर हो गए। सब भजन का आंगोपांग जान गए। जब जर्रा जर्रा में भगवान हैं, तब मूर्ती क्या सर्वत्र से बाहर

है। बेकार में लड़ाई झगड़ा करते हैं–बेजान की मूर्ति पूजन से क्या फायदा ?"

समय स्वाँसा शरीर भगवान का है

अपनी मौज में पूज्य गुरुदेव ने १३-५-७२ को स्लेट पर लिखा "समय, स्वाँसा, शरीर भगवान का है। हम अपना मान बैठे हैं। वह शरीर परमार्थ परस्वार्थ के लिए भगवान ने दिया है।

अहंकार (रावण) कपट (मारीच) बाधा डालते हैं। आयु बीती जा रही है। अपने मरने पर नर्क स्वर्ग देखना होगा। खराब ग्रह भी बुद्धि पर कब्जा किए हैं। मनुष्य क्या करे–इसी चक्कर में मौत और भगवान को भूला है। मान, अपमान संग लगा है। संसार से पार होना बहुत कठिन है।

भगवान का नाम दीन दयालु है। जब हम दीन हों तब वे दयालु हों। वह भाव ही नहीं आते। आगे संतों पर बड़ी कसनी पड़ी है। निन्दक लोग बहुत प्रचार किए, पर वे क्रोध न किए, न कुछ किए, बच कर निकल गए।"

महाराज (दादा गुरु) ने बताया था "बोलने की जरूरत नहीं है, न झगड़े की जरूरत है, दीनता और शान्ति की जरूरत है। न मान की जरूरत है, न अपमान की जरूरत है, न क्रोध की जरूरत है। तप, भजन आपै आप हो जाता है, न पूछने की है न जपने की है। तुम साधु भेष में हो तो इस रीति से मन खुद साधु हो जाता है। तन साधु बनाने से कुछ नही होता। यही ओ-ना-मा-सी आगे ऋषि मुनी पढ़ाते थे और सेवा धर्म लेते थे। बस आँखी कान खुल जाते ये।"

साधु कौन

७-६-७५ को बलिया जिला से एक साधु आये। उनकी अवस्था लगभग ६५ की होगी। पूज्य गुरुदेव ने उनको स्लेट पर लिख कर दिया था।

"साधु डाकू चोर सब को मानते हैं। कोई उनको गाली दे, मारे, वे चुप रहते हैं। मन साधु हो जाय, तन साधु होने से गति नहीं होती है, घूर हो जाना पड़ता है, तब साधु समझा जाता है। साधू होना बड़ा कठिन है, लाखों में कोई एक साधु होता है। आगे साधुन की परीक्षा होती थी। मार कर सड़क पर डार दिये जाते थे, जब होश होता था तब कहते थे 'हमें बीच सड़क से अलग एक बगल कर दो, कैसे बैलगाड़ी निकलेगी, कैसे पब्लिक निकलेगी, हम उठ नहीं सकते।' जो कोई पूछे तो कहते थे इन मारने वाले लोगों से भगवान हमारी परीक्षा करवाते हैं, मारने वालों के आँखी कान नहीं खुले हैं, उनको दया नहीं है, वे क्या जाने कौन साधु है।"

भला मानुष बुरा मानुष

१४-४-७५ को पूज्य गुरुदेव ने बताया था "भला मानुष अच्छे नक्षत्र में पैदा होता है, तुम चाहे कितनी बुराई उसके साथ करो, वह भलाई ही करेगा। बुरा मानुष बुरे नक्षत्र में पैदा होता है, तुम उसके साथ भलाई करो, वह तुम्हारे साथ बुराई ही करेगा। यह सब बातें ज्योतिष की हैं।

भला मानुष जिसके दरवाजे जाता था और एक गिलास पानी पीता था तो जीवन भर उसका उपकार मानता था। उसके संकट में जहाँ तक उससे बनता था शरीक रहता था। उसकी अन्त में ऊँची गति होती थी। यह भी भजन की एक शाखा है।

बुरा मानुष वह है कि जिस पतरी में खाता है उसी में छेद करता है, जिस डाल पर बैठता है, उसी को काटता है, जो उसकी खातिर करता है, उसके साथ वह घात करता है। उसे घोर नर्क होता है।

आगे जो लोग यात्रा को जाते थे, उनको लोग गरीब बन कर ठगते थे–हमें आटा, दाल, चावल थोड़ा मिल जाता, हम कई दिन के भूखे हैं–तो लोग दयावश देते थे। सामान के साथ नमक दें तो कहते

नमक हमारे पास है, नहीं लेते। जब नमक न होता तो लेते, पर फिर उसे न ठगते थे, यह पुरानी बात है, उनका ठगना भगवान माफ कर देते हैं। अब तो ऐसे जीव बीज मात्र रह गए हैं।"

जो दूसरों की हानि करते हैं वे भगवान और मौत को भूले हुए हैं। कल्पों नर्क में भोगना पड़ता है।

बदला चुकाना पड़ता है

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि बदला "चुकाना पड़ता है। राम जी ने त्रेतायुग में बाण से बालि को मारा, वह द्वापर में भील भया, कृष्ण भगवान को एक बाण से मारा, जब पास गया तो भगवान ने कहा-यह बदला है, हमने तुमको एक बाण से मारा था रामा अवतार में, बस शरीर छोड़ दिया। भीष्म जी १०१ जन्म में एक साँप को लाठी से मारा, वह अधमरा हो गया, उसे उठा कर बबूल के काँटों पर फेंक दिया, उसके काँटे शरीर में बेधि गये, वह ५२ दिन में फटकि फटकि के मरा, वही सजा भीष्म जी को मिली कुरुक्षेत्र रणभूमि में, बाणों से बेधे पड़े रहे, ५२ दिन बाद शरीर छूटा।

राजा चित्रकेतु के भंडार में एक कंडे में ४०० चींटी के अंडे जले। वही ४०० रानी हुईं, राजा को ब्याही गईं। राजा बीमार भए, तो सब ने मिल कर राजा को जहर दे कर मारा। यह कर्मभूमि है, जो बोवोगे वह पावोगे।"

साइत

जब कोई साइत पूँछता है तो पूज्य गुरुदेव कहते हैं-

"जेहि बिरिया जेहि बैसवा जेहि बिरिया जेहि बैस।
तुलसी मन धीरज धरो हुई है ता दिन तैस॥"

बोलो—"सियावर रामचन्द्र की जै"

यही साइत हम मानते हैं और जानते हैं, बेकार चिन्ता करना, सोच करना, दिमाग खराब करना। फिर कहते हैं-

दोहा

ह्वै है वही जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा ॥

बेकार है अपनी अपनी हुशियारी छाँटना। कोई कहता है यह अर्थ सही है, कोई कहता है यह सही है। जब सही अर्थ जान जायगा, तो उससे अनर्थ नहीं होगा, वही अर्थ समझो सही है।

कटु बचन तो सह नहीं पाते, दूसरों को उपदेश करते हैं, अपनी तारीफ सुन कर मस्त हो जाते हैं। यह द्वैत महा विकराल है, गति की मति मार देता है। यह पाप का रूप है। सैकड़ों किसिम के पाप हैं। लिखने में तकलीफ होती है, इससे नहीं लिखते। जितनी खोपड़ी है, सबके स्वभाव न्यारे न्यारे हैं। यह पैदाइशी है, छूटते नहीं हैं। जब तन मन से लग जाय प्राणों का लोभ छोड़ कर, तब भगवान, पलकदरियाई हैं, स्वभाव बदल देते हैं।

सूक्ष्म शरीर

इस शरीर से "सूक्ष्म शरीर" निकालने व जीव का इस शरीर में स्थान को पूछने पर पूज्य गुरुदेव ने बताया कि जब अभ्यास हो जाता है तब बोध होता है। सब वस्तु नाम की धुनी से अलग अलग फरियाने लगती हैं। जो पुण्य क्षीण हो कर तारा ऐसा छूटता है, वह जमीन पर गिर कर गायब हो जाता है। वह अन्न या घास या फल में प्रवेश होता है। आदमी या पशु खाता है। वह जीव बहुत बारीक अणु है, जो कपड़े से निकल जाता है। खाने से जा कर सर में पहुँचता है। जब नर मादी का प्रसंग होता है, तो धातु पेट से गर्भाशय में आ जाता है। पहले छोटा गोला बनता है, फिर बढ़ता है।

समाधि

समाधियों पर पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि ये सात प्रकार की होती हैं— (१) लय समाधि, (२) शून्य समाधि, (३) प्रेम समाधि,

(४) सहज समाधि, (५) जड़ समाधि, (६) भय समाधि और (७) चोट समाधि।

पहले चार से गति होती है। पाँचवीं से आयु बढ़ती है, अजर अमर हो जाता है, पर भगवान की प्राप्ति नहीं होती है, तमाम सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं। छठी व सातवीं से शरीर छूटने पर प्रेत योनि या नर्क होता है। यह ऋषियों के वाक्य हैं।

नाम

नाम से क्या क्या जाना जाता है, सो पूज्य गुरुदेव ने इस प्रकार बताया–नाम से हिय की आँखें खुलती हैं, रूप की प्राप्ति, धुनि की, लय की, शून्य की, चारों ध्यान की, चारों अजपा की, पिपिलका मार्ग की, मीन मार्ग की, विहंग मार्ग की, सुषमना की, अनहद बाजा की, अमृत पान की, कुण्डलिनी की, सब लोकन की, छइऊ चक्कर की, सातो कमलन की, दोनों स्वरन से तरह तरह की महकन की, देवतन के घर खान पान की, सब लोकों से तारों की, सारी सृष्टि अपने शरीर में देखने की, सारी सृष्टि में अपने शरीर को देखने की, अन्तर्धान होना, काया प्रवेश होना, शरीर के चौदह भाग अलग अलग करना, फिर एक में मिल जाना, सब रूप धारण करना, फिर अपने रूप में आ जाना।

तमाम हिन्दू संत और भाई नाम से अजर अमर हैं। जो जानते हैं वे मानेंगे, कहाँ तक लिखावें।

जहाँ पर बहुत लोग बैठे हैं उस पर दरी या कोई कपड़ा बिछा है, उस पर अपना बिछा कर बैठना चाहिए, पापी धर्मात्मा सब बैठे हैं, उसका असर तुम पर आता है। अपना वस्त्र बिछाने से तुम पर पापी का असर न आवेगा।

साधु हो या गिरही, जिसके मन में द्वैत घुसा है, उसकी गति नहीं होती हैं। उसमें दया धर्म नहीं है, प्रेत योनि या नर्क

होता है। इसी से कहा गया है, "दया धर्म नहीं छोड़िए, जब तक घट में प्राण।"

खान पान और प्राण का लोभ लगा है, इससे नीचे गिर जाते हैं। कर्म की गति कर्म करने से ही मिटती है। कौन कर्म, निष्कपट हो कर भगवान में लग जाय तब मिट जाय। जितने भक्त हुए हैं, वे करनी करके हुए हैं। मनुष्य का अनमोल तन वृथा न जाय। कमर कस कर पर-उपकार में लग जाय। तुम जहाँ से आये हो वहाँ कैसे पहुँचोगे बिना शुभ कर्म किए। पढ़ते हो सुनते हो और लिखते हो, दूसरों को समझाते हो। वहाँ तिल तिल का हिसाब लिखा जाता है, फिर अपने मन का करते हो, जो तुम्हारे ऊपर मालिक है उससे नहीं डरते हो, मौत को भूले हो।

यह पूज्य गुरुदेव को चालीदास मेहतर ने लिखाया था, जब पूज्य गुरुदेव इनके दर्शन को इनकी समाधि, मुकाम कनवाखेरा, पोस्ट व जिला सीतापुर, पर कार्तिक बदी ३-४ संवत २०२९ को सुबह साढ़े नौ बजे गये थे, मोटर से।

चारों ध्यान

श्री गुरु नानक देव जी ने पूज्य गुरुदेव को सूक्ष्म से स्थूल शरीर धारण करके २८ की उमर में रामघाट पर वट वृक्ष के नीचे प्रकट हो कर चारों ध्यान का उपदेश किया था। चाली जी का चरित्र व नानकदेव जी की वाणी पुस्तक 'विलक्षण वाणी' में छप चुकी हैं। विस्तार से जानने के जिज्ञासु उस पुस्तक को पढ़ने की कृपा करें। जो चारों ध्यान बताये थे, वे हैं—

प्रथम ध्यान कर नैनन बन्दा,
देखौ चरित सच्चिदानन्दा।
दूसर ध्यान खुले दोऊ नैना,
खेलें हँसे कहैं मृदु-बैना।
तीसर ध्यान है सन्मुख झाँकी,
बरनि सकै को छवि अति बाँकी।

चौथा ध्यान दिव्य साकेता,
संत हंस सँग कृपा-निकेता,
चारों ध्यान सिद्ध हवै जावैं,
तब सब मुनि दरश दिखावैं।

आप ही की वाणी में छइऊ चक्कर और सातो कमल का भी वर्णन है।

कर्म

कर्म तीन प्रकार के बताए जाते हैं—(१) संचित, (२) प्रारब्ध और (३) क्रियमाण।

संचित—जीव अनेकों जन्मों से जन्मता मरता चला आ रहा है, उसके कर्मों का समूह संचित कर्म कहलाता है।

प्रारब्ध—जीव के जन्म लेने पर छठी की रात्रि को उसके ललाट में जो कुछ ब्रह्मा जी उसके संचित कर्मों में से शुभ और अशुभ कर्मों के फल को लिख देते हैं, और अमिट हैं, उसे प्रारब्ध कहते हैं।

नोट—सतगुरु या महापुरुष को भगवान प्रारब्ध में उलट-फेर कर देने का अधिकार दे देते हैं। पलटू साहब ने भी अपनी कुण्डलिया नं० २५ में लिखा है—

"राम समीपी संत हैं वे जो करें सो होय"

क्रियमाण—जन्म लेने के उपरान्त जो कर्म किए जाते हैं वह क्रियमाण कहलाते हैं। मरने के बाद यह फिर संचित कर्मों में जुड़ जाते हैं।

इसी प्रकार आगमन (cycle of birth) चलता रहता है।

जीव, क्रियमाण में से अमिट प्रारब्ध को छोड़कर शेष के लिए उत्तरदायी होता है, क्योंकि १० इन्द्री (५ कर्म इन्द्री और ५ ज्ञान इन्द्री) से शक्तिशाली उभय इन्द्री मन है। मन से शक्तिशाली बुद्धि है और बुद्धि से शक्तिशाली आत्मा (ईश्वर-अंश) है। इस प्रकार शरीर में आत्मा

सर्व शक्तिमान है। अतः इसी आत्मा के रहते हुए यदि जीव गलती करता है तो गलत फल पाता है और यदि सही करता है तो सही फल पाता है। भगवान इससे न्यारे हो जाते हैं। महापुरुष यही सिखाते हैं कि अच्छे कर्म करो, सुखी हो जाओ।

पूज्य गुरुदेव थोड़े शब्दों में बताते हैं कि भगवान ने ढाई अकल बनाई है, जो आधी अपने पास माने, बाकी दो दुनिया के पास माने, वह कम गलती करेगा, पर आज कल तो लोग दो अपने पास मानते हैं, आधी बाकी दुनिया में, इसी से किसी की बात नहीं मानते और माया के चक्कर में पड़कर मनमानी करते हैं, तो बताओ, सुखी जीवन कैसे हो ?

घर घर कथा, कीर्तन, पूजन और पाठ होता है, पर यदि यह दिखाऊ भाव से या कमाई करने के लिए किया जाता है तो इसकी गिनती भजन में नहीं है। यदि मन काबू करके श्रद्धा, विश्वास, प्रेम से होता है तो वास्तविक सार का पता लगता है, आनन्द मिलता है और अन्त में गति भी अच्छी होती है। पूज्य गुरुदेव कहते हैं–

"धन पुत्र, यश से नारि नर की खोपड़ी भरती नहीं।
वासना आगे आगे चलती पीछे कदम धरती नहीं॥"

तो बतावो भजन कैसे होवे।

भजन वही कर सकता है जो यहाँ की ऐश-आराम पर लात मारे। किसी ने कहा है–घर से निकले चारि–(१) अति कामी, (२) अति लालची, (३) कहुँ कहुँ तत्व विचार और (४) बहुधा निकले तामसी।

अभ्यास करने का स्थान

पूज्य गुरुदेव कहते हैं सुर मुनि प्रभु के संग सतसंग करने के जिज्ञासु को चाहिए स्थान एकान्त में हो, चारों तरफ कम से कम दो दो हाथ जगह खाली हो, सुख आसन से बैठने के लिए एक गद्दी हो, चाहे उसमें घास भरी हो या रुई।

साधकों को पूज्य गुरुदेव गाजी मियाँ का यह पद सुनाया करते हैं–

पद

हाट बाट औ घाट क रहना साधक का यह काम नहीं।
गाजी कहैं खूब हम छाना भजन क वँह पर नाम नहीं।
लोभ में हर दम माते रहते तप धन सम कोई दाम नहीं।
अहंकार और कपट जहाँ पर वँह पर मिलते राम नहीं।
गर्भ की बात भूल कर बैठे नर तन सम कोई चाम नहीं।
चित्रगुप्त के खाता में है गैरहाजिरी खाम नहीं।
अन्त त्यागि तन नर्क में पड़ि है जहँ पल भर विश्राम नहीं।
सतगुरु करि मन को बस करिए तब कोई इलजाम नहीं।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो थाम नहीं।
हरदम राम सिया रहैं सन्मुख पकड़ सकै तब बाम नहीं।
इस प्रकार बिन भजन को जाने कोई भा निष्काम नहीं।
महा प्रकाश बनत है देखत जहाँ तिमिर औ घाम नहीं।
को बरनै साकेत की शोभा ऐसा कोई धाम नीं।
अगणित भक्त रूप रँग हरि के ऐसा कहीं आराम नहीं।
शान्ति दीनता प्रेम बिना कोई पाया शब्द क झाम नही।
सुमिरन बिना धाम निज जाना और तरीका आम नहीं।

साधना के नियम

जैसे सांसारिक कार्यों के लिए नियम बने हैं और कार्यकर्त्ता को उन्हें सीखना पड़ता है, वैसे ही साधना के भी नियम हैं। यह नियमावली कहाँ मिलेगी, मिलेगी पुस्तकों में अध्ययन करने से, साधक को जानना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से एक छोटी सी पुस्तक 'संत वाणी' के नाम से गुरु परब सं० २००९ तदनुसार ७ जुलाई १९५२ में प्रकाशित हुई है। इसमें अनन्त श्री स्वामी सतगुरु नागा रामदास जी के वचनामृत

हैं। इन्हें मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार "साधना के नियम" (बाई-लाज) कहता हूँ। जिनकी इच्छा हो इस पुस्तक को पढ़ें। संक्षेप में, जो नियम आपने बताए हैं, वह हैं–

१. मन इन्द्री बस में करे
२. भोजन, जल औ नींद को भुलाए
३. आशीर्वाद और श्राप से अलगाए
४. भजन करे ह्वै शान्त
५. तन मन धन सतगुरु पर कुर्वान करे
६. निज को नीच समझे
७. दया धर्म नहीं छोड़े
८. चुप के छिप के भजन करे
९. सतगुरु बचन में प्रीति हो
१०. व्यंग बचन सबके सहे
११. किसी की निन्दा न करे
१२. आँखों से देखे, कानों से सुने, तब भी ध्यान न धरे
१३. नेम टेम को न छोड़े
१४. जग की ऐश आराम तजे
१५. मौत और भगवान पर हर दम ख्याल राखे
१६. जल भोजन हल्का करे
१७. साधक बहुत न बोलै, बहुत चलै न चाल
१८. निज तन से किसी को दुख न दे
१९. सब के कटु बचन सहै करै नहिं क्रोध
२०. साधक को मारै कोई वाके जोरै हाथ
२१. साधक पर कसनी पड़े नेकहु नहिं घबराय
२२. परमारथ परस्वारथ में तन मन देय लगाय
२३. तन से शुभ कारज करै, मन से सुमिरै 'राम'
२४. पंगुल बनि कछु दिन करै एकै ठौर मुकाम

सुमिरन न करने से क्या होता है

मनुष्य का तन पाय के सुमिरन न करने से क्या होता है ? इस प्रश्न के जवाब में पूज्य गुरुदेव कहते हैं–सुनावो इनको गाजी मियाँ का पद :–

पद

किया सुमिरन नहिं हरि का भया रद्दी तेरा खाता ।
बिना सतगुरु से बिधि जाने वहाँ कोई पहुँच नहिं पाता ।
जगत ठगने ठगाने हित पढ़ा कण्ठस्थ करि गाता ।
सुना तू ने नहीं कबहूँ ये प्रभु को है नहीं भाता ।
ज्ञान यह है आडम्बर का इस से प्रभु से नहीं नाता ।
कमाई हाय, यह कीन्हें पाप का सर धरा छाता ।
मिला अनमोल नर तन क्या गर्भ की बात बिसराता ।
अन्त तन छोड़ि ले जमपुर जहाँ तेरा कोई न नाता ।
हर समय दूत वहँ कूटै कष्ट से तन रहे माता ।
जवानी के नशे में तू बचन अच्छे से रिसि पाता ।
वहाँ पर कछु नहीं औरे हाय रे हाय चिल्लाता ।
मूत्र मल का मिलै खाना पचै नहिं उलटि गिर जाता ।
कहैं गाजी मियाँ चेतो समय जा कर नहीं आता ।
हमैं तो दुख यही भारी भेष बदनाम करवाता ।

सुमिरन किया तो

और यदि सुमिरन किया और गुरु कृपा से नाम प्राप्त हो गया तो–गाजी मियाँ कहते हैं–

पद

नाम की फूल रही फुलवारी ।
सतगुरु करि भेद जानि लो है तिरगुन से न्यारी ।
उस गुलशन में फूल अतौल हैं पावत दीन भिखारी ।
ध्यान ज्ञान विज्ञान के गुल हैं तेज समाधि सुखारी ।

रूप के फूल अमोल हैं भक्तौं सीता राम निहारी।
छवि सिंगार छटा की शोभा है मुद मंगलकारी।
को वरनै देखत बनि आवै फणपति शारद हारी।
जियतै फूल लेहु करि करतल दोनों दिसि बलिहारी।
निज कुल में मति दाग लगावो मिलै न ऐसी बारी।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ गाजी कहत पुकारी।

दोहा–नाम प्रेम रस जो पियै तौन भक्त जगसूर।
गाजी कह जे चूकिगे गिर हो चकनाचूर॥

और यदि रूप की प्राप्ति हो जाय तो गाजी मियाँ कहते हैं–

पद

रूप की छवि लखि नैन सुफल हो, नाम कि धुनि सुनि श्रवन सुखारी।
सतगुरु करि जप की विधि जानौ, जियते जीत जाव भव पारी।
सारे चोर किनारे होवें, हर दम भक्तौं आनन्द भारी।
सुर मुनि नित हरि चरित सुनावें, संघै कर गहि लें बैठारी।
झारें अंग दिव्य वसनन ते, विहँसि विहँसि बोलें बलिहारी।
भाँति भाँति के फूल चढ़ावें, लेंय उठाय उछंग उलारी।
उर लगाय मुख को सब चूमैं, जय जय कार करैं दे तारी।
गाजी कहैं भयो मुद मंगल, तन छूटे साकेत सिधारी।

नाम की तान

पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि तुम 'नाम की तान' पढ़ि सुनि के जान नहीं सकते। कमबख्त शाह ने भी अपने पद में लिखाया है–

पद

वेद औ शास्त्र पोराण पढ़ि सुनि, कोई नाम की तान जान सकता नहीं
ध्यान परकाश लय रूप की छवि छटा, हर समय सामने अपने लखता नहीं
देव मुनि संघ वैठक और हरि कीर्तन, साज अनहद कि धुनि तान सुनता नहीं
दीनता शांति औ सत्य विश्वास बिन, प्रेम आकर के तन मन में भरता नहीं

इसमें सतगुरु की भाई जरूरत बड़ी, भेद पाए बिन मार्ग खुलता नहीं
कहते कमबख्त जियतै में जो तप करैं, त्यागि तन फेरि जग में बिचरता नहीं

नाम की तान को जानने के लिए जरूरत है, दीनता, शान्ति, छिमा, संतोष, श्रद्धा, धर्म, दया, प्रेम, भाव, विश्वास, सत्य और शीलता की। यही बात गाजी मियाँ ने पूज्य गुरुदेव को लिखाई थी। उनका पद है–

पद

दीनता शान्ति की नकलैं बड़ी अच्छी जगह रखना।
सदा सतगुरु के चरनों में दोऊ कर जोरि के परना।
छिमा संतोष औ श्रद्धा धर्म दाया सदा करना।
प्रेम औ भाव विश्वास सत्य और शील में ठरना।
यही नकलों के अधिकारी होय कबहूँ नहीं सरना।
इसी से होयगी डिगरी नहीं बिगड़ी रही सुधरी।
यह बात ख्याल कर लीजै जियति में होयगा तरना।
मान लो यह विनय मेरी चोर अब नहिं सकैं हेरी।
देव मुनि सब मिलै घेरी कहैं जियतै भया मरना।
न कोई बात है करीं न इसमें है कोई मुरीं।
मान जो निज को लेय धुरीं वही जियते भया सरना।
मिलै साकेत में बासा अजर औ अमर तन खासा।
न कोई इच्छा न कोई आशा मौन हरि रूप रँग वरना।
कहैं गाजी मियाँ गाजी न मानै सो रहै राजी।
काल की जाय ह्वै भाजी अन्त भव जाल में गरना।

शंका समाधान

कल्याण मार्ग

२२-१२-७४ को एक आर्य समाजी, अवस्था ६५ वर्ष, निवासी गौसपुर, भरतकुण्ड से ४ कोस पूर्व स्थान पर आए और पूज्य गुरुदेव से प्रश्न किए–

प्रश्न–कल्याण मार्ग कैसे मिल सकता है, जिससे यह लोक और परलोक बन सके।

उत्तर–पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा—कल्याण मार्ग में १ माला गायत्री, १० माला ओंकार के जपे जाते हैं, फिर ध्यान किया जाता है तो उसकी धुनि खुल जाती है, सब लोकों से जर्रा जर्रा से, रोम रोम से सुनाई देती है। तब ओंकार प्रकाशमय सामने छा जाता है। तब फिर विशाल हृदय की जरूरत है, माला की जरूरत नहीं है, न हाथों की न जबान की, न आँखों की।

मन बिना आधार पाये रुक नहीं सकता। बन्ध मोक्ष का कारण मन ही है। मन इस शरीर को चलाने वाला ड्राइवर है। वाक्य ज्ञान से गति नहीं होती, उसमें प्राण नहीं है। कहा है—

धनमद, बलमद, रूपमद, विद्यामद यह चारि।
भव सागर की बारि में पकड़ देत हैं डारि॥

राम क्या हैं

२५-१२-७४ को एक अवकाश-प्राप्त चीफ इन्जीनियर पूर्वोत्तर रेलवे, जो जानकी महल में रहकर अयोध्या वास कर रहे हैं, अजमेर के रहने वाले हैं, आये और पूछा—

प्रश्न–प्रश्न यह है कि शब्द भजने की महिमा पुस्तकों में मिलती है–यह शब्द क्या है ? क्या राम राम है, या रं रं है या कुछ और है, या जो चाहे सो शब्द अपना लें।

ऊत्तर–रं रं भगवान की राशि का नाम है, जपा नहीं जाता है, ध्यान द्वारा प्राप्त होता है।

भजन में अशान्ति

६-५-७५ की सुबह एक संन्यासी अवस्था लगभग ७० साल ऋषीकेश से आए और प्रश्न किये–

प्रश्न–भजन करते समय बड़ी अशान्ति होती है। कल्याण मार्ग बताओ।

उत्तर–भजन में बाधा पड़ना स्वाभाविक है। गांधी को गोली लगी, शम्श तबरेज की खाल खींची गई, ईसा सूली पर चढ़े। जितना बाधाओं को सहन करते जाओगे, कल्याण मार्ग पर बढ़ते जाओगे। मन काबू किए बिना कुछ नहीं हो सकता।

फिर मास्टर से कहा इन्हें सुनाओ (१) खफीफशाह का पद, (२) मुहम्मद साहब का पद और (३) भूलन शाह का सोंटा। मास्टर ने पढ़े, संन्यासी जी ने सुने, सुन कर शान्त हो गए, शीश नवाये और पद व सोंटा लिख ले गए।

सोंटा, मैंने इस पुस्तक के पृष्ठ ६३ पर लिखा है मुहम्मद साहब फरमाते हैं—करता है शुक्र हर दम जाता वही जानो–

हाथ पर धर कर कलेजा जंग में जो जायगा।
मुरशिद क दिल में कर भरोसा फतेहयाबी पायगा।

खफीफ शाह का पद

सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो नाम क जारी तार रहै।
दीन बनै तौ तपधन पावै वरना यह दुशवार रहै।
भीतर से दाया नौकर पर ऊपर से फटकार रहै।
तब सब काम घरेलू सुधरें मन से हटा गुबार रहे।
खान पान की वस्तु होय बा पर नित यही विचार रहै।
बालक वृद्ध नौकरें देवै पहिले तो हुशियार रहै।
सेवा करना कभी न टरना जब तक कोई बीमार रहै।
दीन दुखी को जल भोजन औ बस्तर दै चुपमार रहै।
अन्त समय बैकुण्ठ को जावै यह बातें उरधार रहै।
परस्वारथ बिन कह खफीफ तन दोनों दिसि बेकार रहै।

जीवन का प्रयोजन

३०-५-७५ को श्री प्रताप कृष्ण उपाध्याय, सफदरजंग, दिल्ली से आये और प्रश्न किए–

प्रश्न–जीवन का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर–(१) परमार्थ-ईश्वर का भजन और (२) परस्वार्थ–जीवों पर दया, अपने परिवार का चलाना, अपने तकलीफ सह ले - दूसरों को आराम दे। बे खता कसूर कोई गाली दे, तुम रंज न हो, अपनी सच्ची कमाई का अन्न खाये, सबके सुख दुख में शरीक रहे, बेईमान का अन्न न खाए। किसी की जीव जीविका जाती हो तो झूठ बोलने में दोष नहीं है, बेकार झूठ न बोला सादा भोजन, सादा कपड़े। जो ऋषि मुनि लिख गए हैं सतसंग की बातें उन पर अमल करे, जिस देवी देवता से प्रेम हो उसका थोड़ा जप पाठ करे, मन लग जाय तो दर्शन होने लगते हैं, सारा खेल मन का है। ६० घड़ी में से यदि १ घड़ी यानी आधा घण्टा मन लगा कर भजन कर ले तो भगवान ५९ घड़ी की माफी दे देते हैं।

नाना पंथ

२५-४-७५ को मैंने प्रश्न किया–

प्रश्न–प्रभो, नाना पंथ जगत में निज निज गुण गावैं—कोई नाम जप की महिमा पर बल देता है, तो कोई माला जपने पर, तो कोई मूर्ति पूजन पर, तो कोई कीर्तन पर इत्यादि–किस पर चला जाय ? मुसलमान कोई कोई कहते हैं 'कथा, कीर्तन, पूजन में ताला लगा दो' तो नागा राम दास कहते हैं 'सेवा सुमिरन कीर्तन पूजन कथा औ पाठ, हरि मिलने के ठाट हैं, जिसको जिस में जैसा भाव हो वैसा फल उसको मिलता है—किसी एक को पकड़ ले तो डिगरी हो जाय।'

उत्तर–नपे तुले शब्दों में पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा "भजन एक"–"विरती अनेक।" खोपड़ी खोपड़ी का हिसाब न्यारा है। जिसके गुरु ने जो बताया है वही वह करता है। मुसलमानों में बड़ा भारी साधन अभी है, हमने देखा है। वे गर्भ 'के कौल को कहते

हैं पूरा करो–पेट में कहा था तुम्हारा सुमिरन करूँगा, हमें नर्क से निकालो' कथा, कीर्तन, पूजन का कौल नहीं किया था।

सतसंग

३०-४-७५ को मैंने फिर प्रश्न किया –

प्रश्न–प्रभो किस का सतसंग किया जाय और कैसे ?

उत्तर–पूज्य गुरुदेव ने कहा कि तुमने सत वाणी पुस्तक राम दास नागा के वचनामृत नहीं पढ़े हैं। उन्होंने लिखाया है :–

राम राम के दास के, बाँचे सुनै चरित्र।
राम दास नागा कहैं सो होय जाय पवित्र ॥
साधक बैठे ध्यान में, पावै तब सतसंग।
राम दास नागा कहैं सुर मुनि प्रभु के संग ॥

राम के दास वे महात्मा हैं जिनका तार परमात्मा से जुड़ा हुआ है, जो हर समय भक्ति करने के साधन की चर्चा करते हैं, स्वयं उसी में मस्त रहते हैं, गुत्थियों को सुलझाना जानते हैं, दुनियाँ की ऐश आराम को त्यागे हुए हैं, किसी की निन्दा नहीं करते, केवल नाम या शब्द का हाँका दिया करते हैं। सच्चे और पवित्र होते हैं। अन्दर घुसने का रास्ता जानते हैं। दया की मूर्ति हैं।

४० के उपर बुढ़ापा

एक दिन एक स्त्री पुरुष आये। पुरुष की अवस्था लगभग ५० की रही होगी। प्रश्न किए–

प्रश्न–महाराज, घर जमीन बहुत है, पर बंस चलाने के लिए कोई संतान नहीं है।

उत्तर–पूज्य गुरुदेव ने कहा "ऋषियों ने कहा है २०-३०-४० तक योग, भोग, संग्राम होता है। ४० के उपरान्त बुढ़ापे में गिनती है। जब घर में लड़के के संतान हो तो उस पुरुष को ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए।

मन शान्त कैसे हो

२०-६-७५ सुबह ८ बजे एक सज्जन जबलपुर से आये और प्रश्न किए–

प्रश्न–महात्मन ! अनेक कारणों से मन अशान्त रहता है, यह कब और कैसे शान्त होगा ?

उत्तर–पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा "बिना किसी देवी देवता का जप या पाठ मन लगाकर किये शुभ काम नहीं होता है। कबीर जी ने कहा है 'एक घड़ी हर की तो ५९ घड़ी घर की ।' मन एक घड़ी भी नहीं लगता है, वह मौत और भगवान को भूला है। वह समझता है समय, स्वाँसा और शरीर हमारा है, देखता है लोग मरते पैदा होते हैं, तब भी मन उधर नहीं लगता। उसके दिमाग में यह बात घुसी है कि हम नहीं मरेंगे। दूसरी बात, द्वैत घुसा है, हम हमारा परिवार अच्छा रहे, बाकी दुनियाँ मरे, हमसे क्या मतलब है। हमारा काम ठीक रहे। इसी से उसका काम ठीक नहीं होता है।

जो सब का भला चाहता है वही आदमी आदमी है, जो अपना ही भला चाहता है वह आदमी नहीं है, उसकी गति नहीं होती, उसके दया धर्म नहीं है।"

उपदेश

शाम ६ बजे ता० २०-६-७५ को पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा कि अन्धे शाह ने कहा है–

सेवा सतगुरु की तो भक्तो अमित तीर्थों से बढ़कर है।
राम का नाम तो भक्तो, राम के पुर से बढ़कर है।।

उपदेश में मन लगने की पहिचान

२१-६-७५ की सुबह ११ बजे आपने लिखा "जब मन लग जाता है तो उसी जगह गाना बजाना होता हो, कोई बात करता हो,

तुम सुन नहीं सकते, तब समझो हमारा मन लग गया–यह पहिचान है मन लगने की।"

दया धर्म का विस्तार

२१-६-७५ शाम ६ बजे मास्टर ने प्रश्न किया–

प्रश्न--दया, धर्म का क्या विस्तार है ?

उत्तर--पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा--"परमारथ परस्वारथ दो दल हैं। परमारथ ईश्वर को प्राप्त करना, परस्वारथ दया धर्म करना। जो दोनों डंडा पकड़े हैं उसका दरजा बड़ा ऊँचा है। कोई भूखा आ गया तुम जप पाठ करते हो, दूसरा वहाँ कोई नहीं है, तुम फौरन उठ कर उसे भोजन दे दो, अगर वह प्यासा है तो जल पिला दो, फिर आकर अपना नेम करो। अगर तुम बीमार हो और जप पाठ करने में असमर्थ हो तो तुम्हारा जप पाठ हाजिरी में दरज होगा। और अच्छे होने पर नहीं करते हो तो गैरहाजिरी में लिखा जायगा।

यह सब बातें लिखाई गई हैं, यही सिद्ध संत कह गये हैं, उस पर चल नहीं मिलता। भजन की शाखायें सैकड़ों हैं, कहाँ तक लिखावें।"

कृपा

६-७-७५ शाम साढ़े ७ बजे मास्टर ने प्रश्न किया–

प्रश्न–महाराज, संत भगवान ने रामायण में कहा है कि सतपुरुष की कृपा से ही अंतर के फाटक खुलते हैं। एक वर्ग कहता है कि रास्ता बता देने के बाद गुरु का कार्य समाप्त हो गया, साधक मेहनत करे और प्राप्त करे। मेरा निजी ख्याल है कि गुरु हर स्टेज पर साथ रहता है और वही अंगुली पकड़ कर लक्ष्य तक पहुँचाता है। कौन सा विचार अपनावें ?

उत्तर--पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा "गुरु के वाक्य अनमोल

रतन हैं, उसे विश्वास कर के पकड़ ले। अपना भाव विशाल होना चाहिए।"

महिमा

प्रश्न--१९-७-७५ की सुबह १० बजे मास्टर ने स्लेट पर प्रश्न किया, क्या प्रश्न किया सो नहीं मालूम, पर स्लेट पर जो उत्तर पूज्य गुरुदेव ने लिखा वह था--

उत्तर--गोस्वामी जी ने मानस में लिखा है--

बिधि हरि हर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी॥

नानक जी ने लिखा है--

संत की महिमा वेद न जानै।
जेता सुना तेता बखिआनै॥

बहुत भारी विस्तार महिमा का है। बड़ा भाग्य हो वह कुछ समझ सके।

अपने धाम अयोध्या की मर्यादा

११-८-७५ सुबह ८ बजे मैंने पूज्य गुरुदेव से सविनय निवेदन किया "प्रभो, कठियावाड़ के अपूर्व भक्त की कथा में लिखा है कि 'भगवान अपने धाम अयोध्या जी की मर्यादा रखने के लिए एक ऐसा महापुरुष अपने धाम में रखते हैं जो "राम नाम का ज्ञाता हो" और प्रार्थना किया कि ऐसे महापुरुष दादा गुरु और आप के पहले कौन कौन हुये हैं--

उत्तर--पूज्य गुरुदेव ने स्लेट पर लिखा जहाँ तक याद पड़ता है वे थे---

१. श्री सीतासरन जी
२. श्री विदेही जी
३. श्री चतुर्भुज जी
४. श्री रामदास जी

५. श्री बना दास जी
६. श्री लाल दास जी
७. श्री बाबा रघुनाथ दास जी

मनुष्य यन्त्र चलाने वाला

१४-८-७५ को मास्टर ने प्रश्न किया---

प्रश्न--महाराज जी, मनुष्य एक यन्त्र है, उसको चलाने वाले आप हैं।

उत्तर--पूज्य गुरुदेव ने लिखा "जिस रीति से ऋषि मुनि चले हैं उसी रीति से चलना चाहिए। जितने संत, हिन्दू और मुसलमान हुए हैं, सबने अपने को नीचा मान कर के ऊँचा दर्जा पाया है। दीनता शान्ति से इन्द्री दमन किया है। भजन का पुराना तरीका यही है। इसी तरह चलना चाहिए। कबीर जी ने कहा है---

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मोर॥

भण्डार

१९-८-७५ को मैंने स्लेट पर लिखा "पूज्य गुरुदेव, कल दादा गुरु का भण्डारा हुआ, कम पड़ गया, इसके पहले भंडारे हुए, कम पड़ गया। दादा गुरु के समय में मारुत नन्दन द्वारा भंडारा हुआ, महन्त ने एक हजार साधुओं को निमंत्रित किया, डेढ़ हजार साधुओं ने खाया, बहुत बचा, कँगलों को बांटा गया, दूसरे दिन भक्तों ने फिर खाया, कम न पड़ा।

इधर हाल में, बसंत पंचमी सन १९७४ को लखनऊ में डा० अखलेश्वर के बरदानी हनुमान जी की प्राण प्रतिष्ठा हुई। ८०० आदमियों के लिए भोजन का प्रबन्ध हुआ। आपने भंडार की फेरी लगायी, बाद में पंगति लगी। डेढ़ हजार आदमियों ने खाया, परोस के गाँव वालों को पूड़ियाँ बाँटी गईं, कम न पड़ी।

रथयात्रा १९७३ को आपने भरत कुंड पर विष्णुपाद की

स्थापना की। डोगरा पलटन के कनरल शेर सिंह ने ५० ब्राह्मणों के भोजन का आयोजन किया, पूरी, आलू, हलुआ। ७०-८० ब्राह्मणों ने खाया, बहुत बचा, तो ४-४ पूड़ी हलुआ उपस्थित भक्तों को प्रसाद दिया गया, गाँव के लोगों को बाँटा गया—कम न पड़ा।

प्रश्न—तो क्या कारण है कि कुछ समय से गोकुल भवन में कम पड़ जाता है ?

उत्तर—पूज्य गुरुदेव ने कहा मारुत नन्दन व डा० अखलेश्वर व विष्णुपाद पर जो भंडारे हुए वह सच्ची कमाई के पैसों के थे। गोकुल भवन में सामूहिक पैसा आता है, उसमें यदि किसी की बेईमानी का पैसा अधिक हो जाता है तो बरक्कत कहाँ से हो। शुद्ध कमाई का अन्न हो, सब की भावना शुद्ध हो, बनाने वालों के परोसने वालों के विचार शुद्ध हों, तो कम नहीं पड़ सकता। द्वेष भाव किसी में न हो, दिखाऊ काम की भावना न हो, सब के प्रति एक रस व्यवहार हो परसने वालों का, तब बरक्कत होती है।

प्रश्न—गुरुदेव, तो बेईमान के पैसे का भंडारा खाने में साधक को हानि भी हो सकती है, न खाये तो बैर होने की सम्भावना होगी, ऐसी हालत में साधक को क्या करना चाहिए ?

उत्तर—सारा खेल मन का है। अगर साधक के मन में शंका हो जाय तो न खाये, अपना हिस्सा ले ले और किसी गरीब को दे दे। दूसरा उपाय यह है कि साधक भंडारे में पैसा दे दे, तब बेईमान के अन्न का असर उस पर न आवेगा। मन में लोभ न होना चाहिए। अपनी जरूरत भर का ले।

सरल उपाय

प्रश्न—गुरुदेव आप कहते हैं मन के संगी भूख प्यास जबान इच्छा है। इन्हें रोको। इसके अलावा और कोई उपाय।

उत्तर—पूज्य गुरुदेव ने कहा "तुम ने रकार मकार का पद नहीं पढ़ा और ला कर गुटका दिया, कहा पढ़ो।

पद—अन्धे शाह का

सुर मुनि जुग वेद पुकार यही भजि लेहु रकार मकार सही ।१।
निर्गुण निराकार अविकार यही " " ।२।
सब में सब से है न्यार यही " " ।३।
है अकथ अलेख अपार यही " " ।४।
है अगम अथाह बलदार यही " " ।५।
सर्गुण सब का आधार यही " " ।६।
सब मंत्रों का पतवार यही " " ।७।
सब पाप करत है क्षार यही " " ।८।
सर्वत्र ते हो झनकार यही " " ।९।
विधि लेख को मेटन हार यही " " ।१०।
अनमोल अमर जरदार यही " " ।११।
लय ध्यान तेज औतार यही " " ।१२।
नागिनी जगावन हार यही " " ।१३।
सब चक्र कमल सुधवार यही " " ।१४।
उत्पति पालन संहार यही " " ।१५।
सियाराम दरस का तार यही " " ।१६।
साकेत में देत बिठार यही " " ।१७।
सब योगन में सरदार यही " " ।१८।
बिन प्रेम के है दुश्वार यही " " ।१९।
सोऽहं रंकार ओंकार यही " " ।२०।
गुनिये प्राणन ते प्यार यही " " ।२१।
सब सुक्खों का है सार यही " " ।२२।
सब लोक लखावन हार यही " " ।२३।
अनहद बाजन बजवार यही " " ।२४।
सब दिशि करै जारी तार यही " " ।२५।
अमृत पियावन हार यही " " ।२६।
सतगुरु करि लेहु सुतार यही " " ।२७।
अन्धे कहैं निज कुल कार यही " " ।२८।

जब मैं पढ़ चुका तो कहा मन को बस में करना कोई खेल है। इस में जुटे रहो, सब ठीक हो जायेगा ।

महीसुर का अर्थ

२९-८-७५ आज जन्म अष्टमी है । सुबह का १० बजा है । पूज्य गुरुदेव ने अपनी मौज में स्लेट पर लिखा—

सब देवी देवता गीता मानस कंठ किये हैं। महाराज जी (दादा गुरु) की इस कोठरी में हम महाराज जी रहते थे । ठाकुर जी जिसमें हैं वहीं थे, तो दुर्गा जी काल भैरव प्रकट हुए । काल भैरव मानस की चौपाई सुनाये, गला बहुत सुरीला था, फिर दुर्गा जी ने अर्थ बताया :—

बंदौं प्रथम महीसुर चरना ।
मोह जनित संसय सब हरना ।।

दुर्गा जी ने कहा "गोस्वामी जी प्रथम महीसुर 'मन' को कहा है, मही कहा है इस शरीर को चलाने वाला 'मन' है, मैं उसकी वंदना करता हूँ, तुम शान्त ह्वै जाव, तब माया मोह पाँचों चोर शान्त हो जायें, तब जीव से मन का मेल हो जाय, तो जीव जैसे गुरु ने बताया है वैसे शरीर में बिचर कर भगवान की प्राप्ति कर ले, तुमको तार दे अपना भी तर जाय । बिना मन काबू भये परमार्थ नहीं होता है।"

तो पं० राम किशोर ने कहा बात ठीक है, परन्तु ब्राह्मण जितने पंडित साधु हैं ये न मानेंगे, कहेंगे, यह साधुन की निन्दा हो गई— गोस्वामी जी ने ब्राह्मणों की बंदना की है । शंकर जी कहे हैं—

सम मान निरादर आदर ही ।
सब संत सुखी विचरंत मही ।।

मजीद बस्ती जिला में हुए हैं । वे कहे हैं—

दोहा--मजीद मथे से दूध के जस निकसत है घीव ।
काया को जो अस मथै कैसे मिलें न पीव ।।

चौ०--से सावित है सुनिए भाई, अनहद बाजा देत सुनाई ।
जाके सुने दुई मिट जाई, सरम भरम सब जात भुलाई ।
मधुर मधुर धुनि उठत अपारा, ताको बरनौं केह परकारा ।
कानन में अस भनक समाई, रोम रोम ते देत सुनाई ।
जड़ चेतन औ हर एक ठाऊँ, हर सैसे निकसत हरि नाऊ ।
जो कोई सुनै मस्त ह्वै जावै, तब फिर और न उसको भावै ।

दोहा–मजीद वो तन मन बसि गयो पल छिन नहिं भुलाय ।
रोम रोम धुनि उठत है हरि का रूप दिखाय ।।

चौ०–जाहिर करौ काम संसारा । बातिन जपौ नाम करतारा ।।

दोहा–मजीद जगत में अस रहौ जिमि पुरयनि के पात ।
जल ही अन्दर रहत है ऊपर सदा दिखात ।।

वजहन साहब फरमाते हैं :–

दोहा–वजहन जग में आई कै करिए ना तू मान ।
दया धर्म नहिं छोड़िए जब तक घट में प्रान ।।
जब मन की मैं मैं मिटैं तैं तैं का बँधै तार ।
वजहन साहब अभी मिलैं तनिक न लागै बार ।।
जब तक तन मन नहिं जुरै औ मन नहिं मुरि जात ।
तब तक मूरति श्याम की वजहन नहीं देखात ।।
कहने को तो पाँच हैं पर हैं वै पूरे तीस ।
या ही कारन ना मिले अब ही तक जगदीस ।।
जब सुनि हो अनहद का बाजा ।
परजा से ह्वै जैहो राजा ।।
सबी साज तन में बजैं ऐसे मचे हैं राग ।
वजहन जिनको सुनि परै बड़े हैं वाके भाग ।।

महापुरुष की कृपा से नाम का ज्ञान

इस पुस्तक के पृष्ठ १०१ पर मैंने अयोध्या जी के राम नाम के ज्ञाता महापुरुषों का वरनन किया है । दादा गुरु के समय में काठियावाड़

के एक भक्त का मान दादा गुरु ने शान्त किया था। इसी प्रकार की एक कथा पूज्य गुरुदेव के समय की प्रस्तुत करते हैं।

कानपुर जिले के एक पासी ने १२ वर्ष की उम्र में मंत्र लिया। ३० की उम्र में अयोध्या जी आया। रायगंज मोहल्ला में मन्दिर बनवाया। रोज कथा सुनने जाता, अपना नेम राम जानकी मंत्र का करता, सवा लाख राम राम जपता, ठाकुर सेवा, भोग बनाना, भोग लगाना, बर्तन धोना, सब काम अकेले करता था। ४० वर्ष कथा सुनी, नाम जप किया, कुछ न हुआ। एक दिन कबीर जी का पद किसी के पास देखा जो सुरति शब्द पर था, तो भगवान से कहा "अब तुम्हारी पूजा तब करूँगा जब असली रूप से मिलोगे।" किवाड़ बन्द कर दिया, सब जप छोड़ दिया, इधर उधर घूमने लगा। काशी गया, वहाँ किसी ने न बताया, अवध में तलाश किया कोई न बताया तो उसे अभिमान हो गया।

एक दिन बिहारा सिंह के पास गया तो वे बोले महाराज (दादा गुरु) का शरीर छूट गया है, उनके चेला (पूज्य गुरुदेव) हैं उनके पास जाओ। तब तक आप (गुरुदेव) वहाँ पहुँच गए तो बिहारा सिंह ने कहा 'देखो आ गए, जिनको हम कहते थे, अब पूछो।' विशेश्वर ने गुरुदेव से कहा "राम नाम क्या है ?" गुरुदेव ने कहा "राम नाम ही में सब ब्रह्मांड सब सृष्टि है", तो कहा "कैसे जाने ?" गुरुदेव ने कहा "बाद विवाद छोड़ दो तो बतावें, तुम्हारे मन में अभिमान हो गया है कि कहाँ कहाँ गये, न किसी ने काशी में, न अवध में बताया, बड़े बड़े विद्वान हैं, भजन का मार्ग नहीं जानते" और कहा कि इसके पाठशाला नहीं खुलते, कोटिन में कोई जानता है, सब जान जाँय तो यह सृष्टि वहीं चली जाय, दुनियाँ दो से बनी है—आस्तिक और नास्तिक से—इसमें श्रद्धा, विश्वास, प्रेम की जरूरत है। ३ पद कबीर जी के सुनाए और कहा ४ दिन १० माला राम जी के और ५ माला महारानी जी के मन लगा कर जपना फिर गोकुल भवन में आना।

चार दिन में उसे कुछ अनुभव हुआ, शाम को आया और

गुरुदेव से प्रार्थना किया कि "कल सवारी भेजूँगा, जो मंदिर यह प्रण करके बन्द किया था कि जब असली रूप से मिलोगे तब खोलूँगा, सो कल मंदिर जो ९ साल बन्द रहा, खोलूँगा, आप (गुरुदेव) पधारने की कृपा करें।" पूज्य गुरुदेव गये, मन्दिर खुला, न कहीं जाला था, न पोशाक मैली थी, भगवान वैसे ही चम चम करते थे। पूजा हुई, आपने पेड़ों का भोग लगाया, कहा, "आप अच्छे भक्त के पाले पड़े हो।" गुरुदेव ने केवल तुलसीदल लिया बाकी परसाद बटवा दिया, फिर जब सब चले गये तो उसे भजन की बिधि बताई, वही बिधि जो नानक देव ने पूज्य गुरुदेव को २८ की उमर में बताई थी और वह 'विलक्षण वाणी' में छपी है। ३ दिन बाद नाम की धुनि खुली और बाजा सुनने लगा।

विदित हो कि नियम वाद विवाद में न पड़ने का पालन चूक गया। एक दिन इनके मित्र ठठेरन में झगड़ा हुआ, यह समझाने गए तो एक ने इनको बहुत गाली दिया और कहा तुम भाग जाओ नहीं तो दाढ़ी जटा नोच कर खूब मारूँगा तो इनको क्रोध आ गया, बस सब काम बन्द हो गया। पूज्य गुरुदेव के पास आये, रोये, कहा हम लुट गये। पूज्य गुरुदेव ने कहा "कैसे बन्द हो गया, बिना किसी कारण के कोई काम होता नहीं," तो हाल बताया। गुरुदेव ने फिर उपदेश किया, कहा, "साधक ऐसी जगह न जाय जहाँ लड़ाई झगड़ा, दुनियां की बातें होती हों, नहीं तो माया लूट लेती है, तप धन से बढ़ कर कोई धन नहीं है, नर तन से बढ़ कर कोई तन नहीं है, इसी शरीर से भगवान की प्राप्ति होती है, परस्वारथ होता है", फिर दयालु गुरुदेव ने कृपा दृष्टि फेंकी, माया का जाल काट दिया, और कहा "जाओ, अपने काम में लग जाओ"। फिर जुटा, सब प्राप्त किया, फिर कभी न बन्द हुआ।

कुछ दिन बाद पूज्य गुरुदेव ने उससे कहा जो खरगोश राखे हो बाँट दो, वरना मरते समय मन उन्हीं में लगा रहा तो चौघड़ा (खरगोश) हो जाओगे: भोजन एक समय थोड़ा किया करो। कबीर जी ने कहा है–

आशिक होना तब सोना क्या है, लोना और सलोना क्या है।

बगैर नाम जाने भगवान के पास नहीं पहुँच सकते।

एक दूसरी कथा प्रस्तुत करते हैं जिससे भी यही पता होगा कि पूज्य गुरुदेव सुरति शब्द मार्ग द्वारा नाम प्राप्त करने के ज्ञाता हैं, इस समय के।

लखनऊ हुसेनगंज में एक बूढ़ी माता रहती थीं। शंकर जी का मन्त्र "ओं नमः शिवाय" जपती थीं। बहुत गरीब थीं। कोई मोहल्ले का कुछ दे गया तो बना कर खा लिया, नहीं तो नमक की डली मुँह में छोड़ कर पानी पी लिया। आठ आठ दिन ऐसे बीत जाते थे। कुवाँ करीब था, जाड़े में शंकर जी कहते थे "बीस दफे स्नान करो तो लोटा डोर लेकर जाती पानी भरने, तो शंकर जी कुवां का पानी चहला कर देते थे, तो उसे ही लोटे में भरती, बीस बार शरीर में लेस लेती थी। बहुत बड़ी कसनी करती।

एक बार बूढ़ी माता ने शंकर जी से कहा "आप कब तक ऐसा करेंगे तो शंकर जी ने कहा "चुप रहो, जैसा हम कराते हैं, करती जाओ, तब पट खुलेंगे" चुप हो गई। बड़ी कसनी सहा, सब देवी देवता मिलने लगे।

तब कृष्ण भगवान ने कहा "तुम्हारे प्रेम से हम सब आते हैं, पर जब तक हमारा नाम नहीं जानोगी तब तक हमारे पास नहीं पहुँचोगी" तो बूढ़ी माता ने कहा "और क्या नाम है, बताओ" तो कृष्ण भगवान ने कहा "एक महात्मा बाबा राम मंगल दास, लाला गुरुप्रसाद, रामबाग, कानपुर से फलाने दिन आवेंगे, लाल कुवाँ मोहल्ले में पं० गार्गी दत्त के यहाँ ठहरेंगे, लड़के को भेज कर बुलवा लेना और उनसे नाम की विधि जान लेना।"

आप (गुरुदेव) लखनऊ पहुँचे, लड़का आया, आप गये, बूढ़ी ने एक बत्ती की आरती किया, ५-७ मुनक्का भोग हेतु रखा, फिर खिचड़ी आध सेर बनाई, थाली में परसा। पूज्य गुरुदेव बताते हैं कि जब भोग लगाया, सब देवी देवता देख पड़े उसमें बड़ी महक थी, जिन लोगों ने

परसाद पाया था, कहते थे, "ऐसी खिचड़ी हमने कभी नहीं खाई, बड़ा स्वाद था।" तो पूज्य गुरुदेव ने कहा "यह कर्मा माई का अंश हैं जगदीशपुरी में समुद्र के करीब झोंपड़ी में रहती थीं, सबेरे ४ बजे खिचड़ी बनाती थीं, भगवान बालक रूप से पाकर अन्तर्धान हो जाते थे, वही बचा परसाद यह पाती थीं, चूल्हे की राख हटा देती थीं, कभी चूल्हा नहीं पोतती थीं, भगवान के आनन्द में मस्त रहती थीं।"

दूसरे दिन अकेले में जा कर ध्यान व भजन की विधि बताया। उनका सब काम हो गया था, सिर्फ नाम खुलना बाकी था, वह ऐसा खुला कि हा हा कार मच गया।

बूढ़ी माता ने बताया था कि पूज्य गुरुदेव द्वापर में कृष्ण भगवान के संखा शुकदेव ग्वाल थे। हर समय संग नाचते गाते थे और दूध लूटने में भी संग रहते थे।

जहाँ का संस्कार होता है वहीं होता है

प्रश्न–मैंने पूछा (१३-८-७५ को) गुरुदेव क्या जहाँ का संस्कार होता है वहीं होता है ?

उत्तर–पूज्य गुरुदेव ने कहा 'हाँ, जहां का अन्न जल होता है, वहाँ उतने दिन को भगवान भेज देते हैं, न कोई जा सकता है न कोई ले जा सकता है। फिर जहाँ मौत होनी है उसी जगह होती है, जहाँ दाह होना है, उसी जगह होता है, जहाँ दफन होना है, उसी जगह होता है। देखो बृज किशोर नारायण पटना की स्त्री की मौत जमशेदपुर में हुई, दाह अयोध्या जी में होना था तो वे मोटर से लाश अयोध्या लाये थे।

सब काम भगवान के हुक्म से होते हैं। समय, स्वाँसा, शरीर भगवान का है, अपना कुछ नहीं है। जो अपना मानते वह मौत और भगवान को भूले हैं।

हत्या

पूज्य गुरुदेव ने बताया "ऋषि लोग लिख गए हैं कि एक नीच

को मारे दस हजार गऊ की हत्या लगती है, वैश्य को मारे पच्चीस हजार की, क्षत्री को मारे पचास हजार की और ब्राह्मण को मारे एक लाख गऊ की हत्या लगती है। स्त्री को मारे चाहे जिस जाति की हो, चार लाख गऊ की हत्या लगती है।

अयोध्या जी में ४ हठ योगी

पूज्य गुरुदव ने बताया अयोध्या जी में चार हठ योगी हैं।

१ जैन मन्दिर में हैं।

१ मलका विक्टोरिया पार्क, जिसे अब तुलसी उद्यान कहते हैं, के पास से रास्ता है, शंकर जी समाधि पर पधरे हैं, पास में कुवाँ है।

१ विदेही के मन्दिर के सामने ऊँचा बुर्ज है वहाँ पर हैं।

१ दिगम्बर अखाड़े में मन्दिर के नीचे हैं। विदेही के बुर्ज वाले तो ३० हाथ के काले रंग के हैं, वह हमें (गुरुदेव को) आधी रात में यहाँ (गोकुल भवन) पीपल के पास तक पठवै आए, हम एक रोगी को देखने गये थे, किला पर। बड़ी दया उनके है और दयावान तो सभी हैं।

मणी पर्वत पर बहुत हैं–१५-२०-२५-३० हाथ के। हम जब परिक्रमा करते थे तो दो बार दर्शन हुए हैं।

अयोध्या सिद्धों की सराय है

एक दिन पूज्य गुरुदेव ने बताया कि अयोध्या सिद्धों की सराय है। आपको एक पंडा, जो दुर्गा जी का भक्त था, उमर ७० साल की होगी, से मालुम हुआ कि एक सिद्ध संत मानसरोबर से आये हैं और यहाँ रहते हैं, उनका रंग बहुत गोरा है, शरीर मोटा है, दोनों पैरों में अँगुलियाँ नहीं हैं। आगे क्या हुआ, पूज्य गुरुदेव के शब्दों में यह है—

हम गये तो उनके पैर छुए तो हँसे कहा "तुम तो सिद्ध सन्त के कृपा पात्र हो, तुम्हारे पैर हमें छूना चाहिए"। हमने कहा "संत, भगवान

को जान कर उनका रूप हो जाते हैं, इससे हमने छुआ है, सन्त भगवान में कोई अन्तर नहीं है।" तब हम से कहा "अयोध्या सिद्धों की सराय है, यहाँ लाखों युग के सन्त हैं–राजयोगी, सहज समाधि वाले, प्रेम योगी, लय समाधि वाले, शून्य समाधि वाले। जड़ समाधि वाले कम हैं।"

और कहा "हम मानसरोवर कैलाश के पास से चले आए हैं। यहाँ सिद्धों से राज मार्ग का भेद पाकर साधन करके सहज समाधि प्राप्त किया, प्रेम समाधि जाना। रात दो बजे बहुत सन्त स्नान को आते हैं, उनके सतसंग से सब प्राप्त हो गया। सरजू जी में एक दूध की तरंग आती है। सन्त जो पीते हैं, वे अपना अपना पात्र भर लेते हैं।"

और कहा "मानसरोवर, कैलाश, तिब्बत की तरफ हठयोगी बहुत हैं। राज योगी नहीं हैं। हठयोग हमने सीखा। एक संत वहाँ ८५० वर्ष के हैं, नंगे रहते हैं बर्फ पर और बर्फ खाते हैं। हठयोग में हमें कोई आनन्द न मिला। एक दिन की समाधि से १० दिन की आयु बढ़ जाती है, तमाम सिद्धि प्राप्त हो जाती है, भगवान की प्राप्ति नहीं होती है, शरीर अजर अमर हो जाता है।"

फिर कहा "यहाँ पर शुद्ध भाव से रहे, किसी से द्वेष न करे, अपना तकलीफ सह ले, दूसरों को आराम दे, जप, पाठ, पूजन, कीर्तन कुछ न करें तो चौथे बैकुण्ठ में पहुँच जाय। यह सब पुरियों में श्रेष्ठ है। भगवान, भरत जी, लखनलाल, शत्रुहन जी का औतार यहाँ हुआ है। चारों शक्ति साथ में हैं। चौरासी कोस में हर जगह विराजमान हैं। अपना मन शुद्ध हो तब भाव शुद्ध हो जाय। वही दृष्टिगोचर कर सकता है। इस पुरी का प्रभाव जानने वाले शंकर जी, हनुमान जी, शेष, शारदा, गणेश जी, काली जी, दुर्गा जी ने बहुत विस्तार से कहा है। उसके लिखने में महीनों लग जाँयेगे, तुम लिख नहीं सकते।"

पूज्य गुरुदेव ने कहा "अब (अगस्त १९७४) शरीर कमजोर है, हमारे सर में गर्मी बढ़ जाती है, इससे हम थोड़ा बता कर बन्द करते

हैं। यह बात सन् १९२५ की है, जब हमारी अवस्था ३२-३३ की रही होगी।

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार चाह चिन्ता

समर्थ रामदास जी ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, चाह, चिन्ता पर पूज्य गुरुदेव को यह दोहा लिखाया था—

दुतिया कुतिया है बड़ी, चाटि लेत सब अंग।
दौरी दौरी फिरत है, पांच चोर हैं संग।१।
क्रोध कसाई जानिए, कामहि जानु चमार।
लोभ को धोबी जानिये, ठाढ़ो द्वारहि द्वार।२।
मोह व्याधि का मूल है, जारत सकल शरीर।
अहंकार जो ससुर है, डारयो पगन जंजीर।३।
चाह मेहतरानी भई, सब नीचन में नीच।
आप तो पूरन रूप है, डारि दिहिस यह बीच।४।
चिता जलावे मृतक को, चिन्ता जियत शरीर।
या से चिन्ता छोड़ि के, भजहु राम रघुबीर।५।
जब तक मन स्थिर नहीं, तब तक कारज बंद।
मन स्थिर जब ह्वै गयो, पूरन परमानन्द।६।
शान्ति शील संतोष अरु प्रेम दीनता होई।
सरधा, धर्म, क्षमा, दया, राम नाम ते होई।७।
जब तक यह बातें नहीं, तब तक साधु न होय।
कहन सुनन को बनत है, तत्व न जानै सोय।८।
सतगुरु से उपदेश लै, लेय बचन मम मानि।
राम नाम परभाव कछु, तब पावै वह जानि।९।

सतगुरु

स गुरु किस को जानिए सुनिए श्री राधा जी के शब्दों में—

गुरु कहत हैं कौन को जाको गुरु है नाम।
नाम रूप लीला ललित देखै सुन्दर धाम।

शब्द सनेही गुरु वही जानै अन्तर नाम ।
ऐसे गुरु को कीजिए बार बार परनाम ।

स्वामी परमानन्द जी के शिष्य श्री योगानन्द जी पुजारी की भावना :–

करै दण्डवत गुरु की, राखै दृढ़ विश्वास ।
पाँच परिक्रमा करै, चरणोदक तब लेइ ।
करै दण्डवत फेरि तब सिर चरनन धरि देइ ।
आशिर्वाद को लेइ तब पहुँचे ठाकुर पास ।
करै दण्डवत दीन ह्वै राखौ अपने पास ।

यहाँ के ४ हजार वर्ष कैलाश बैकुण्ठ का १ दिन होता है

एक दिन पूज्य गुरुदेव ने बताया कि कैलाश का दिन और चौथे बैकुण्ठ का दिन हमारे सब के भोग के बराबर है । जब यहाँ चार हजार वर्ष बीतते हैं तब कैलाश का एक दिन भक्तों के भोग का माना जाता है । कृष्ण भगवान के लोक से हव्य और अनार के दाने जो एक एक तोला के होते हैं दो दोनों में आते हैं । अनार १० सेर का होता है । जमीन सोने की है, जहाँ गिरा, फटा । दाने सब छिटक गए । वे गरुड़ जी तमाम रूप धारन करके जहाँ जहाँ भगवान का हुक्म है बाँट आते हैं ।

बैकुण्ठ में दिव्य वसन भूषन फरते हैं वृक्षों में, आप ही आप गिरते हैं, वे गरुड़ जी बाँटते हैं ।

कैलाश के अन्दर दिव्य भवन बने हैं, बीच में अक्षय बट है, उसके नीचे शिवा-शिव रहते हैं और सब भवनन में रहते हैं । अन्दर ठंडक नहीं है न गरमी है । वहाँ मल मूत्र नहीं होता । सब वायु हो कर रोम रोम से निकल जाता है । दोना जिनमें हव्य अनार आते हैं खाने के बाद जहाँ जमीन में रखो वहाँ अन्तर्धान हो जाते हैं । रोज बदली भूषन वसन की होती है । वह भी सब अन्तर्धान हो जाते हैं । बड़ा विस्तार है थोड़ा लिखा है ।

बानियों

पूज्य गुरुदेव ने एक दिन बताया कि बानियों का उपदेश हनुमान जी ने खजट्टी पीर को इस प्रकार किया था। यह बात हमें (गुरुदेव को) खजट्टी पीर ने ध्यान में बतलाई थी।

जब हम (खजट्टी पीर) अरब से आकर कुबेर टीला पर चार दिन बैठे रहे, महीना गर्मी का था, तब हनुमान जी प्रकट हुए और कहा कि तुम गर्दन झुका कर सुख आसन से बैठो और नाभी पर सुरति लगाओ। इसे परा बाणी कहते हैं। यह जप सतयुग का है। पश्यंती हृदय से त्रेता की है, मध्यमा बानी द्वापर की है, बैखरी कलियुग की है। यह चारों बानी ब्रह्म बानी से प्रकट हुई हैं। फिर सब बानी एक में लय हो जाती हैं, सुरति लगाने से।

कठिन कुअंक मिटा देते हैं

५-१२-७५ को पूज्य गुरुदेव ने सुबह ९ बजे अपनी मौज में स्लेट पर लिखा "गोस्वामी जी लिखते हैं–

सुनि बोले रघुवंस कुमारा।
विधि कर लिखा को मेटनहारा॥

भगवान तो सर्व शक्तिमान हैं। भरत जी टाल सकते हैं।

भरत जी साक्षात् विष्णु भगवान हैं और रामानन्द स्वामी जी भरत जी के अंश थे।

लखन लाल शेष हैं, पृथ्वी सर पर रखे हैं, राम नाम के बल से, जैसे हाथी के सिर पर एक दाना सरसों रख दी जाय उसे पता नहीं है।

शत्रुहन जी शंकर भगवान हैं, वे भी टाल सकते हैं। कितने शंकर जी की मूर्ति पूज कर अजर अमर हो गये, कितनों को बरदान दे कर अजर अमर कर दिया। एक समय ब्रह्मा जी पार्बती जी के पास

गए, कहा, तुम्हारे पति से हम हार गये– जिनको हम नर्क लिखते हैं उनको बैकुण्ठ देते हैं जिनको कंगाल लिखते हैं उनको धनी कर देते हैं, जिनको हम निरबंस लिखते हैं उनको संतान देते हैं। लिखति लिखति हम हार गये–कठिन कुअंक मिटा देते हैं।

सुरति शब्द पर माई का पद

आज ५-१२-७५ को पूज्य गुरुदेव ने मुझसे कहा, तुमने माईन का कोई पद नहीं लिखा है, सुरति शब्द पर चंदरानी का पद बहुत बढ़िया है। लिख दो।

श्री चँदरानी का पद

सुरति सोहागिन साजु सिंगरवा अब तोहिं सइयाँ घर चलना होगा।
प्रेम की सारी विवेक क घँघरा फूँद विश्वास लगाना होगा।
मन की चोली बाजू जुगुति योग तप की माँग बनाना होगा।
शान्ति के सेंदुर शील की कंघी सत्य फुलेल चढ़ाना होगा।
शौक क काजर आर्त की नथिया धर्म की मिस्सी मलना होगा।
कर्म की चूड़ी दया की दुलरी श्रद्धा की बेंदी लगाना होगा।
सन्तोष छिमा क बीरै झुमका किंकिणी धैर्य कि बँधना होगा।
सहन के पायल गहन के कड़वा रहन के छड़वा पहिरना होगा।
हर्ष के छल्ला ध्यान की अरसी पुरुषार्थ कि सीढ़ी पै चढ़ना होगा।
शब्द की ताली लेकर प्यारी ताला बज्र का खोलना होगा।
गगन महल में अनहद बाजै मधुर मधुर धुनि सुनना होगा।
नाना भाँति कि लीला सुर मुनि करते लखि हर्षाना होगा।
शून्य महल में चलि फिरि प्यारि सुधि बुधि सबै भुलाना होगा।
चेति के महाशून्य करि बेधन श्री गो लोक में जाना होगा।
श्याम के अन्तर श्यामा राजैं झूला लखि सुख पाना होगा।
आगे चलि साकेत पुरी में महा प्रकाश समाना होगा।
ताके मध्य पुरुष अविनाशी शक्ति हृदय में लखना होगा।
राम श्याम के रंग रूप के भक्तन लखि मुद भरना होगा।

सतगुरु ने सब भेद बतायो अब चलि पता लगाना होगा।
चँदरानी कहैं लौटि के नैहर अब फिर मोहिं न आना होगा।

ज्ञान विज्ञान की स्थिति पर पद

ज्ञान विज्ञान की स्थिति पर पद अन्धे शाह जी का

ज्ञानी से होवै विज्ञानी।१।
सांगोपांग जानि सतगुरु से संजम से हो ध्यानी।२।
तब आगे बढ़ि जैहो भक्तों तन मन होवे पानी।३।
सार असार विचारि में आवै ताको कहते ज्ञानी।४।
दृष्टि अदृष्टि एक जब हो गई तब जानो विज्ञानी।५।
भिक्षा पाय न इच्छा रह गई शिक्षा देत न बानी।६।
बाल भाव सब के संग एका खेलत खात अमानी।७।
कर्म धर्म नहिं शर्म भर्म है दोनों दिशि रजधानी।८।
बड़ी भाग्य से यह पद पावत कोटिन में कोई ज्ञानी।९।
अन्धे शाह कहैं सतगुरु को तन मन दे सो जानी।१०।

चौपाई

मज्जन फल देखिय ततकाला। काक होंहि पिक बकहु मराला॥
सतगुरु करि फेरो मन माला। सारे चोरन हटे बबाला॥
लय परकाश धुनी हो आला। सन्मुख श्री सिय दशरथ लाला॥
सुरमुनि मिलैं बिहसि कहैं हाला। चौरासी से भयो बहाला॥
नागिन चक्र कमल जग जाला। महक से तन मन हो मतवाला॥
अमृत पियो सुनो घट ताला। मधुर मधुर हर दम चटकाला॥
इस विधि मंजन करि नरबाला। कितने पहुँच गये सुख साला॥
काक से चातक होत बिशाला। बक से होते सुघर मराला॥
सदा एक रस राखै ख्याला। अन्धे कहै खुलै तब ताला॥
वाक्य ज्ञान छोड़ो नर बाला। या से नर्क में चलि हैं भाला॥

चौपाई

अवध प्रभाव जान सोई प्रानी। जब उर बसहिं राम धनु पानी।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानी। मन को नाम में देवै सानी।
ध्यान प्रकाश दशा लय जानी। हर शै से धुनि नाम सुनानी।
कर्म रेख की मिटी निशानी। सन्मुख राम सिया महारानी।
मुक्त भक्त जियतै भा ज्ञानी। सुर मुनि कीरति कहत बखानी।
तुलसीदास ने गुप्त बखानी। रामायण सब सुख की खानी।
प्रेम से पाठ करैं तो ध्यानी। अनुभव होय न सकैं बखानी।
अंधे क्या बरनै अज्ञानी। सतगुरु कह्यौ लीन मन मानी।

दोहा—राम नाम जप की बिधि सतगुरु से ले जान।
अन्धे कह जियतै लखौ पावौ पद निर्वान॥
प्रेम से अति ही सुलभ है नेम टेम क्या चीज।
अन्धे कह सतगुरु कह्यौ सबका मालिक बीज॥
छटा सिंगार छबि अनुपम राम सीता कि जिन देखी।
कहैं अंधे लखै एक टक भूलि गई शान औ शेखी॥

पुराने संगी

पूज्य गुरुदेव ने १५-८-७५ को स्लेट पर लिखा था—"यह सब जो मिलते हैं, बताते हैं, लिखाते हैं, सब पुराने संगी होंगे, नहीं तो ऐसा न होता, हमें विश्वास है जरूर संगी हैं। हिन्दू मुसलमान दो हजार से ऊपर सब हैं, सात सौ करीब करीब तो मुसलमान हैं और कुछ अधिक हों। हिन्दू डेढ़ हजार होंगे या कुछ अधिक हों

सपन

प्रश्न—१७-९-७५ को शाम ६ बजे मैंने पूछा था सपन मीमांसा क्या है ?

उत्तर—"खराब स्वपन बहुत पेट की खराबी से होते हैं, बहुत प्रेत बाधा

से, बहुत वायु बिगड़ जाने से, बहुत चिन्ता से जो होते हैं उनसे हानि होती है। अच्छे सपन से अच्छी गति होती है। नानक जी ने कहा है—

जागृत सपन सुसुप्ती गुरिया
आतम भूपति की तुरिया।

एक सपन जागते में होता है, एक सपन सोते में और एक ध्यान में। यह आत्मा का खेल है व्रत का नियम यह बताते हैं कि अन्न में कम दाम जिस सामग्री में लगे वह खाई जाय। एकादशी व्रत को कहते हैं 'अपनी इन्द्रियों को एकादश करो। व्रत के दिन झूठ प्रपंच न हो। हल्का सादा भोजन हो, सेवा या सुमिरन में दिन बीते।"

आज अगहन सुदी ५ सं० २०३२ राम विवाह का दिन है। पूज्य गुरुदेव ने कहा "राम विवाह" पर दो पद तुलसीदास जी तथा विन्धेश्वरी माई के बहुत बढ़िया लिखने वाले हैं। इन्हें लिख दिया जाय। सो लिखते हैं।

पद श्री गोस्वामी तुलसीदास जी का

आज नयन भरि निरखि लेहु छबि चारौ भाइन होत विवाहू।
जनकपुरी की शोभा की छबि बरनि सकै को सुर मुनि साहू।
जनकनगर सुख डगर डगर घर नर अरु नारिन मन उत्साहू।
बिविध भाँति रचि मंडप छायो सुवरनि मणि जड़ि कलस धराहू।
सुवरन के खम्भन मणि राजहिं नयनन में परकास समाहू।
गज मुक्तन की चौकें पूरी मलयागिरि चन्दन पटु लाहू।
गोघृत दीपक कलसन ऊपर जगमग जगमग जोति जलाहू।
राम भरत और लखन शत्रुहन चारौं महारानी तहँ आहू।
योगी जनक तत्वदर्शी अति प्रेम मगन मुख बोलि न जाहू।
सुर मुनि नर नारी सब बैठे ब्रह्मा वेद पढ़ै तहँ आहू।
गौरि गणेश कि पूजन करि कै तब फिर ब्याह के साज सजाहू।
धेनु बसन भूषन धन दीन्हे मंगन के घर नाहिं समाहू।
जय जयकार जनक दशरथ को सब लोकन में शब्द सुनाहू।

चारौं कुँवर चारि कुँवरिन संग परत भाँवरी बरनि न जाहू ।
यक टक रहै नैन मूँदें नहि पलकै त्राटक सम लगि जाहू ।
शेष शारदा शम्भु छकित सब बोलि न सकैं अनन्द उछाहू ।
राम सिया छवि बरनि सकै को जगत जननि त्रिभुवन पति नाहू ।
ध्यान लग्यो सुर मुनि नर नारिन जिमि प्रतिमा मन्दिर पधराहू ।
जिन विवाह निज नयनन देख्यो जन्म जन्म के पाप नसाहू ।
तुलसीदास यही बर माँगै रोज होय यह लोचन लाहू ।

पद श्री विन्ध्येश्वरी माई (अजर अमर हैं)

राज सदन में राम सिया के बालक रामायण यश गायो ।
लव औ कुश की पीठि पै कर धर बाल्मीकि सुनि ध्यान लगायो ।
इष्ट शिवा शिव को बन्दन करि तब कुँवरन श्लोक उठायो ।
वीणा के संग तन मन प्रेम से धुनि स्वर एकै साथ मिलायो ।
शब्द शब्द के रूप प्रकट ह्वै नाच नाच के भाव बतायो ।
ताल ग्राम स्वर धुनि सम तन धरि राग रागिनी के संग आयो ।
छवि सिंगार छटा सब साज्यो निज निज तन से धूम मचायो ।
पाँच वर्ष के बालक दोनों अवध में यह कौतुक दिखलायो ।
लोक भुवन और द्वीप खण्ड सब लखि नैन नीर भरि लायो ।
बन, गिरि, सरिता, सागर नाले ताल तलैयन तन पुलकायो ।
जल चर थल चर नभ चर मोहे माया मृत्यु काल गश खायो ।
अगिनि पवन जल पृथ्वी गगनौ सुर मुनि सबके होश उड़ायो ।
शान्ति शील सन्तोष दीनता सरधा छिमा सत्य चुपकायो ।
ज्ञान ध्यान जप तप सुख गण औ प्रेम प्रीति विश्वास लुभायो ।
यह लीला सतगुरु करि देखा केवल सूरति शब्द लगायो ।
विन्ध्येश्वरी कहैं नर नारी भजन करौ जेहि हित तन पायो ।

पद श्री अली शाह जी

मार्ग मुरशिद ने बताया है जय जय कार हुई ।
भव के बन्धन से छुटाया है जय जय कार हुई ।

स्वप्न में जिसका न आया था कभी मुझको ख्याल ।
वह इन नैनों से दिखाया है जय जय कार हुई ।
प्रेम तन मन से करो सच्चे बनो आशिक तो ।
देखो सब में तो समाया है जय जय कार हुई ।
खेलता खेल अकेला है वह प्यारा सबका ।
जिसने यह सृष्टि बनाया है जय जय कार हुई ।
रूप की छवि को कौन बरनन कर सकता है अली ।
जानकी जान हम पाया है जय जय कार हुई ।

शेर

जिक्र करने से फिक्र छूटती है कहते अली ।
प्रेम में चूर हो जाओगे मिलै तब तो गली ॥

अध्याय ५

परस्वारथ

इस अध्याय में मैं प्रस्तुत करूँगा अपनी मालूमात जिनसे पूज्य गुरुदेव का परस्वारथ में क्या क्या और कैसे योगदान हुआ आदि का पता पाठकों को मिलेगा। विशेषता जो मैंने पाई या जो मेरी समझ में आई, गलत–सही, वह यह है कि श्री महाराज जी कोई काम परस्वारथ का इस तरह नहीं करते जिससे 'अहम्' का भाव पैदा हो। हर एक का कोई न कोई माध्यम बना लेंगे। जब आपका काम बन जायगा तो स्वाभाविक है आप आयेंगे और कहेंगे "महाराज जी, आपकी कृपा से हमारा काम हो गया," तो तुरन्त, पूज्य गुरुदेव कहते हैं "हमने तो केवल उपाय बताया था, तुम उस पर बिश्वास करके अमल कर गए, तुम्हारा काम भगवान ने कर दिया, सब का समय भगवान बाँधे हैं।"

संसार में कितने प्रकार के मानसिक कष्ट हैं, कितने प्रकार की बाधायें हैं, कितने प्रकार के शारीरिक कष्ट हैं, देखते सुनते ही बनता है, अनुमान लगाना असम्भव है। कोई भयंकर रोग मे ग्रस्त है, तो किसी को ब्रह्म या भूत पकड़े है या कोई और प्रकार की आधि ब्याधि है, कोई गरीबी से तंग है तो किसी का दिवाला निकल गया है, कोई पागल हो गया है तो किसी की औलाद निकम्मी हो गई है, किसी के घर बाप बेटे या मियाँ बीबी में कलह है तो किसी को संतान न होने का दुःख है। कहाँ तक लिखें तमाम प्रकार के दुखी प्राणी पूज्य गुरुदेव के पास आते हैं। ऐसे लोग भी आते हैं जो कतल कर आते हैं, कहते हैं, महाराज फाँसी से बचाओ। क्या कहैं, पाठक गण, साल में एक पाई कम १६ आना (99.9% recurring) ऐसे लोग ही आते हैं जिन्हें 'धन, यश, पुत्र,

संकट' की समस्या है। कभी-कभी एक दो ऐसे आते हैं जिन्हें सार वस्तु भजन की जिज्ञासा होती है।

धन्य है गुरु महाराज, आप की जय हो। आप न किसी से घृणा करते हैं न किसी से बैर, आप न किसी को डांटते हैं न किसी को सर पर चढ़ाते हैं। आपको न खाने की चिन्ता न आराम करने की। आपको न कपड़े की न बिछौने की—पहनने को ७ हाथ का अचला मारकीन की, साढ़े ३ हाथ की साफी बदन पोंछने को स्नान के बाद, सामान बाँधने को जो कोई राह में या तख्त पर मिल जाय, कान बाँधने को जाड़े में और एक बालिश्त चौड़ी ढ़ाई हाथ लम्बी लँगोटी मारकीन की। बिछाने को गरमी में कुछ नहीं जाड़े में काला कम्बल, ओढ़ने को खद्दर की चादर व कम्बल काले ही रंग का। बारह महीना केवल तन पर अचला ही पहनते है, जाड़ा घाम या तो लगता ही नहीं है या लगता भी है तो उसकी चिन्ता नहीं करते, उसकी गुलामी नहीं करते।

ज्यों ही कोई आपके पास आता है आप स्वयं स्लेट उसकी ओर बढ़ा देते हैं, कहते हैं, लिखो, क्या बात है, फिर जब तक उसकी बात पूरी न हो जायेगी उठेंगे ही नहीं। टट्टी पेशाब का समय हो तो चिन्ता नहीं, लगी हो तो रोके रहेंगे—कहते हैं पेशाब खोल कर ऊपर चढ़ जाने से अच्छा होता है।

काम करने के लिए २४ घण्टा मुस्तैद रहते हैं। कहते हैं, हाथ पैर काम करने के लिए बनाए गए हैं। इनसे खूब काम लेना चाहिए। मैं आपकी शरण में दिसम्बर सन् १९४४ में आया। तब से जब जब आश्रम पर आया तो देखता था कि आप सुबह खरारा (अरहर की झाड़ू) लेकर सारा आश्रम स्वयं साफ करते, फिर नारियल की झाड़ू लेकर नाली साफ करते, तब स्नान करके तख्त पर बैठते। अब आप की अवस्था ८३ हो गई है पर तख्त पर सुबह से शाम तक बैठे रहते हैं, कोई बिछौना या गद्दी नहीं, पीठ लगाने के लिए ईंटों की नंगी दीवार। इस अवस्था में ८-१०-१२ घंटा एक ही जगह बैठे रहना क्या कोई साधारण बात है ?

आप १८ से २२ की अवस्था तक घूमे–१ सोटा, १ लोटा १ धोती और ४ लँगोटी लेकर रहनी, सहनी, गहनी का अभ्यास करने। फिर दादा गुरु के शरीर शान्त होने के कुछ वर्ष बाद, ४ साल घूमे मार्ग बताने, जीवों का कल्याण करने और जीवों को नाना प्रकार के भोग भुगा कर मुक्त करने। कितनी उदारता, मेरे पास शब्द नहीं हैं, किस तरह किसी को बताऊँ या समझाऊँ। देखते सुनते ही बनता है। मैंने कभी नहीं देखा कि जो माल आए–'अन्दर', देखा सिर्फ आते हुए माल को उछालते। एक भी मिसाल नहीं, जिससे कहा जाय कि पूज्य गुरुदेव को किसी किस्म का लालच था या हो। पर लालच था, काहे का, "बिचारे जीव या शरण में आये का कल्याण हो जावे, पूजा पाठ से, हाथ पैर की सेवा से, रुपया पैसा से," जैसे भी हो सके इसी की चिन्ता करते हैं।

कोई अहंकार नहीं अपनी योग्यता का, अपने ज्ञान का, अपनी कार्य कुशलता का। जब भी कोई बात हो, जब भी कोई समस्या हो, तो पूछते हैं यह कैसे की जावे, यह कैसे होगी, बताओ।

सेवा के संस्कार का उदाहरण

सेवा करने का संस्कार पूरा करने की एक कथा लिखते हैं। शायद बात सन् १९३७-३८ की है। गुरु जी के शब्दों में–

रामबाग कानपुर की बूढ़ी माता का हाल

"शुरू शुरू में जब हमें कानपुर जाना पड़ा तो भक्त लोगों ने आपस में सलाह किया 'कहाँ ठहराये जाँय।' यह बात बूढ़ी माता के घर में हुई। वे बोलीं 'हमारे घर में ठहरेंगे।" सब ने कहा 'तुमसे कौन परिचय है' तो कहा, 'देख लेना।' जब हम गए शायद ९ बजे रात को घर पहुँचे, भीड़ हो गई। डाक्टर ने कहा था, खडी न होना, तो खड़ी रहीं, आरती हुई, परसाद बँटा, दो बजे सब लोग गए। तब वे कोई तेल लाईं और हमारे सर पर लगाने लगीं, अपनी जाँघ पर हमारा सर रख लिया, तब तक कृष्णा (बूढ़ी माता की लड़की) ६ या ७ साल की थी तो उनके असथनों से दूध की धारें चल कर हमारे मुँह पर आ गईं, मुँह तर

हो गया। हमने कहा 'क्या बात है' तो कहा 'तुम हमारे तीसरे जन्म के पुत्र हो–फतेहपुर शहर में मकान था, आगे बरामदा था, हम पलँगा पर लेटी थीं, पूरब मुँह, तुम हमारे पैते पश्चिम मुँह खड़े थे, तब तुम्हारी अवस्था १६ की थी, हमें याद है तुम को देखते देखते हमारा शरीर छूटा था, अब हमारी इच्छा है हम अपने हाथ तुमको भोजन बना कर खवावें।' तब हम एक ब्राह्मण बिजपुरी का था, उससे कहा तुम अपने हाथ बना लो। बूढ़ी अपने हाथ भोजन बना कर हमको खिलाने लगीं, अपने हाथ से जल पिलाने लगीं, मुँह धोकर पोंछ देती थीं। शाम को १० पर जब सब शयन करते तब हमारे पास ही रहतीं, फिर ४ बजे उठती, पाखाने जातीं, स्नान करतीं, भगवान के पारखत धोती, पूजा हम करते, फिर फल या मीठा अच्छा भोग लगाते, आरती करते, घड़ी बजाई जाती, हमें कुछ परसाद खवा कर सबको बाँटती, दोपहर में भोजन दाल, भात, रोटी साग बनाती, हम भोग लगाते, फिर कई भक्त आते, ब्राह्मण, लाला, बनियाँ 'ठाकुर, सब परसाद लेते, फिर शाम को अधिकतर मुनक्का का भोग लगाते थे।

यहाँ से राम, लक्ष्मण जानकी जी की बड़ी बड़ी मूरती ले गये थे। एक शंकर जी ढाई सेर के बड़े विशाल, एक सिंहासन गिलट का, उसमें सालिग राम, नरवदेश्वर, गोमती चक्र था, पूजा के सब बरतन ले गये थे। वहाँ ताँबे के दो घड़ा भगवान के लिए लिया था। भगवान का सिंहासन सागौन का, ४ चौकी, दो तखत, ४ आसन तखत ऐसे चौड़े, उनमें गोड़ लगवाया था, साधु आवें उन पर आसन लगावें। भगवान की सैन की चौकी, उसमें डंडे लगे थे, गद्दा, तकिया, मसहरी, भगवान की पोशाकें, मुकुट, कुण्डल, फूल, पत्ती, यहां से बनवा ले जाते थे। यहाँ दो साधु—एक जन्म स्थान का, एक सीता कुण्ड का, एक एक हजार रोज बनाते थे। ३ हजार फूल पत्ती ले जाते थे। मंजन भगवान का, एक सेर सिंदूर, गोपीचंदन, सम भाग मिला कर और सब के लिए कम से कम १२ सेर मंजन टीन के डिब्बों में, कई ताँबे की जीभी, चंदन मूठा, धूप, इतर, गाय का घी घर से मँगाते थे। सब

सामान का ड्योढा रहता था जिसमें कम न परे । फगुई, दिवारी, रामनौमी, जन्म अष्टमी, शिवरात्री, यानी जितनी समैया हैं कायदे से होती थीं ।

पहिले बूढ़ी बीमार हुईं तो लखनऊ में अस्पताल में रहीं, वहाँ इनके पिता बाबू बनवारी लाल सब खर्चा करते थे । साढ़े तीन सौ सुई लगीं, सब खून काला पड़ गया, देही भर में जलन हो गई, सर दर्द, आँखों से कम देख पड़ता था, तब कानपुर आईं हम से हाल बताया । हम भेड़ का घी मंगा कर १०१ बार पानी से धोया, हाथ पैरों में मला, दो माह कुछ न हुआ, तो ध्यान में देखा सब खून काला हो गया है । तब रोटी गली में एक मुसलमान हकीम हैं, गरीबों को मुफ्त दवा देता है और फस्थ खोलता है, उसके पास गए । हाल बताया, साथ लाये । हमने कहा बाँये हाथ की नस में लगाने से सारे बदन का खून निकल जाता है । उसने लगाया तो काला खून बहुत निकला । हमसे कहा तीन हिस्सा खून काला हो गया, एक हिस्सा शरीर में ठीक रह गया, हमने इतना खून किसी के न निकाला था, आप ने कैसे जाना । हमने सब हाल बताया ।

जब जिन्दा खून निकला तब रोक कर पट्टी बाँध दिया । वे बेहोश हो गईं, तब शहद का शरबत बना कर नाक दाबी, मुँह खुल गया । करीब आधा सेर शरबत पिलाया, तब ठीक हुईं । ऊपर छत पर उठा ले गये, पलँग पर लिटा दिया, कहा, पेशाब लागे तो हमें आवाज देना, अगर तुम उठोगी तो पट्टी हट जायगी, ताजा खून चलने लगेगा ।

हम भोजन करके उठे, वे पेशाब को उठीं, आवाज न दिया, पट्टी हट गई, खून चलने लगा । जब तक हम पहुँचे १ पाव खून निकल गया था हमने कहा, आवाज देना था, तो कहा, गलती हो गई । फिर हम पट्टी बाँधा । हकीम ने कहा था इनको दो माह हलुवा गाय के घी का, हाथ का पिसा आटा गेहूँ का, मुनक्का पीस कर सीड़ा बना कर खिलाना, नमक न देना । एक माह खिलाया, तब गुरु प्रसाद

अविनास ने दाल, भात, रोटी खिला दी। हम कहा, हकीम ने कहा था दो माह यही खिलाना, नमक न देना।

फिर हम सर दर्द की गोली खिला कर नहस देते तो कफ निकलता, छींके आतीं तो कफ को अँगुली से अँगूठा से खींच लें तो वह रस्सी की तरह लम्बा-लम्बा निकलता। २१ दिन गोली सुबह दिया नहस दिया, सुबह हलुवा दिया तब सिर का दर्द गया। तब शरीर ठीक हुआ।

फिर जब दूसरा गर्भ रहा तो उन्नाव की लेडी डाक्टर ने कहा हम बच्चा जिन्दा पैदा करके दिखावेंगी। हम साल में तीन बार यहाँ (अयोध्या) आते, ४ दिन रह कर फिर लौट जाते। जब गये तो देखा पैंते पलंग के पावों के नीचे ईंटा रखे हैं, सर की तरफ नीचा है। पूछा तो कहा, लेडी डाक्टर ने ऐसा बताया है, गर्भाशय खून फेंकता है। हमने कहा यह भगवान की लीला भगवान जाने, जो लेडी डाक्टर ने कहा है वैसा करो। जब कुछ दिन बच्चा पैदा होने के बाकी रहे, तब उन्नाव अस्पताल गईं। कुछ दिन बाद लेडी डाक्टर ने कहा बच्चा पेट में मर गया, अब हम कुछ नहीं कर सकतीं, तब बूढ़ी ने मगन को बुलाया, कहा, जाओ, महाराज जी को लाओ, उनके सामने शरीर छूटे, और हमें कोई चिन्ता नहीं है।

मगन आये, हाल बताया, हम चल दिए, कुछ दूर गये होंगे लड़का मरा पैदा हो गया, बहुत खराबी बदबूदार निकली सब सफाई की गई। हम पहुँचे तो चादरा ओढ़े उतान पड़ी थीं। हम पेट पर हाथ धरा तो मुँह फैला दिया, पेट फूला था, कहा, बेटा, बड़ा दर्द है, हमारे आँसू आ गये।

बूढ़ी माता के पिता थे। हम कहा, हम इन्हें कानपुर ले जायेंगे तो कहा हम अपने लड़के रामेश्वर चन्द्र को बुला लें, वह भी डाक्टर है, सलाह हो जाय तब बतावें। ८ दिन हम रात भर कुर्सी पर बैठे रहते थे, तब बूढ़ी के पिता ने कहा, हम पैसा खर्च कर सकते हैं। इतना कष्ट

रात भर कुर्सी पर बैठने का नहीं कर सकते हैं। हमने कहा इनका संयम यहाँ हमारे मन का नहीं होता है, दिन पर दिन कमजोरी बढ़ रही है। तब सलाह करके कहा आप ले जाँय।

बूढ़ी को लारी में चारपाई छोड़ कर बिछौना डाल कर, लिटा कर, उनके मकान रामबाग में ले आये। खाने में गाय के घी की पूड़ी, देशी आलू करायलदार अपने हाथ से मसल कर खबाने लगे, पानी पिलाते। १५ दिन बाद दिवाल के सहारे से कुर्सी पर बैठने लगीं। हम उसी तरह खबाते रहे। एक माह बाद आँगन में कुर्सी पर बैठने लगीं, फिर भोजन अपने हाथ करने लगीं।

जब दो माह हो गए, हम बूढ़ी माता के लच्छादि सारे बदन में लगाते थे, लंगोटी पहनाकर। तो पेट के दोनों तरफ के नला बहुत मोटे थे, उनमें हवा भर गई थी। हमने अध्यापिका से कहा तुम यह नला इस तरह तेल लगा कर टारो, आधा घंटा रोज, बाकी तेल हम लगा लेंगे। दो माह नला टारे गये तब पच गये। फिर बूढ़ी माता भोजन करने लगी। हमसे कहा, बेटा तुम छोटे होते तो हम तुमको अपनी इच्छा भर खूब दूध पिलाती और दुलार करती, जैसे छोटे पर छाती पर लिटाती थीं और मुँह में लाई चना की गोली बनाकर जीभ पर दिखाती थीं तो तुम मुँह से लेकर खा जाते थे। हमने कहा अगर तुम्हारा सच्चा भाव होगा तो भगवान पूरा करेंगे, आज तुम अपने कमरा में अकेले जा कर लेटो तो शायद भगवान तुम्हारी इच्छा पूरी करें। हमारे साथ न लेटो, हम में इतनी शक्ति नहीं है।

१० बजा, सब लोग हमारे पास से चले गये, फिर जा कर लेटी। भगवान १२ बजे रात ६ माह का रूप धारन करके उनके पास पहुँच गये। जाड़े का महीना था, रजाई अढ़े थीं। रजाई के अन्दर जा कर स्तन पर हाथ का इशारा करने लगे। कुछ नींद में थीं, जग गईं, मुँह खोला, रोशनी थी, जान गई, हम ही पर विश्वास था, वही हैं, खूब दूध पिलाया, दुलराया, छाती पर लिटाया, बैठ कर मुँह चूमा दोनों हाथों से ऊपर को उलारा, भगवान हँसने लगे फिर भगवान को

छाती पर लिटाया तो भगवान नीचे ऊपर के ओठ पीने लगे, फिर दोनों कानों की लौर पीने लगे, फिर मुँह पर मुँह धरे और जीभ निकाली, जीभ से गाल चाटने लगे, तो कहा, हमें हँसी आ गई। हम हँसने लगीं तो अपनी जीभ हमारे मुँह में छोड़ दिया, हँसी बन्द हो गई, फिर हमारे मुँह से जीभ अपनी निकाली, हमारी जीभ स्वतः बाहर निकल आई, उसे पीने लगे, फिर जीभ पीना बन्द कर दिया। दो घंटा रहे, हमने खूब दुलार किया, फिर अन्तर्धान हुए, शरीर महकता था। वह महक हमारे कपड़ों में और शरीर में भर गई। ४ बजे सुबह हमारे पास आईं, यह हाल बताया और कहा हमें यही बार बार मन में आता है तुम्हीं ने यह खेल किया है। हमने बाह पकड़ी, पैर छुए और कहा, हम नहीं थे, तुम्हारा भाव सच्चा था, भगवान ने इच्छा पूरी कर दी, भगवान भाव के भूखे हैं।

बूढ़ी माता यहाँ (गोकुल भवन) में आती थी। जो कोठरी दक्खिन मँह जगत नारायन के घर के सामने है उसी में ठहरती थीं। एक दिन हम से कहा ध्यान बताओ। हमने बताया। हमारे साथ बैठ गई तो ध्यान हो गया, राम जानकी, राधे श्याम, विष्णु, कमला, शंकर पार्वती, ब्रह्मा, शारदा, गणेश, सरस्वती, हनुमान जी, खटमुख, काली, दुर्गा, भैरव और बहुत देवी देवताओं के दर्शन हुए, फिर प्रकाश हुआ, लै दसा हो गई, ज्ञान, ध्यान, मान सब की सुधि-बुधि भूल गई। जब सुरति उतरी, शरीर में चेतना हुई और बल आ गया तो नाम की धुनी खुल गई रं रं रं रं होने लगी। जब हमारा सब काम हो गया तो हमें छाती से लगाया, आँसू चलने लगे। हमने आँसू पोंछे, तब कहा यह शरीर तो अनमोल है, इसमें सब देवी-देवता भरे हैं। बेटा तुम न मिलते तो हमारी न जाने कौन गति होती। हमने कहा "भगवान सब का समय बाँधे हैं, समय पर पुराना सुकृत भिड़ा देते हैं।"

फिर हम से कहा हमारा शरीर तुम्हारे रहते हुए छूट जाय तो ठीक है। हमने कहा भगवान भक्त की इच्छा पूरी करते हैं। लखनऊ आईं, अपने डाक्टर भाई के साथ सरकारी बँगला में रहीं। पत्र हमको

लिखा कोई ऐसी दवा बनाना जो दो माह तक खराब न हो, हम जल्दी ही तुम्हारे पास आवेंगी। कुछ दिन वहाँ रहीं। एक दिन ११ बजे रात तक सब से बातचीत करती रहीं, फिर शायद रात १ या २ बजे तीन बार सीताराम, सीताराम, सीताराम कहा और शरीर छोड़ दिया।

जो सामान हम उनके लिए पहले ही खरीद कर धरा था, बड़ी बड़ी थाली, बड़े बड़े लोटा, मजबूत आसनी, चट्टी, कपड़ा सब ऊन के, उनके काम में दिए गए। उनमें बड़ी सहन शक्ति और दया थी।

पाठक, इस से अधिक ऊँचे दर्जे की सेवा और क्या हो सकती है। ऐसी न कभी सुनी होगी और न देखी होगी। यह है परस्वारथ।

अब आपको एक दूसरी कथा सुनाते हैं गुरु जी के शब्दों में इसमें भी आप देखेंगे परस्वारथ अपने ढंग का निराला ही है।

बूढ़ी माता का एक पैर सूज गया, मुड़ता न था, अरसा हो गया, हमसे कहा चलो देख आवो। हम बूढ़ी माता, गुरुपरसाद गए, उनका हाल देखा, पैर सीधा था, तकलीफ थी तो बनवारी लाल ने कहा तुम हमारी बहू का पैर अच्छा कर दो तो एक हजार रुपया हम देंगे। हमने कहा हम रुपया नहीं लेते हैं, अच्छा भगवान करेंगे, फिर हम उनके पैर के तरवा में अपना सर रगड़ा तो हँसने लगीं और कहा देखो हँस रही है, अब धीरे धीरे ठीक हो जायगा, फिर भगवान की दया से धीरे धीरे ठीक होकर चलने लगीं।

बूढ़ी माता ने हमसे कहा कि हमारे भाई रामचन्द्र कई बार बीमार पड़े हैं, उनको बड़ी तकलीफ है, देखा नहीं जाता। हमने दान जप कराया, फिर ठीक हुए। बहुती घटना है, कहाँ तक लिखें।

सर धड़ मान दिया

ऊपर की घटना से भी बढ़ कर तीसरी सुनिए। आप ने (पूज्य गुरुदेव) अपना सर, धड़, राम सिंह व महाबीर परसाद को मान दिया। गुरु जी के शब्दों में—

श्री राम सिंह, गंगवल स्टेट, जिला बहराइच के राजा थे। यह बहुत बीमार पड़े, मारकेश लग गया। घर का काम बहुत बाकी था। इनके सम्बन्धी और घर के लोग हमारे पास आये, बहुत रोये। हमें दया आ गई तो हमने अपना सिर मान दिया तो अच्छे हो गए। मारकेश टल गया।

श्री महाबीर प्रसाद श्रीवास्तव, कचहरी रोड, लखनऊ के रानी इटौजा के वकील हैं। इनका भी मारकेश आ गया। रानी बहुत दुखी हुई, सारे मुकदमे झंझट के पड़े थे। राजा साहब थे नहीं। सब महाबीर प्रसाद को सुपुर्द कर दिए थे। रानी ने अपनी करुण कहानी हमसे कही। हमें दया आ गई तो हम अपना सर तो मान ही चुके थे पहले राम सिंह को, धड़ महाबीर प्रसाद को मान दिया।

भगवती वार्ता

अब जब से भगवती ने रोक दिया है, सर, धड़ राम सिंह महाबीर प्रसाद को माना था, तब से, कहा, दान जप करा दिया करो, यथा शक्ति धर्म जो तन मन से करेगा उसका भला होगा और जिसका भाव तुम में होगा उसका काम भगवान पूरा करेंगे। तुम को अब यही करने का अधिकार दिया गया है, शरीर धड़ हमारा हो गया।

दान जप का फल

दान जप के विषय पर पूज्य गुरुदेव ने अपना विचार प्रकट किया १०-६-७५ की शाम ६ बजे–

"हमें ३० साल हो गए, तमाम जप दान हवन कराते। जिसका हक जो होता है उसे न देने से कोई देवता मदद नहीं करते। भगवान राम कृष्ण जिनकी दुनियाँ बनाई है वे ग्रहों को मानते हैं। जब शादी गमी में जो काम होता है सब कराते थे, तब हम क्यों न करावें। हम जो ऋषि लिख गये हैं उसी बात पर चलते हैं। मरने पर सब हिसाब हम से भी पूछा जायगा। हम मौत और भगवान को भूले नहीं हैं। उनको क्या मालूम अपने मनमानी करते हैं, इसी से दुखी रहते हैं।

यह सिद्धान्त की बात है कि मनुष्य दुखी होता है, रोगी होता है, अपने ही कुकर्मों से, उसका भोग भोगना पड़ता है। जो भी हो "जा के पाँव न फटें बिवाई, सो का जाने पीर पराई।" इस पीर को बटाने में कौन तैयार होता है, शायद ही कोई हो जो दूसरे का कष्ट अपने ऊपर ले, जरूरत पड़े तो अपना सर और धड़ भी मान दे। जब जब ऐसी परिस्थिति आ गई तो चरितनायक, हमारे पूज्य संत शिरोमणि दयालु गुरुदेव पीछे नहीं हटे। हटें भी कैसे ? क्यों कि शब्द 'ना' अपने कोष से निकाल कर फेंक दिया है। तब जो जिस सांसारिक वस्तु की कामना लेकर आता हैं, गिड़गिड़ाता है, याचना करता है, तो मेरे प्रभु गुरुदेव उसे पूरा करते हैं। निराश कोई नहीं जाता है।

रोग लेना

हर विषय पर इतनी मिसालें हैं कि जिल्द पर जिल्द बन जाय वे चुकने को ही न आयें। पर उदाहरण मात्र तो लिखना ही है। सर धड़ की बात तो लिख चुके हैं। इनके अलावा मेरी आपकी दृष्टि में बहुत कठिन विश्वास के बाहर, पर दीनदयालु गुरुदेव के लिए मामूली खेल यह रहता है कि किसी किसी का भयंकर रोग अपने ऊपर ले लेते हैं। कहते हैं, हम उसका रोग भोग डालें, हमें रुपया में चार आना तकलीफ मालूम होगी, वह छटपटा जायगा, सहन करने में उसे बड़ा कष्ट होगा। मिसालें बहुत हैं, केवल पूज्य गुरुदेव का स्वभाव इंगित करने मात्र वो यह लिखा है कि इनके हृदय में कितनी दया भरी है।

जीवों पर दया के हम उदाहरण इस पुस्तक के अध्याय ३ में लिख चुके हैं।

कुण्डली विचार

कुण्डली विचरवाने की कहानी हमारी जबानी बड़ी विचित्र है। यदि अपने विचार द्वारा प्रकट करने में कोई त्रुटि या अनुचित बात हो तो पहले से ही हाथ जोड़ कर माफी माँग लेते हैं-आप हमें क्षमा करें।

आमतौर पर ऐसा होता है कि जब भी कोई आता है अपनी सांसारिक समस्या लेकर, तो पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि आप की पैदाइश का कागज यानी जन्मपत्री या कुण्डली है तो लावो, ग्रह विचरवा के देखा जाय कि कौन ग्रह खराब हैं, तब खराब ग्रह का दान जाप कराओ, और यदि पैदाइश का कागज नहीं है तो नाम से विचरवाओ।

प्रश्न उठता है, पैदाइश के कागज से क्या वास्ता, तो हमारी समझ में जो आता है लिखते हैं। यह हम पहले ही कह चुके हैं कि आप (पूज्य गुरुदेव) कोई काम ऐसा नहीं करते जिसमें 'अहम्' का भाव पैदा हो या जनता को चमत्कार मालूम हो।

पहिली बात तो यह ख्याल कीजिए कि यदि आप के पास पड़ोस में कोई गुंडा रहता है और आप उसकी खातिर करते रहते हैं, चाय पानी पिलाते हैं, तो क्या वह आपको तंग करता है। कदापि न तंग करता होगा या करेगा, बल्कि आप उसके साथ ऐसा व्यवहार करने के बल पर अपने आपको बिलकुल सुरक्षित महसूस करेंगे। तो यदि मेरे पूज्य गुरुदेव ऐसा कराते हैं तो क्या गलती करते हैं, सो आप सोचिए।

दूसरी बात यह है कि यदि आप चलते-फिरते किसी काम से—अयोध्या तीर्थ करने अथवा दर्शन करने आये हैं और किसी से कहीं से आप को मालूम हो गया कि गोकुल भवन में सिद्ध संत रहते हैं, चलो लगे हाथों दर्शन भीं कर लें और बुझोली भी बूझ लें। तो जहाँ आप ने प्रश्न किया और पूज्य गुरुदेव ने पैदाइश के कागज की बात छेड़ी और दान जाप पर पैसा खरचने की बात आई तो आप किनारा कशी कर लेंगे, पर यदि वास्तविक जिज्ञासा और सच्चा भाव लेकर आये हैं, तो आप पीछे न हटेंगे, चिपक जायेंगे, जो जो कहेंगे सो सो करेंगे। कितनी गलत धारणा है उन लोगों की जो यह सोचकर आते हैं कि कुछ करें धरें न, आशीर्वाद प्राप्त कर लें। मैं आपसे पूछता हूँ कि मेरी आपकी चलते-फिरते की मुलाकात है, हजार दो हजार तो क्या, सौ दो सौ रुपया आप से माँगू तो क्या आप दे देंगे। यदि आपका उत्तर नकार में

हो तो आप ही बताइये कि क्या आशीर्वाद का कोई मूल्य ही नहीं है। मैं आप को बता दूँ, उसका मूल्य होता है, तप धन कटता है।

तो कुंडली के माध्यम से पात्र कुपात्र का निर्णय हो जाता है। जो पात्र है वह डट जाता है, जो कुपात्र है वह फूट जाता है। जो डट जाता है, उसे पूज्य गुरुदेव अपना तप धन कटा कर, कष्ट निवारण कर देते हैं। गंगा जी बह रही हैं, जिसका जी चाहता है भावना होती है लुटिया भर लेता है। जिसकी भावना नहीं होती है वह किनारे जा कर टहल कर वापस चला आता है।

तीसरी बात यह है कि दान जाप करा देने के बाद जो उपाय गुरुदेव ने आपको कष्ट निवारण या मनवांछित फल पाने का बताया वह विश्वास करके आप ने तन, मन, धन से किया और आपका काम हो गया, तो आप शायद ही सोचेंगे कि 'महाराज जी' ने कुछ अपने तपोबल द्वारा किया–कुंडली की बात न की जाय आप की इच्छा पूरी हो जाय, तो आप अवश्य कहेंगे कि 'महाराज जी' बहुत ऊँचे पहुँचे हुए हैं, क्या चमत्कार किया, हालाँकि ज्ञानी पुरुष तो समझते ही हैं कि कुण्डली तो केवल माध्यम है, करने वाले दीन दयाल सरकार परमहंस जी पूज्य गुरुदेव हैं।

जिस पर दया करते हैं किस खूबसूरती से करते हैं ?

अब एक घटना ऐसी प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठकों को पता लगेगा दीनदयाल गुरुदेव ने एक ही तीर से–

(१) गरीब परिवार का दरिद्र दूर किया
(२) हमारा विश्वास अटल किया
(३) हमारे पूर्व जन्म का संस्कार पूरा करा दिया

एक गरीब परिवार की लड़की बी० एड० पास हुई तो पूज्य गुरुदेव के चरण छूने आई, कहा, आपकी कृपा से बी० एड० में दाखिला हुआ (तृतीय श्रेणी से हाई स्कूल, बी० ए० पास हुई थी) आपकी

कृपा से मैं पास हो गई, यह योग्यता मुझमें न थी जो आपने प्रदान की, तो आपने पूछा "तुम किस खेत की पांस हो गई" तो मैंने कहा 'प्रभो, जिस खेत की आप बना दें' तो पूज्य गुरुदेव ने कहा 'इन्हें बापू बालिका में जगह मिल जायगी।'

पाठक, उस समय तक बापू बालिका में कोई जगह है या नहीं इसका पता न था। कुछ दिनों बाद विज्ञापन निकला अखबार में "बापू बालिका में कुछ अध्यापिकायें चाहिए, योग्यता कम से कम द्वितीय श्रेणी होनी चाहिए।" यह लड़की तृतीय श्रेणी की थी तो इसके पिता ने प्रार्थना पत्र का फार्म ला कर न दिया—वे सिद्धान्तवादी हैं, हम से कहे, इनका प्रार्थना-पत्र देना व्यर्थ होगा। उनको क्या मालूम कि महापुरुष संत महात्मा विधाता के कुअंक बदल सकते हैं। हमारे आग्रह पर अंतिम तिथि को प्रार्थना पत्र बड़ेबेमन से भेज दिया गया।

११-८-७४ को चुनाव की बैठक थी। संयोग से ९-८-७४ को लड़की के घर हम गए तो लड़की की माँ ने कहा "सन्नो के पापा ठीक कहते थे, आप जबरदस्ती दो रुपयों का फार्म मँगवा कर प्रार्थना-पत्र भिजवा दिया, और सब लड़कियों को इन्टरव्यू का लेटर आया है ११-८-७४ के लिए। सन्नो की नहीं आया है, यह तृतीय श्रेणी की है, द्वितीय श्रेणी माँगी गई थी।" मैंने कहा "ऐसा नहीं हो सकता है, आपने दफ्तर से पता लगाया, चिट्ठी रास्ते में कहीं खो गई हो तो" यह कह ही रहा था कि पोस्टमैन आया, कहा, चिट्ठी है, एक ही चिट्ठी थी, ली गई, खोली गई, तो देखा बापू बालिका की है, सन्नो का काल लेटर। हम गोकुल भवन चले आये।

११-८-७४ की बैठक में चयन हो गया। लड़की तथा लड़की के माता-पिता बड़ी खुशी-खुशी गुरु जी की जय-जय कार बोलते आये और अभिमान आ गया कि हमारी लड़की बड़ी योग्य है। इस अभिमान में मारे गये, जब पता लगा १-११-७४ को कि स्कूलों की इन्पेक्टर ने नियुक्ति नामंजूर कर दी। वे लोग अपना भाग्य ठोक कर बैठ गये, पर हमें चैन कहाँ। हमको यह वेदना हो रही थी कि "क्या गुरुदेव की

भविष्यवाणी असत्य हो जायगी ?" अतः सारी कथा, मन की व्यथा गुरु जी को लिख कर दी, गुरु जी ने पढ़ी और लिखा "पढ़ लिया चिन्ता नहीं, घबराओ मत, भगवान सब ठीक करेंगे।" यह कैसे होगा जब फाइल बन्द हो गई ?

फिर पूज्य गुरुदेव ने कहा—कुण्डली बिचरवाओ, बिचरवाई गई, आदेश हुआ दान जप करावो, कराया गया, तो १-१२-७४ को बापू बालिका की कमेटी ने फिर प्रस्ताव पास किया कि इन्पेक्टर से एक अध्यापिका की नियुक्ति के लिए प्रार्थना की जाय। किया गया। इसी बीच एक मित्र के द्वारा इन्पेक्टर से हम मिले, उसने कहा, "कोई जगह बनती ही नहीं।" फिर बेतार का तार चला—उर प्रेरक पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा हुई और इन्पेक्टर ने ५-१२-७४ को कहलाया कि जगतनरायन से कह देना उनका काम कर देंगे। यह बात हम ने किसी से न कही, पैरवी करते रहे २०-१२-७४ तक फैजाबाद की बहुत दौड़ लगाई। अन्ततोगत्वा नियुक्ति का आदेश हो गया और १-१-७५ से लड़की ने अपना पद ग्रहण कर लिया। क्या यह आश्चर्यजनक घटना नहीं है और यह सिद्ध नहीं करती है "राम समीपी संत हैं वही करें सो होय।"

जंत्र मंत्र

पूज्य गुरुदेव जंत्र, मंत्र, तांत्रिक विद्या भी जानते हैं। हजारों जंत्र बाट चुके हैं। हिन्दू मुसलमानों के सब प्रकार के जंत्र मंत्र जानते हैं। जंत्र ताँबे का बनवाते हैं एक सुनारिन से। उसको आप का यह आदेश है कि शुद्ध होकर, शुद्ध स्थान पर बैठ कर इतवार मंगल को बनाए। अधिकतर इतवार मंगल के ही जंत्र देते हैं गाढ़े बीढ़े बृहस्पतिवार को भी दे देते हैं। जँत्रों के देने का कार्यक्रम अब भी चल रहा है।

झाड़ फूँक

पूज्य गुरुदेव झाड़ फूँक में भी विश्वास करते हैं। जब जिसको झाड़ फूँक की आवश्यकता समझते हैं तो मास्टर से या वैद्य से फूँक डलवाते हैं।

खिचड़ी या आटा दान

पूज्य गुरुदेव का अमोघ अस्त्र तुरन्त कष्ट निवारण का है खिचड़ी या आटा दान कोढी, कंगालों को, गरीबों को। आश्रम में नित्य सुबह से शाम तक भिखारियों को खिचड़ी या आटा बाटा जाता है। जब भी किसी पर घोर विपदा आती है तो पूज्य गुरुदेव कहते हैं अपनी श्रद्धा माफिक कोढ़ी कंगालों को खिचड़ी बांटो। आधा सेर खिचड़ी, थोड़ा नमक और १०-१५ पैसा से कम फी आदमी न देना। कई लोग तो प्रार्थना करते हैं महाराज पैसा ले लीजिये, आप ही बटवा दीजिए। मैं कई बार सरजू किनारे पर जो कोढ़ी कंगला बैठते हैं उन्हें खिचड़ी बाँटने गया हूँ। पाठक-गण, क्या कहूँ ? जब बँटती है तो बड़ा आनन्द आता है। वे सब बड़ी शान्ति से एक लाइन में बैठे रहते हैं, मैं देता, बड़े खुश होते, कहते, भगवान ने भर पेट भेज दिया, चलो बनाये खाँये, दिन भर चुटकी-चुटकी बटोरो तब भी पेट न भरे, एक सुर से दानी की जै जै कार बोलते। इधर खिचड़ी बंटी उधर आराम हुआ। इस प्रकार की खिचड़ी का दान आज भी होता है। दानी को श्रद्धा विश्वास होना चाहिए।

चार अच्छरी

दूसरा सरल उपाय "धन, यश, पुत्र, संकट" के जिज्ञासुओं को बताते हैं ४ अच्छरी मंत्र का जाप। इसमें आधा घंटा लगता है। मन से इस मंत्र के जाप से भागे हुए लड़के भी घर वापस आ जाते हैं, धन का अभाव जाता रहता है, बदनामी से बच जाते हैं, संकट से बच जाते हैं, कहाँ तक लिखें तमाम मिसालें हैं। जिसने जिस बात के लिए मन लगा कर जपा उसका काम हो गया।

अन्य उपाय

जैसा रोगी वैसा इलाज। आप किसी को बताते हैं हनुमान चालीसा का पाठ, किसी को बजरंग बाण का पाठ, किसी को दुर्गा चालीसा का पाठ, किसी को भगवती शतक का पाठ, किसी को शंकर

जी पर जल चढ़ाना, किसी को पार्थिव पूजन, किसी को पीपल पर चिराग जला कर हाथ जोड़ लेना, किसी को हनुमान जी के मंदिर दाहिने सोना, किसी को महेश्वर धूप देना, किसी को गया कर देना, किसी को भागवत सुनना, किसी को राम आर्चा, किसी को शिव आर्चा, किसी को चींटी चिड़ियों को चारा देना, किसी का उतारा करवाना। फाँसी से छुटकारा पाने के लिए एक मंत्र बताते हैं, जिसे जेल में बैठे-बैठे दाहिने हाथ से जमीन पर लिखे, बाँये हाथ से मिटा दें।

भूत व्याधि

बहुत से ताँत्रिक हैं जो भूत भगा देने का दावा करते हैं और भगा भी देते हैं, कभी-कभी नहीं भी भगा पाते। पूज्य गुरुदेव, कभी कोई दावा नहीं करते। मिन्नत व आरजू से विनम्र भाव से पूछते हैं, क्या चाहिए, पूजा पाठ, खाना दाना, गया करा दी जाय, जो कहो सो करा दिया जाय, तंग काहे करते हो, बताओ। जो जो कहता है वह कराते हैं। इस पर भी वह बकता है या नहीं बोलता है कुश्ती लड़ेंगे तो पीछे नहीं हटते।

कुश्ती लड़ने की एक घटना लिखते हैं—गुरु जी के शब्दों में जो उन्होंने एक दिन अपनी मौज में बताई थी।

"राम घाट अयोध्या में खजानची के मंदिर के महंत पर एक ब्रह्म आता था, साधुओं को मारता था तंग करता था। एक साधु गुरु जी को बुला ले गया। तब आप की अवस्था ३० की थी। गुरु जी ने पूछा कौन हो भाई तो कहा हम इटावा के जिन्न हैं। आप ने कहा बकावो मत, ठीक ठीक बताओ तो बोला "मिठाई खावोगे।" आप ने कहा, "नहीं" तो बोला "कपड़ा लोगे" आप ने कहा "नहीं" तो कहा "रुपया चाहिए" आप ने कहा, "नहीं" तो बोला "कुश्ती लड़ोगे" तो गुरु जी ने कहा "खड़े हो जाओ।" बस वह खड़ा होकर दोनों हाथों से आप को कंधा से पकड़ लिया, तो आपने झोली दाँव से उसे गिरा कर, छाती पर पैर रख कर जोर से नाक दबाई, तब वह कबूला, १३

आदमियों को मार चुका था, इसलिए उस पर हजारों गउओं के मारने के बराबर हत्या चढ़ी थी। तब हमने महंत से कहा इस मंदिर को छोड़ दो, इसे हजारों वर्ष इस योनि में नरक भोगना होगा।

बहुत सी भूत, प्रेत, जिन्न, ब्रह्म बाधायें आती हैं, अपना ही उद्धार कराने के लिए। इस प्रकार की थोड़ी सी घटनाएँ लिखते हैं जिन से पाठकों को पता लगेगा कि पूज्य गुरुदेव ने किस को किस प्रकार तारा।

१. धर्मपुर के एक ब्राह्मण ने परिवार के कलह के कारण आत्महत्या कर ली कुवाँ में कूद कर। फिर अपने उद्धार के लिये, प्रेत योनि से, अपने ही परिवार के लोगों को सताने लगा। लड़कों ने काफी पूजा, पाठ, तंत्र, मंत्र कराये, कुछ न हुआ। तब वह पूज्य गुरुदेव के पास आया। पूछा गया, हाल बताया और कहा महाराज हमाराउद्धार करा दीजिए। आप ही के पास आने को लड़के को पकड़ा है। तब पूज्य गुरुदेव ने कहा लड़के से "सवा लाख राम मंत्र का जप करावो" तब यह प्रेत योनि से छुटकारा पाओगे और गति हो जायगी। जप कराया गया, वे प्रेत योनि से छुट्टी पाये, परिवार में शान्ति आ गई। तब गुरु जी ने कहा अब दो बोरा खिचड़ी कोढ़ी कँगलों, दीन दुखियों को बांट दो। कराया गया, उनकी गति हो गई।

२. फैजाबाद नगरपालिका के अध्यापक के परिवार के दो प्राणियों को प्रेत बाधा होने लगी। वे खुद कहे, हमें गोकुल भवन के परमहंस जी के पास ले चलो। लाये गये तो फाटक पर ही रुक गये, अंदर न आए। अध्यापक ने आकर पूज्य गुरुदेव को हाल बताया। गुरुदेव ने कहा, पूछो क्या चाहते हैं, पूछा गया तो वे बोले केवल परमहंस जी का चरणोदक से हमारा उद्धार हो जायगा, कृपा के सागर हम पर कृपा कीजिए। चरणोदक गंगा जल में उतारा गया, दिया गया, वे पा कर कहे अब हम जाते हैं। बाधा हट गई, अध्यापक के दोनों लड़के स्वस्थ हो गये।

पाठक सोचेंगे, चरणोदक में क्या जादू है, तो सुनिए नानक साहब ने कहा है महापुरुष के चरणों में—

साढ़े तीन कोटि तीरथ बसैं चरनन में लेउ जान।
धोय के प्रेम से पीजिए, कह नानक हो ज्ञान।
हरि औ संत में भेद नहिं, कह नानक सुनि लेव।
तन मन मारो दीन ह्वै जानि गूढ़ गति लेव।
तब ऐसे संत के चरणोदक से क्यों न गति हो जाय।

३. कच्छ प्रान्त से अक्टूबर १९७२ में एक मलेडी माँ आईं। कच्छ प्रान्त में देवियों में एक शक्ति को मलेडी मां कहते हैं। इन माँ को एक चारण स्त्री (चारण भाट को कहते हैं) ने उपासना करके प्रसन्न कर लिया और बरदान माँगा कि उस के मन चाहे काम पूरे हो जाया करें। माँ ने एवमस्तु कह दिया। तब वह चारण स्त्री ने पैसा कमाने का यह धन्धा शुरू किया कि यदि कोई उसे पैसा देवे तो गर्भ सुरक्षित, न देवे तो गर्भपात। इस बात का आतंक छा गया और उस चारण स्त्री का खूब मान दान होने लगा। इस तरह के काम से मलेडी माँ स्वयं परेशान होने लगीं और छुटकारा पाने की खोज में रहने लगीं। संयोग से चारण स्त्री ने एक ऐसी गर्भवती के पास भेजा जिसके घरेलू डाक्टर पूज्य गुरुदेव के शिष्य थे, जब डाक्टर आये तो कहा आप अपने गुरु द्वारा मेरा उद्धार करा दीजिए। यहाँ चिट्ठी आई, भोलेनाथ गुरुदेव ने लिखा दिया, चली आवो। तब माँ ने उस गर्भवती ठकुराइन को एक चने के बराबर गूगुल का टुकड़ा दिया, कहा, आप अयोध्या चलें, रास्ते में कोई तकलीफ न होगी, गोकुल भवन पहुँच कर यह गूगुल महाराज जी को दे देना, तब तुम्हारे ऊपर मेरा आवेश आवेगा।

वह ठकुराइन, उसका पति व उसका देवर तीन प्राणी आये, राम किशोरी वाले कमरे में ठहराये गये। पूज्य गुरुदेव अपने तख्त से उठ कर उसी कमरे में गये, ठकुराइन ने गूगुल दिया, गुरुदेव ने जैसे ही हाथ में लिया कि मलेडी माँ का आवेश ठकुराइन पर आ गया, बड़े जोर जोर से रोने लगीं, गुरु जी के चरणों को अपने सिर पर रख लिया, फिर माथा चरणों पर रख कर प्रार्थना करने लगीं "हमारा उद्धार कीजिए" फिर चरणोदक माँगा, दिया गया, पिया तो आवाज आई

"बड़ी कृपा ! मेरा उद्धार हो गया। अब मैं जाती हूँ।" आवेश खतम हो गया। ठकुराइन चंगी हो गई। मलेडी माँ ने चारण स्त्री से छुट्टी पाई और कच्छ निवासी स्त्रियों का चारण द्वारा गर्भपात का भय खतम हो गया।

चार अक्षरी मंत्र के जप की एक आँखों देखी घटना याद आ गई सो लिखते हैं। कानपुर से एक बुढ़िया आई, किसी भक्त ने यहाँ का पता बता दिया होगा। उसके एक मात्र पुत्र को कीर्तन मंडली के लोग बहका कर ले गये। घर में इधर उधर खोज कराई, ज्योतिषियों के पास गई, तांत्रिकों के पास गई पर आशा के कोई आसार नजर न आये। तब यहाँ आई। पूज्य गुरुदेव ने कहा चार अच्छरी जपो मन लगा कर आधा घंटा रोज तो लड़का आवेगा। पढ़ी न थी, मंत्र याद कराया गया। उसको बेटे की इतनी लगन थी कि आध घंटा तो क्या आठ घंटा बैठी ठौरे जपती रही, सुधि बुधि भूल गई। तब पूज्य गुरुदेव ने कहा इसे चेत कराओ भोजन कराओ। कराया गया। दूसरे दिन कानपुर गई लड़का आ गया। दो दिन बाद फिर लड़का लेकर पूज्य गुरुदेव के दर्शन को आई तो लड़का फाटक के अन्दर न घुसे, कहे, हम वहाँ नहीं जायेंगे पैर छूने, यही बाबा हमें कलकत्ता में डंडा, जो राखे हैं तक्त पर उससे डरवाते थे कहते थे घर जाओ नहीं तो तुम्हें मारेंगे।

ऐसे कृपा सिन्धु दीन दयाल को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

आर्थिक सहायता

१० से १५ सेर (किलो) तक खिचड़ी या आटा तो मेरे हजूर रोज भिखारियों को जो आश्रम पर आवें दिलाते ही हैं। इसके अतिरिक्त कपड़ा बरतन, कम्बल भी समय समय पर दिया करते हैं। जो जो माँगता है देते हैं। इन सब पर औसतन हजार बारह सौ रुपया माहवार का खर्च आता है। यह रुपया कहां से आता है सो तो हम न जान पाये। कोई जमीन जायदाद देने आता है तो कह देते हैं हमारे महाराज (दादा-गुरु) कह गये हैं "जमीन मत लेना"। किसी से माँगते भी नहीं

हैं, और स्थानों की तरह किसी समैया या पर्व पर शिष्य सेवकों के पास चिट्ठी भी नही भिजवाते हैं, तब फिर कौन सा जरिया है आश्रम के मासिक खर्च के लिए, नित्य भीख देने के लिए, भूले भटकों को घर तक वापस जाने को पैसा देने के लिये, गरीब कन्याओं की शादी में मदद करने के लिए, वस्त्रहीनों को तन ढकने के लिए वस्त्र देने को, मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए इत्यादि इत्यादि। संत महापुरुषों की माया जानना कठिन ही, नहीं, असम्भव है। वो कहें यह जरिया है "आकाशवृत्ति।"

पूज्य गुरुदेव की लीला अकथ, अलेख, अपार है। आप का निजी खर्च नहीं के बराबर है। हम आप जितना खर्च एक टाइम की चाय-पानी में करते हैं उतने पैसों में आप का (गुरुदेव) २४ घंटा का खाना पीना होता है। खाने में तरोई, परवर, टिन्डा, भिंडी, साग पालक चौराई जो सस्ता हो, दाल मूँग की, आटा गेहूँ का हाथ का पिसा, घी गाय के दूध का अगर मिले वरना नहीं, मसाले कोई नहीं सिर्फ जीरा से छौंका जाय, नमक इतना हल्का कि हम आप खायें तो कहे नमक है ही नहीं, चीनी मिठाई कोई नहीं।

भोग परसाद

जब हम पूज्य गुरुदेव की शरण में आये तो देखा भक्त लोग परसाद के लिए मुनक्का लाते थे। तब एक रुपया का ढाई तीन सेर मुनक्का मिलता था। पूज्य गुरुदेव भी उपदेश करते थे, चीनी नहीं खानी चाहिए बहुत हानि करती है, देशी शक्कर खाना चाहिए लाभ करती है। मुनक्का बहुत लाभदायक है। कुछ दिन बाद कहने लगे मुनक्का हानि करता है, ऋतु फल परसाद को ठीक होगा तो मुनक्का का जोर कम हो गया, फलों का जोरदार दौर चला। फिर कहने लगे फलों से भगवान मूत-मूत मारते हैं, तो पूछा गया, महाराज फिर क्या भोग परसाद हेतु लाया करें, तो आपने कहा, लाई चना बहुत बढ़िया परसाद है, मुट्ठी भर खाओ, लोटा भर पानी पियो, तबियत टनाटन।

यह सब परिवर्तन समयानुसार होते थे इसलिए कि पूज्य गुरुदेव को भविष्य दीखता था। जब आप को दिखाई दे कि अमुक वस्तु महँगी हो जायगी, भक्तों पर भार पड़ेगा तो दूसरी सस्ती. वस्तु का प्रचार आप आरम्भ करने लगते।

आप के लिए गरीब अमीर समान हैं, गरीब को यह सोचने की गुन्जाइश ही नहीं कि हम पैसे वाले होते तो अपने गुरु भगवान के लिए बढ़िया बढ़िया चीजें लाते। पूज्य गुरुदेव तो बढ़िया चीज चखते भी नहीं, भोग लगवा कर परसाद बंटवा देते हैं। ऋतु फल हो या लाई चना हो तो थोड़ा ले लेते हैं। यह है आपकी उदारता।

सहनशीलता

सहनशीलता भी गजब की है। बाबा राम दास ने मुझे बताया था कि एक दिन आप लखनऊ से आ रहे थे। गाड़ी में पड़ोस में एक मुसलमान औरत कंधे पर बच्चा लिये बैठी थी। वह बच्चा अपना मुँह आपके (गुरुदेव के) कंधे पर रख कर सो गया मुँह से लार टपकती टपकती कंधे से नीचे कमर तक पहुँची, लंगोटी अचला भीग गया, पर आप न कहे, न हिले ताकि बच्चा जाग न जाय। वह औरत फैजाबाद उतरी। लखनऊ से फैजाबाद तक ढाई तीन घंटे का रास्ता है। आप फैजाबाद तक जब तक वह औरत न उतरी न हिले। क्या हम आप कर सकेंगे ?

निर्माण

पूज्य गुरुदेव का योगदान निर्माण कार्य में कहाँ-कहाँ कितना रहा सो मुझे नहीं मालूम, पर आपकी रुचि इस ओर बचपन से ही थी, जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि १० की अवस्था में एक चबूतरा बाँधा शंकर जी की मूर्तियां पधारी। इस अवस्था में जो मुझे मालूम है वे हैं–

१. भरत कुण्ड पर विष्णु पद की स्थापना की।

२. भरत जी के मंदिर, नन्दीग्राम (भरत कुण्ड) में ४ कमरों का भवन साधुओं तथा यात्रियों के लिए निर्माण किए।

३. गोकुल भवन में उस कुवाँ का, जिसमेंगंगा जी आई थीं, जीर्णोद्धार किया।

४. रानूपाली में गुरु सागर की सफाई कराई।

५. रानूपाली में शंकरजी के मंदिर का जीर्णोद्धार किया।

६. सीताकुण्ड पर सिद्ध देवी स्थान, जिसकी पूजा पाँचू धोबी करता है, पर चबूतरा बंधवाया।

भरत कुण्ड के विष्णु पद की स्थापना की कथा 'भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत' में कथा नं० १८४ में विस्तार से लिखी गई है। बड़ी रोचक है। पाठक कृपया इस पुस्तक में भरत कुण्ड का हाल पढ़ें।

परमार्थ और परस्वारथ पर लिखने की सामग्री बहुत है। हमने थोड़ा लिखा है। इतने से ही ज्ञानी भक्त बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं। अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए मेरा निवेदन है कि 'भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत' को आप अवश्य पढ़ें। इस पुस्तक में तो मेरा ध्येय केवल परमपूज्य गुरुदेव के जीवन चरित्र का वरनन करना रहा है।

अन्त में जो कुछ अनुचित मैंने प्रस्तुत किया हो या जो गलतियां पाठकों की दृष्टि में आवें, उसकी माफी हाथ जोड़कर माँगता हूँ। जो लिखने योग्य चरित्र रह गए हों या जो घटनायें इस समय के बाद हों, उनको तथा इस पुस्तक के संशोधनों को तृतीय संस्करण में जोड़ लिया जायेगा।

मोरि सुधारहु सो सब भाँती।
जासु कृपा नहिं कृपा अघाती॥

जय गुरुदेव

वन्दना

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये ।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये ।।
खा रहा गोते हूँ मैं भव सिन्धु के मझधार में ।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में ।।
मुझ में है जप तप न कुछ साधन नहीं कुछ ज्ञान है ।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है ।।
पाप बोझे से लदी नैया भँवर में आ रही ।।
नाथ दौड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही ।।
आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं ।
जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं ।।
सब जगह मैंने भटक कर अब शरण ली आपकी ।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी ।।

गुरु मूरति मुख चन्द्रमा सेवक नयन चकोर ।
अष्ट पहर निरखत रहों गुरु मूरति की ओर ।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ।

अध्याय ६

पूज्य गुरुदेव के उपदेश

भजन

- जप से, पाठ से, पूजा से, कीर्तन से, जिसमें मन लग जाय उसी से सब काम हो जाता है।
- जब आँखी खुल जाँय तो तमाम देवी देवता जो यहाँ घूमत हैं सबको देखने लगो। जब कान खुल जाँय तब रोम रोम से जर्रा जर्रा से, सब हड्डी से, सब लोकों से नाम (र रंकार) का हाहाकार मच जाता है।
- रात दिन पूजा पाठ करने से कुछ नहीं होता। जीवों पर दया करने से सब होता है। चिड़ियों को चावल, चीटियों को आटा खिलाने वाला विमान पर बैठ कर बैकुंठ जाता है। सब भजन की साखा हैं।
- माला सटकाय से कुछ नहीं होता। जब दया धर्म होत है तब भगवान मिलते हैं।
- बड़ी सच्चाई की जरूरत है। बिना सत्य को पकड़े सत्य वस्तु कैसे मिलेगी ? बताओ।
- चाह है मेहतरानी, क्रोध है कसाई।
- हिन्दू मुसलमान सब एक बात कहते हैं। उनके यहाँ भी दो बजे भजन के लिये उठ जाते हैं। उनके यहाँ भी ब्रह्ममुहूर्त ३ बजे के बाद होता है। हमारे यहाँ भी दो बजे के बाद उठते हैं। तुम १० बजे सो जाओ और ३ बजे उठ जाओ।
- ज्यादा नियम करने की जरूरत नहीं है बस थोड़ा सा कर लो।

आधा घंटा, जिससे प्रेम हो उसका जप पाठ करने से सब काम हो जात है।

- लोग हजारों रुपयों के यज्ञ करते हैं, पर दया नहीं है–कुछ नहीं होता। गरीबों को एक फटा कपड़ा ही दे दें बहुत आशीर्वाद मिलेगा।

- एक भक्त ने पूज्य श्री गुरुदेव को पत्र लिखा कि वह किसी अपने संसारी काम की सिद्धि के लिये रामायण का पाठ कर रहा है। पूज्य गुरुदेव ने उत्तर दिया "जप पाठ करना बहुत अच्छी बात है, किन्तु अपने संसारी काम के लिये नहीं। नहीं तो अपना सुकृत चला जाता है।"

- साधक ज्यादा दुनिया से दोस्ती न रखें।

- "क्लीं" मंत्र कृष्ण भगवान का है, इससे सब मनोकामनाएँ पूरी होत हैं।

- अपने को सबसे नीचा मान लो जैसे गदहा, कोई चार सोंटा मारे तो सर झुका दे।

- जितने भक्त हैं सब भगवान के संग हर जगह घूमत हैं। पहले कुछ करो तो फिर सब देखने लगो। करोगे जब और देखोगे, तब विश्वास हो जायेगा, हाँ बात ठीक है। अभी कानों से सुना ज्ञान है। इससे गती नहीं होती।

- भजन के तरीके अगम हैं। जिसको जहाँ तक जाना है उसके लिये अलग अलग हैं। जैसे नदी एक है, घाट तमाम हैं।

- हम सब भजन के तरीके कर के देख चुके हैं। यह सुरति का सबसे सरल है, बाकी सब कठिन हैं। यह मध्य का मार्ग है।

- गान से सब देवी देवता प्रगट हो जाते हैं प्रत्यक्ष। पर बड़ा कठिन है। पहले एक साँस में सौ तक गिनती कराई जाती है, फिर सिखाया जाता है।

- कुछ नहीं तो सेवा धर्म कर लो, उसी से सब पट खुल जात हैं।
- केवल मंत्र से सब पट खुल जाते हैं। मंत्र बिना भजन अधूरा काम है। पहले एक माला ब्रह्मगायत्री जपा जात है, फिर जौन देवी देवता से प्रेम हो उसका मंत्र जपा जात है।
- भजन कोई खेल थोरी है। सब कोई भजन कर लेता तो सारी सृष्टि बैकुंठ न चली जाय—बड़ा कठिन है।
- साधु की पहिचान है कोई सौ जूता मारै तब भी वह आशीर्वाद ही दिहिस है। तब समझो वह कुछ भजन किया है।
- कोई तारीफ करै तुम खुश हो गये तो माया सब सुकृत चाट लेती है। कोई बुराई करै तुम नाखुस हो गये तब भी माया सब सुकृत चाट लेत है। दोनों तरफ से छोड़ती नहीं।
- सारे पदारथ तुम्हारे अन्दर हैं, पर तुम मार्ग नहीं जानते हो। यह नर तन बड़ा अनमोल मिला है। सारा संसार तुम्हारे अन्दर समाया हुआ है। जैसे भगवान अणु अणु में बसे हुये हैं वैसे तुम अणु अणु में बसे हुये हो। कुछ करो तब देखो सब।
- ये हाथ रतन हैं।
- देवता चमार के शरीर को तरसत हैं।
- ज्ञान गुरु तुम्हरे भीतर, तू अपने को चेला कर।
- अल्लाह है अरबी में, खुदा है फारसी में, हम सब करके देख चुके हैं, कहीं कोई झगड़ा नहीं है, पर लोग समझते नहीं हैं।
- ईश्वर सर्वत्र है। हर जगह है। जब तुम कुछ करोगे पट खुल जायेंगे तब देखोगे हाँ बात सत्य है।
- कोई कुछ करता नहीं है। मंत्र गले में बस बाँध लोगे, करोगे कुछ नहीं। क्या फायदा ऐसे मंत्र लेने से। हम हमारे नात रिश्तेदार नीक (अच्छे) रहें, बाकी दुनियाँ मरै—हमें इससे क्या मतलब। यही लोगों का भाव है।

- मोहम्मद साहब ने लिखाया है कि अल्लाह का प्यारा वही फकीर है जिसके दिल में दया है।
- कलमे से ही सब काम हो जाता है, चाहे जिस लोक में घूम आओ।
- रामायण से गीता से सब काम हो जाता है। रामायण तो भगवान का सरुप है। गीता विष्णु भगवान का। सब मन की बदमाशी है कोई कुछ कर नहीं पाउत है। मन तो काबू में होय !
- रामानन्द जी की ज्ञान गुदरी के तीन पाठ होते हैं--सुबह दोपहर शाम। इसे करने से सब पट खुल जाते हैं, भाव से करने से।
- शरीर के अन्दर हजारों शब्द हैं। जिसका जैसा संस्कार है जैसा भाव है, वह वही सुनता है। कोई सोऽहं सोऽहं सुनता है, कोई ररंकार, कोई, ओंकार, कोई श्रीमन्नारायण, कोई महाविष्णु।
- नदी एक है घाट तमाम हैं।
- नींद और आलस की भगवान के यहाँ माफी नहीं। ये दोनों तरफ की किसनई (फसल) का नाश करत हैं। कहत हैं अरे थोड़ा और सोय लें, का होत है।
- जो मौत और भगवान को भूला है उसी को आलस आता है।
- चलते फिरते, बैठे ठाढ़े, हर समय जहाँ बताया है वहां ध्यान लगा रहना चाहिये। का जाने किस समय नाम खुल जाये। एक बार खुल गया फिर बन्द नहीं होता।
- एक दाँय मन अन्दर झलक देख ले फिर कहूँ नहीं जाता।
- खजाना तुम्हारे अन्दर है।
- जो प्रयास करते हैं भगवान उन्हें शक्ति दे देते हैं। फिर भूख पियास कहाँ !
- भगवान मदद करते हैं। जो परीक्षा करते हैं वो रक्षा भी करते हैं अगर धुकुर पुकुर न हो तो।

– सब मान बड़ाई में मरे जात हैं। जरा सा पीठ ठोंक दो खुश हो जात हैं। अच्छा अच्छा खात हैं, मोटर में जात हैं, अच्छी विदाई पाउत हैं। खुद ठगत नहीं ठगावत हैं। यही दिमाग में उनके भरा है।

– थोड़ा भजन ही ठीक है। लोग बारह बारह घंटे राम राम करते रहते हैं और एकौ बार झलक नहीं दिखती। मन लगता ही नहां।

जब मन नहीं लगे तो सब बन्द कर दो। नहीं तो सब कट जाता है वहाँ जुर्माना में।

– मुसलमान शाह का पद है—"जब तन मन की मैं मैं मरे, तब तैं तैं का बँधे तार।"

– बिना प्राणों का लोभ जाये (त्यागे) भजन नहीं हो सकता।

– अन्धे मियां कहते हैं "हर जगह मौजूद हैं पर नजर आते नहीं। मन के साधन के बिना कोई उनको पाते नहीं।" सब ने यही कहा है।

– भजन घर में होत है, बाहर नहीं। एक जगह ठौर करके ही भजन होता है।

– धन, मकान, जमीन, लड़का, बिटिया सब भगवान के हैं। अपना कुछ नहीं। लोभ ही पाप की जड़ है।

– एक भक्त रहैं जो भी कुछ माँगे सब दे देत रहें। कहते थे—हमार कुछ है ही नहीं। सब भगवान का है। हमार तो शरीर ही नहीं।

– झाँसी के फकीर की शेर है बहुत ऊँचे पर मजार है। पाँच सौ वर्ष से अधिक की है। नाम हम भूल गये।

शेर :—

जियारत पीर मुरशिद की हजारौं हज से बेहतर है।
खोदा का देखना यारौं खोदा के घर से बेहतर है॥

– अंधे मियाँ की शेर :—

सेवा सतगुरु की तो भक्तों अमित तीर्थों से बढ़कर है।
राम को देखना भक्तों राम के पुर से बढ़कर है॥

– भजन के कोई एक दो रास्ते थोड़े ही हैं, हजारों हैं। लाखों में कोई एक भजन करता है।

– एक भक्त को किसी पंडित ने शंकर जी पर नित्य जल चढ़ाने के लिये कहा। उस भक्त ने पूज्य श्री गुरुदेव से शंकर जी की बटिया के लिये प्रार्थना करी। तब पूज्य श्री महाराज जी बोले "शंकरजी की बटिया का क्या करोगे ? ऐसे ही जमीन पर शंकर जी के नाम से जल चढ़ा दिया करो। भगवान सबमा हैं।"

गाँव की कसन्नी पसन्नी औरतें पत्थर पर जल चढ़ाकर हाथ जोड़ लेती हैं। कहाँ से अच्छी बटिया पावें। उनके भगवान और हैं, हमारे तुम्हारे और हैं।

– जो तुम्हारे आसरे है उसका कायदे से इंतजाम करो।

– घर का मालिक सबसे कम दाम का कपड़ा पहने, सब को खिलाने के बाद खाये तब घर में बरक्कत होती है। उसकी अच्छी गति होती है।

– एक डाक्टरी की पढ़ाई कर रही भक्त को श्री महाराज जी ने उपदेश दिया—डाक्टरी पढ़कर गरीबों पर बड़ी निगाह रखने से भगवान खुश रहते हैं और यहाँ वहाँ जीव सुखी रहता है। अपनी सच्ची कमाई खाय, जो खुशी से पैसा दे, वह दूध भिच्छा कही जाती है।

– अपनी माला सटकाई, फिर सब दुनिया की खुराफात में पड़ गये। इससे कुछ नहीं होत है।

– शरीर सब भगवान का है। धन जमीन मकान सब भगवान का है। तुम झूठा ही अपने माने हो। इसी में सब नाचत हैं।

- तुम्हारी पूजा सिर्फ तुम जानो तुम्हारा इष्ट जाने और किसी को पता भी न चले। वही पूजा फलीभूत होती है।
- भजन बड़ा आसान है, बड़ी सहनशक्ति की जरूरत है।
- १२ वस्तु हैं भजन के लिये—सत्य, क्षमा, शील ···। एक ही पकड़ लो उसी से सब हो जाय।
- जितनी सुई की नोंक उतने बराबर रास्ता है भगवान तक पहुँचने का।
- उधार पैसा लेकर या बेईमानी के पैसे से जो जप पाठ पूजन कराये जाते हैं उसका फल उसी को मिलता है जिसका पैसा होता है, तुम्हें कोई लाभ नहीं मिलेगा।
- भगवान अमीर के भी हैं, गरीब के भी हैं। जिसके पास पैसा न हो वो एक लोटा शंकर जी को जल चढ़ा दे तो उसको उतना ही लाभ मिलेगा जितना पैसे वाला जप पाठ पूजन करा के पायेगा।
- नरतन से बढ़कर कोई तन नहीं है। तपधन से बढ़कर कोई धन नहीं है। ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुखराशी। इसीलिये चेत कर जीव को अमल करना चाहिये। परमार्थ और परस्वार्थ दो डंडे हैं। परमार्थ में थोड़ा भजन सूर्योदय के पहले किया जाता है। परस्वार्थ में सेवा की जाती है। जितना ही परस्वार्थ करोगे उतना ही तुम्हारा तपधन बढ़ता जायेगा।
- यदि भगवान ने पैसा दिया है तो पैसा देकर दीन दुखियों की सहायता कर दो। यदि पैसा नहीं दिया है तो हाथ पैर से सेवा कर दो, यह सब परस्वार्थ है। परस्वार्थ भी भजन की एक साखा है। केवल एक डंडा पकड़ोगे तो लँगड़े बने रहोगे, इसीलिये परमार्थ परस्वार्थ दोनों ही करने से कल्याण होता है।
- स्त्रियों को अशुद्ध अवस्था की वजह से भजन नहीं छोड़ना चाहिये। एक बार एक स्त्री भक्त ने अशुद्ध अवस्था की वजह से भगवान का भोग नहीं लगाया तो भगवान ने कहा आज हम भूखे रह गये।

- स्त्रियाँ अशुद्ध होने पर पूजा पाठ छोड़ देती हैं, खाना कोई नहीं छोड़ देता। (अर्थात् यदि रोज खाते हो तो पूजा भी करो। हाँ बीमारी अजारी में न कर पाने पर माफी है।)
- अपना नेम टेम यात्रा में जहाँ बैठे हो, जैसे बैठे हो, वैसे ही कर लो।
- समै श्वांसा सब भगवान का है। अपना कुछ नहीं है। जो अपना माने है वो मौत और भगवान को भूला है।
- धन पुत्र यश की कामना से नारी नर की खोपड़ी भरती नहीं। वासना आगे चलै पीछे कदम धरती नहीं।
- जब मन की सब वासना मिटै, कहै रसखान।
  तब झाँकी डटै, सन्मुख कृपानिधान॥
- तुमको सबको १ घड़ी मन लगाकर भगवान का नाम जपना चाहिये जिससे गति अच्छी हो।
- चीटियों को आटा, चिड़ियों को चावल खिलाओ। जो आटा खिलात हो सब भगवान के यहाँ पहुँचता है। चीटियों को आटा, चिड़ियों को चावल देने वाला बैकुंठ को जाता है। हम देख चुके हैं।
- जो सोचते हैं हम हमारे नात भाई नीक रहें और मंत्र ले लेते हैं, कुछ नहीं होता उनके मंत्र लेने से।
- मन काबू में होय तो सब काम हो जाये।
- सब का समय भगवान बांधे हैं। प्रेम से जप पाठ करो सब काम हो जाय।
- एक लड़का बहुत बीमार था। सब टट्टी से सना पड़ा हुआ था। उसके माँ बाप कह रहे थे भगवान इसे उठा लें, हम नहीं देख सकते इसे। डाक्टर कहते थे हम पास नहीं जायेंगे, बीमार हो जायेंगे। हम नाक बंद करके गये उसे साफ किया, नहवाया साफ कपड़े पहिनाये, वह ठीक हो गया।

– टट्टी धोने वाली सेवा ही सेवा है। सब काम हो जाता है। कोई भजन करने की जरूरत नहीं।

– व्यास भगवान कहे हैं सेवा धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं। कोई भूखा है, दुखी है, उसे भोजन करा दो, कपड़ा पहिरा दो, उसका आशीर्वाद मिल जाता है। आत्मा से आशीर्वाद हो जाता है।

– परिक्रमा करते समय भगवान का स्मरण करते जायें, किसी से बोले न। चकर मकर इधर उधर देखो न। यथाशक्ति गरीबों, भूखों को खिला दो, फिर जल पी लो। साल भर के पाप नास हो जाते हैं।

– पापी से भाषण करने से पाप चढ़ जाते हैं ,जो मालूम है कि पापी है। न मालूम हो तो कोई बात नहीं।

– जब सर में बजने वाले बाजा सुनने लगो तो मन उसी लय ताल में स्थिर हो जाता है। देवी देवता तरह तरह के गीत गाते हैं नाना प्रकार की लीला होती है। या जब नाम की ध्वनि खुल जाय तब मन स्थिर हो जाता है। सब रोम रोम से, जर्रा जर्रा से, जोड़ जोड़ से, हड्डी हड्डी से हाहाकार होने लगता है। या जब स्वरूप सामने हो जाय तब मन कहीं नहीं जायेगा। अर्थात मन जब आधार पा जाये तब शान्त हो जाता है।

– शान्ति अपने अन्दर ही है। जब मन लग जाय तब शान्ति ही शान्ति है। मन लगने की बात है नहीं तो सब कट जात है जुर्माना में।

– सतगुरु से मारग जानि कै, तन मन जान को मारि कै, अपने को नीचा मानकै जुट जाओ तब पट सब खुल जाते हैं।

– अपनी सब जरूरतें कम करो।

– भजन की शाखा ५ हैं—सेवा, सुमिरन, कथा, कीर्तन, पाठ। बिना अपने को नीचा माने भजन हो ही नहीं सकत है।

- हम तुम्हें अच्छा बढ़िया भोजन दें और इन्हें (एक दूसरे भक्त को) चने दें—इन्हें रंज न हो तो इनका भजन हो गया।
- बिना बुलाये जाकर काम (सेवा) कर आवो, जितनी शक्ति हो, बस भजन हो गया। बुलाकर जाने से सब कट जाता है।
- रामायण का पाठ कायदे से १ माह में होता है।
- खिचड़ी बाँटने का हिसाब है :-- खिचड़ी डेढ़ पाव, १ तोला नमक, लकड़ी के लिये चार आना पैसा।
- आटा बाँटने का हिसाब है :--आधा सेर आटा, १ तोला नमक, और लकड़ी के लिये चार आना पैसा।
- एक भक्त के बारे में--"वो हमसे कहता है कि मेहतर का मैला साफ करने में जो सुख मिलता है वो माला फेरने में नहीं मिलता।" ऐसे भी भक्त पड़े हुये हैं --बताओ।
- लोग दान नहीं करते (कुछ अमीर लोग) कहते हैं जुटा जुटा कर अमीर हुये हैं। दान देंगे तो फिर गरीब हो जायेंगे।
- जिस कमरे में पूजा करो उसे धो पोंछ कर चकाचक कर लो। पूजा करने के बाद उसमें साँकल लगा दो। तुम्हारे अलावा कोई दूसरा उस कमरे में न जाये। तब देवी देवता वहाँ प्रगट होकर तुम्हारे साथ हँसेंगे, खेलेंगे, खायेंगे।

पूज्य गुरुदेव की दया को देखिये--

- एक बार पूज्य गुरुदेव ने चूहों को मारने के सम्बन्ध में कहा "बेचारे चूहों का कोई घर तो है नहीं जहाँ वे रहें, अतः यहीं रहने दो, मारो मत।
- जिस कमरे में पूजा करो उसमें केवल हवा जाने का स्थान हो, बाहर का शोर सुनाई न दे।
- जब मन लग जाता है तब ठौरे ढ़ोल भी बाजै तो सुनाई नहीं देता। यह पहिचान है मन लगने की।

– संसार की दोस्ती बड़ी जहरीली होती है।

देव अनुष्ठान के नियम

१) बाल न बनवावै। कपड़ा धोबी से न धुलवावै।
२) जमीन पर या तख्ता पर सोवै।
३) ब्रह्मचर्य रहै।
४) अपने हाथ भोजन बनावै। जल लावै। बर्तन मलै।
५) जिस जगह में अनुष्ठान करै लीपी पोती साफ जगह हो। वहाँ कोई दूसरा न जाय।
६) जूता खड़ाऊँ न पहिनै नहीं तो जीव मरते हैं।
७) नीच से भाषण न करै। —जिसके कर्म ठीक नहीं वह नीच है।
८) जीवधारी सवारी पर न चढ़ै।
९) कोई नशा न खाय।
१०) झूठ न बोलै।
११) मन को रोके भागने न पावै।
१२) किसी के यहाँ मोढ़ा कुरसी पर न बैठे।
१३) सतोगुणी देवता का प्रसाद बँटता हो तो ले लेव।
१४) पाँचों चोरों (काम क्रोध मोह लोभ अहंकार) से बचा रहे।
१५) लघुशंका लगै तब जल लेकर जाय फिर हाथ पैर धोकर कुल्ला करै।
१६) दिन में न सोवै।
१७) दस बजे रात्रि को शयन करै। तीन बजे प्रातः उठ कर नित्य कर्म से निवृत होकर पहिले अपना पूजन का नियम करै तब अनुष्ठान पूरब मुख बैठ कर करै।
१८) जप करने वाला और कराने वाला झूठ न बोलै। किसी की जीव जीविकाजाती हो तो झूठ बोलने में दोष नहीं है।
१९) क्रोध न करै।
२०) खान पान में जबान को रोकै।
२१) सतोगुणी भोजन करै।

२२) इतना ज्यादा न खाय कि आलस्य आय। थोड़ा भूखा रहे।
२३) इतना कम न खाय कि स्वास्थ्य गिर जाय। कमजोरी आवे।
२४) जो भोजन पचै वह खाय।
२५) अधिक जल न पिये।
२६) मौन रहै। कोई अच्छी बात हो — देवता की दर्शन की बात बोल सकत हो। दुनिया की बात नहीं बोल सकत हो।

भगवान की महिमा

- बड़े उदार दानी शंकर। शंकरजी चार युग सत्युग, त्रेता, द्वापर, कलियुग पाताल में रह कर तपस्या किये हैं। ऐसी किसी ने नहीं की। इसी से देवाधिदेव महादेव कहाते हैं। राम तत्व के ज्ञाता शंकर, राम तत्व के दाता शंकर।
- चार अक्षरी शंकर जी का मंत्र है, सब काम हो जाता है। उनसे प्रेम करो तो खुश, गरिगाओ (गाली दो) तो खुश। है कोई ऐसा देवता ?
- शंकर जी को सब देवी देवता महादेव कहते हैं। रामजी, विष्णु भगवान, कृष्ण भगवान इनको बहुत मानते हैं। इनकी महिमा शारदा शेष भी नहीं जानते हैं। इनके चारि सरूप हैं। १ सुकुल, १ लाल, १ काला १ सोने कैसा। वे रजौगुण तमौगुण, सतौगुण से परे हैं। इन को पैदा करना, पालन करना, संहार करना, अजर अमर कर देना सब अधिकार है।
- दायीं आंख में रामजी, कृष्ण जी, विष्णु जी, शिव जी विराजते हैं। बायीं में सब शक्तियाँ—सीताजी, राधाजी, रुक्मिनीजी, पार्वतीजी, लक्ष्मीजी।
- राम, कृष्ण विष्णु और शंकर भगवान हैं। बाकी सब (दुर्गाजी, गणेशजी) देवी देवता हैं।
- रामजी, कृष्णजी, विष्णुजी से संसारी कामों के लिये प्रार्थना नहीं की जाती। उनसे केवल आध्यात्मिक कामों के लिये प्रार्थना की

जाती है। संसारी कामों के लिये शंकर भगवान, दुर्गाजी, कालीजी, शीतला माता जी से प्रार्थना की जाती है।

- शंकरजी ही हनुमान जी का रूप धरे हैं।
- भगवान इसीलिये तो तमाम रूप धरे हैं जिस किसी से प्रेम हो उसी से गती हो जाय।
- भगवान सब में हैं और सबके हैं। जो भगवान हाथी में हैं चींटी में हैं, सुअर में हैं, वहीं हममें हैं और वही तुममें हैं।
- किसी से घृणा मत करो, किसी से घृणा मत करो। सब रूप भगवान ही धरे हैं।
- गोस्वामीजी (तुलसीदास जी) के बाद समर्थजी (स्वामी रामदासजी) का दूसरा अवतार है हनुमान जी का।
- गाँधीजी कबीर जी के अंश थे। उनकी जैसी यात्रा हुई आजतक हमने कहीं नहीं देखी। भगवान स्वयं ले गये—उनका किसी से बैर ही नहीं था न हिन्दू न मुसलमान से।
- सर के सामने वाले हिस्से में पाँच ब्रह्म हैं—सोहं, ररंकार, ओंकार, श्रीमन्नारायण, महाविष्णु और सर के पिछले भाग में हैं पाँचों शक्तियाँ।
- भक्तों के लिये ही भगवान तमाम रूप धरे हैं।
- पूतना का दूध कृष्ण भगवान पिये थे। जहाँ कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी यशोदा जी हैं उन्हीं के साथ पूतना को स्थान दिया है चौथे बैकुंठ में।

जटायु गीध की राम भगवान ने क्रिया कर्म किया था अपने हाथों से। जहाँ दशरथ जी, नन्द बाबा हैं उनके साथ उन्हें आसन दिया है चौथे बैकुंठ में।

- रावण राक्षस था पर था ब्राह्मण। भगवान राम को भी हाथ में पाप लग गया। जब गंगाजी नहाये बाद में, तब छूटा।

- प्रह्लाद जी से उसके पिता हिरण्यकश्यपु ने पूछा "तुम्हारा ईश्वर कहाँ है।" तब वे बोले "ईश्वर सर्वत्र है, तुम्हारी खांड़ा (तलवार) में, दीवाल में, खम्बा में।" तब क्रोध में आकर हिरण्यकश्यपु ने खांड़ चलाई तो खम्बा फाड़कर भगवान प्रगट हो गये। देखकर सारे देवी देवता कांपन लागे। लक्ष्मी जी घबरा गईं। सब ने लक्ष्मी जीसे प्रार्थना की भगवान को शान्त करने के लिये, तो वे बोलीं "हम नहीं जायेंगे, हमें भय लागत है।"
- गरीबों के भगवान दूसरे हैं हमारे तुम्हारे दूसरे हैं। दो भगवान हैं। खेत में औरतें काम करती हैं। वहीं उनके बच्चा हो गया तो नार काट के नहा लेती हैं। बस वहीं कहीं से महुआ पाकर खा लेती हैं। कहाँ का हरीरा, कहाँ की पंजीरी। बस अपना काम शुरू कर देती हैं। उसी दिन से घन चलाना शुरू कर देती हैं।
- शंकरजी, हनुमानजी, रामजी, कृष्ण भगवान, विष्णु भगवान, कालीजी, दुर्गाजी, भैरव जी सब एक ही हैं। दूसरा और कोई नहीं है। कहीं कोई झगड़ा नहीं है।
- जानकी जी ने पहिले शंकर जी को ध्यान बताया था फिर हनुमान जी को जब शंकर जी ने हनुमान जी का रूप धरा था।
- भगवान भक्तों से प्रेम करते हैं तथा पापियों पर दया नहीं तो उनका निस्तार कैसे हो।
- जीवों पर दया करने से भगवान खुश होते हैं।
- विद्यादान एक शुभकर्म तथा महान दान माना जाता है। ऐसे कामों में भगवान खुश होते हैं।
- भगवान कहते हैं "हमारे रोम रोम में ब्रह्माँड बसे हुये हैं।"
- रामजी, कृष्णजी विष्णुजी एक हैं। सब भगवान एक हैं। भृगुलता रामजी के भी हृदय में है, कृष्णजी के भी, विष्णुजी के भी। सब एक न हों तो सबके हृदय में भृगुलता कैसे ? अरे, लात को एक ही के हृदय में मारी गई थी—विष्णु जी के।

फिर भी जिससे प्रेम हो, उसी के जप में मन लगता है। नहीं तो मन लग ही नहीं सकता।

- भगवान जर्रा जर्रा में है और सब भक्त संघ में हैं।
- भूत प्रेत तीन प्रकार के होते हैं। एक होते हैं शान्त, एक होते हैं खाय पिये वाले और एक होते हैं महाक्रोधी। तुम इनके फेर में कबहुँ न परो।

भूत प्रेत सबमा भगवान हैं। हम इन सबका मानित हैं। इसी से सब खुश रहते हैं। देवी देवता तो मान भी लेते हैं पर भूत प्रेत नहीं मानते। ये सब घर का सामान उड़ा देत हैं। कहो सबके ऊपर ईंटें पत्थर बरसा दें।

- सब काम भगवान के हुक्म से होता है।

राम नाम की महिमा

- राम नाम का बड़ा महातम भारी
  वेदों का सार गीता में कहे पुरारी
- हिन्दू, मुसलमान कितने नाम जप से अजर अमर हो गये, बड़ा विस्तार है।
- मरते समय यदि कान में राम नाम पड़ जाये, चाहे कैसो पापी होय विमान पर बैठ कर भगवान के धाम को जाता है। हमने अपनी आँखों से देखा है।
- भगवान के सब नाम सत्य हैं, लेकिन राम नाम का दर्जा सबसे ऊँचा है क्योंकि राम नाम सबमें रमाया हुआ है। मरने पर सब बोलते हैं, "राम नाम सत्य है।" कोई यह नहीं बोलता कि "सोहं नाम सत्य है" या "ओंकार नाम सत्य है।"

सेवा

- सफाई बहुत ऊँची चीज है। इससे देवता बड़े खुश रहते है। हम पहले सब साफ कर दिया करते थे यहां (गोकुल भवन) से वहाँ।

(मेन रोड) तक। कूयें के सामने सब थूक देते हैं, सब साफ कर देते थे। तब सब नालियाँ साफ कर देते थे। यहाँ से सरजूजी जाते थे तब रास्ते भर का मैला, गन्दगी, कर्कट, दातून सब उठा कर एक कोने में करके आगी दिखा देते थे।

- रास्ते में पत्थर निकले रहते हैं जिससे पैर छिल जाता है, कट जाता है। ऐसा एक पत्थर निकाल देने से ४० रोज तक कोई जंत्र मंत्र तुम्हारे नहीं लगेगा। हम न जाने कितने ऐसे निकाल दिये।
- एक चींटी जो एक तोला पानी में डूबी हुई हो, उसे निकालने पर भगवान के यहाँ बड़ा ईनाम दिया जाता है। और यहाँ लोग कसाई हैं।
- एक लड़का जो श्री महाराजजी के पास कुछ समय आकर रहना चाहता था उससे श्री गुरुदेव बोले "जब तुम्हारे माता पिता अपनी खुशी से भेजें तब आना। हमारी शरण में तो हो ही। जहाँ भी रहो अपने काम में डटे रहो।"
- कोई अपने माता पिता को छोड़कर साधू हो जात है, कोई अपने बीबी बच्चे को। उन सब का श्राप हो जात है।
- छोटे बच्चों को नहीं मारना चाहिये, नहीं तो उनका कलेजा कमजोर हो जाता है।
- महाराजजी कितना सबका ध्यान रखते थे—यह इस बात से ज्ञात होता है जो उन्होंने एक शिष्य से कही थी "अपनी माँ से कहना, चिन्ता न करें, चिन्ता बड़ी खराब चीज है। कहना, महाराज कह रहे थे, अगर वे चिन्ता नहीं करेंगी तो हमारा (महाराजजी का) शरीर ठीक रहेगा।"
- श्रीमहाराजजी ने एक भक्त को विदेश न जाने के लिये कहा। जब वो अपने घर गया तो उसके पिता ने उसे विदेश जाने की राय दी। अतः उसने पुनः श्रीमहाराजजी के पास आकर प्रार्थना की कि वह किसकी आज्ञा को न माने अपने गुरु की या अपने पिता की।

तब पूज्य गुरुदेव ने उससे कहा "तुम्हारे माता पिता ने तुम्हें पाल पोस कर बड़ा किया है उनकी आज्ञा का पालन करना तुम्हारा धर्म है। हम अपनी खुशी से तुमसे कह रहे हैं कि तुम विदेश जाकर आगे पढ़ाई करो"

आना जाना

- अपने काम पर पाँच मिनट पहले पहुँचे तथा पाँच मिनट बाद लौटे। जिस स्थान पर काम के लिये पहुँचना हो वहाँ एक दिन पहले पहुँचे।

- रवि का पान, सोम का ऐना।
  मंगल गुड़ का अरपन कीना॥
  बुद्ध का धनिया, बेफइ राई।
  सूक कहै मोहि दही सोहाई॥
  कहै शनीचर जो घृत पाऊँ।
  कालहु जीति लौटि घर आऊँ॥

अर्थात् रविवार को यात्रा शुरू करना हो तो पान खाकर चलो। सोमवार को चलो तो शीशा में मुँह देखकर चलो। मंगलवार को गुड़ खाकर तथा बुध को मुँह में धनियाँ डालकर चलो। बृहस्पति को मुँह में राई डालकर चलो। शुक्रवार को दही खाकर चलो। शनिवार को मुँह में घी डालकर चलो।

यह हजारों साल पुरानी ऋषि मुनियों द्वारा बताई हुई साईत है।

- एक भक्त ने श्रीमहाराजजी से अपनी नौकरी में स्थानान्तरण के लिये प्रार्थना की। पूज्य महाराजजी ने उत्तर दिया "जहाँ भगवान राखें वहाँ खुशी से रहै, चाहे भूखा पियासा रहै। वही सच्चा भक्त हो सकता है।"
- समय पर अपने काम पर पहुँचो।
- जिसका जहाँ अन्न जल होता है भगवान वहाँ भेजते हैं। वैसे न

कोई अपनी इच्छा से आ सकता है न ले जा सकता है। न कोई भेज सकता है न कोई रोक सकता है। दुष्ट स्वभाव के अपना काम करते हैं, पर अनहित नहीं कर सकते।

– भगवान सब (आने जाने का) इंतजाम कर देते हैं।

खान पान

– हमेशा एक कौर कम खाये, तब सब काम ठीक बैठे।

– खान पान शुद्ध नहीं है आजकल। जितना खानपान सादा होय उतना ही मन सादा होय। कटहर, कुम्ह ा, सेंबी जो कब्ज न करे सो खाओ। जो कब्ज करै तो मत खाओ। दो पहर खाओ, थोड़ा भूखे रहौ। तुम कस के खाते हो, पेट सब कस जाता है, सब देवी देवता रोने लगते हैं। कोई जानता थोड़े ही है। जब बताते हैं तब हँसते हैं।

– बाजार की मिठाइयाँ बड़ी खराब हैं। जिस शक्कर से मिठाइयाँ बनाते हैं वो गन्धक तथा जानवरों की हड्डियों से साफ की जाती है, जो धातु की दुश्मन है। इसकी बजाय गुड़ खा लो अच्छी डली का, वो ज्यादा फायदेमन्द है। जिन गाय भैंसी के बच्चा मर जात है उसके दूध से ये लोग मिठाई बनाते हैं, सब जहर होत है।

– हाथ पिसा आटा खूब अच्छे से माड़ लो, सब लस निकल आता है। उसकी रोटी ऐसी मीठी बनती है जैसे मालपुआ। मशीन मे पिसने से सब सत् जल जाता है।

– तिल का तेल फायदा करता है। पर असली होना चाहिये।

– सुबह एक मुट्ठी चना खा लो, एक पाव पानी पी लो, फिर एक घंटे तक कुछ न खाये पिये। आँखीं हमेशा तेज रहती हैं।

– आँख के लिये अलसी और रेड़ी का तेल बड़ा फायदा करता है।

– भोजन के एक घंटा बाद तक कुछ पानी न पियो, फिर ३ माशा हरी महीन सौंफ खाकर दो घूँट पानी पी लो, आँख के लिये बड़ा फायदा करती है।

- कब्ज में हरी महीन सौंफ धोई सुखाई, पिसी हुई फायदा करती है।
- डालडा बड़ी हानि करत है।
- जब खान पान शुद्ध न होय तो मन कैसे शुद्ध होय।
- तुम मांस खाओगे, मछली खाओगे, अंडा खाओगे, सच्चरित्र न रहोगे तो भजन कैसे करोगे।
- मुर्गी गन्दगी के कीड़े चुन चुन कर खाती है और लोग कहते हैं अण्डा फलाहारी है।
- खाना खाने के बाद फौरन नहीं सोया जाता, नहीं तो शरीर में तमाम गर्मी उमड़ आती है।
- बिना जबान पर काबू किये भजन हो ही नहीं सकता।
- एक बादाम में एक पाव दूध की ताकत है। बादाम घिस के लिया जाता है।
- पहले जंगल थे गौवें चरने जाती थीं, जो इच्छा होती खाती थीं। उनका दूध बड़े फायदे का होता है। पर आजकल जंगल ही नहीं हैं। कहाँ चरने जायें।
- भोजन बड़ा सात्विक होना चाहिये। या तो मालपुये ही खा लो या भजन कर लो।
- बच्चा होने के समय थोड़ा भूखे रहो। कस कर खाने से बच्चा कमजोर पैदा होता है।
- अपनी सच्ची कमाई के अन्न में थोड़े में ही पेट भर जाता है और बेईमानी की कमाई में खूब खाय लो फिर भी पेट नहीं भरता। यह पहिचान है। कुछ सच्चे भक्त रहैं, वे अपने हाथ से मिट्टी गोड़ के, पैदा करके अपने हाथ पकाय खात रहें।
- भूख पियास जबान इच्छा नींद आलस सब मन के संगी हैं। सब बड़े बदमाश हैं। ये पानी से ज्यादा शरबत, शरबत से ज्यादा दूध,

रोटी से ज्यादा पूड़ी, पूड़ी से ज्यादा मालपुये खात हैं, पेट में जगह चुराये हैं। सूखा चना दे दो तो ताकते ही नहीं है।

-- कोई एक थाल में तुम्हें अच्छा बढ़िया खाना दे और एक थाल में सादा भोजन दे। तुम अच्छा खाना छोड़कर सादा भोजन खा लो, बस मन काबू में हो गया।

– मन से जबरदस्ती लड़ना पड़ता है तब काबू में होत है।

– चटर पटर खाने से मन भी चटर पटर हो जाता है।

– चिचिल मिचिल कपड़ा पहिनने से मन भी चिचिल मिचिल हो जाता है।

– सादा कपड़ा, सादा भोजन, अपनी सच्ची कमाई का अन्न होना चाहिये।

– सब फैसन पर लात मार दो। दुनिया के शौक सब भगवान से दूर कर देते हैं पास नहीं जाने देते।

– तुम्हारी प्रकृति के अनुसार जो तुम्हारा दस्त (पेट) साफ रखे, फल या साग वह खाओ। जो पचै वो खाओ। जो न पचै वो न खाओ।

– मुसलमानों के यहां सच्ची कमाई की मोटी रोटी का टुकड़ा दिया जाता था। घातु लोहा हो जाती है।

– बेईमानी के अन्न से भजन नहीं हो सकत है। ये साधू हर जगह घूमेंगे। जहाँ बेईमानी का अन्न होगा वह भी खाना पड़ेगा, हर जगह धर्मात्मा थोड़े ही हैं। सच्ची कमाई वाले बहुत थोड़े हैं।

– जैसा भोजन करोगे वैसा ही सुरस बनेगा, वैसा ही खून, वैसी ही घातु बनेगी।

– जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन।

– एक दिन के कुपथ्य से २१ दिन तक असर रहता है।

– तोरई, टिंडा, भिंडी की तासीर ठंडी होत है।

- अच्छा बढ़िया खाना छोड़ कर सादा भोजन कर लो, जानो पास हो गये।

- भजनानन्दी बनोगे कि भोजनानन्दी बनोगे ?

- आसन, प्राणायाम हठ योग की क्रियाएँ हैं। इनके लिये बड़े शुद्ध खान पान की जरूरत है। पहले समय में ऋषि मुनि जंगल की पत्तियाँ खवाकर कराया करते थे। इसमें मूँग की दाल की जरूरत है, खिचड़ी की, उन गौवों के दूध की जो जंगल में चरने जाती हैं। भोजन पके तो आम, ढाक, पलाश या कंडा पर। नहीं तो दिमाग के तत्व बिगड़ जाते हैं। ज्यादा खाने से दिमाग खराब हो जाता है।

- भजन में अचालू कचालू नहीं खावा जात है। पर लोगों का मिर्च बिना पेट ही नहीं भरत है।

- बेईमानी के अन्न से मन बेईमान हो जाता है। शुद्ध भोजन खाने से मन शुद्ध होता है।

- हमारे एक भक्त रामकुमार चौबे १४ विद्या के एम. ए. थे। ५ हजार रुपये माहवार पाते थे। बहुत सादे वस्त्र का कुरता धोती टोपी रखते थे। हाकिम लोग पूछते तो कहते हम जो पढ़ाते हैं उसका पैसा देते हो। हम फैसन नहीं करते हैं।

- जो साग मैला में पैदा होत है वो फायदा नहीं कर सकती।

- मैला में सब साग भाजी उगाई जाती है, उनमें उसी का असर आ जाता है। देहात में जो कुम्हड़ा कटहर होता है वह ठीक है।

- हनुमान जी के व्रत में नमक नहीं खाया जाता, केवल मीठा खाया जाता है। अन्न एक समय खाया जाता है। रोटी खा सकते हो, पूड़ी खा सकते हो, गुड़ खा सकते हो। सुबह कुछ जलपान कर लो, दोपहर में भोजन कर लो। शाम को जलपान कर लो सूर्यास्त से पहले। सूर्यास्त के बाद कुछ नहीं खाया पिया जाता है।

- जितना कम तथा हल्का भोजन करोगे उतना मन हल्का होगा। जितना भोजन गंभीर होगा उतना मन गंभीर होगा। कोई समझता नहीं है।
- खाना, पीना, पहिनना संसारी शौक है। ईश्वरी शौक और संसारी शौक में बहुत फर्क है।
- प्याज, लहसुन, बड़े गरम हैं, बड़े विकार मन में पैदा होत हैं, बड़ा नुकसान करत हैं।

कर्म भोग

- कर्म का भोग सबको भोगना पड़ता है। रामजी ने बाली को बाण से मारा तब कृष्णावतार में वही भील हुआ। जब कृष्ण भगवान बैठे थे तब पैर के तलुवे में पदुम (कमल) चमकता था। भील को लगा मृग की आँख है, उसने बाण चला दिया। जब पास जाकर देखा तो पैरों में गिर पड़ा। भगवान बोले कोई बात नहीं। रामावतार में हमने तुम्हें एक ही वाण से मारा था, उसी का बदला है। बस शरीर छोड़ दिया।
- ग्रह सब पर आते हैं। शनि की वजह से राम जी को चौदह वर्ष का बनवास हुआ। तीन तीन दिन टुकड़ा नहीं मिलता था--कन्द फूल खाते थे।
- मंगल, शनि, राहु, केतु बड़े क्रूर ग्रह हैं। सब बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं। माता पिता मित्र बन्धु सबसे झगड़ा करा देते हैं। इनका काम ही है लड़ाई कराना। संकटा दशा बड़ी खराब होत है।
- यह कर्मभूमि है। बिना कर्म किये कुछ नहीं हो सकत है।
- अच्छे कर्म, बुरे कर्म दोनों बाँधते हैं।
- जो वकील जाल के मुकदमे लेत हैं मरने पर सब भूत बनते हैं। घर भर को नर्क होता है। जो सच्चाई के मुकदमे लेते हैं उनकी गती अच्छी होती है।

- न कोई किसी को देता है, न कोई किसी से लेता है।
- भगवान के यहाँ तिल तिल का हिसाब लिखा जाता है।
- जो बोबोगे न तो कटबो का ?
- जब जीव गर्भ में आता है तो माता नहाकर जिसे देख लेती है, वही गुन औगुन जीव में आ जाते हैं। तुम बेकार चिन्ता करते हो। भगवान अपने भक्त का सब काम सुधारते हैं।
- जो कहते हैं हम किये हैं वह बन्धन में बँध जाते हैं। जो सोचते हैं सब भगवान करा रहे हैं, जो वे करायेंगे वो हम करेंगे, तब बन्धन में नहीं पड़ते।
- एक ने श्री महाराजजी से पूछा "जो भी हम करें क्या उसके लिये यही सोचें कि सब गुरु भगवान करा रहे हैं ?" तो पूज्य गुरुदेव बोले "बिल्कुल यही।"
- अपनी अपनी भाग्य लेकर जीव आते हैं। समै पर सब जुट जाता है।
- शादी बड़े सोच विचार से होती है। चारों योग (संतान योग, ग्रह योग ···) का मिलान होता है तब शादी होती है। नहीं तो लड़की बेवा हो जात है। माता-पिता, पंडित सब को नर्क होत है।
- एक लड़का फेल हो जाने की वजह से बहुत दुखी था, उसके लिये श्री महाराजजी ने कहा "जिस विषय में कच्चे होत है उसी में फेल हो जाते हैं, नहीं तो फेल थोड़े ही होत हैं। अच्छे से पढ़े हो, पर्चा ठीक दिया हो तो पास कैसे नहीं हो। कच्चे होने से फेल होते हैं, इसमें सदमा लगने की क्या बात है। जितनी भगवान के यहाँ विद्या लिखी होत है उतनी ही मिलत है।"
- नौकरी जैसी भगवान देंगे वैसी मिलेगी। भगवान सब कर्मानुसार देते हैं। सबके भाग्य अलग अलग हैं। एक भाई चपरासी है तो दूसरा कमिश्नर।

- सब अपने भाग्य का खाते है। कोई किसी को जिआउत नहीं है।
- पुराना कर्जा सबको अदा करना पड़ता है।
- जो बुरा काम करोगे तो बुरा फल मिलेगा। अच्छा (सच्चा) काम करोगे तो अच्छा (सच्चा) पल मिलेगा। वहाँ अन्धेर नहीं है। जो तुम्हारा सच्चा काम होगा तो कुछ नहीं हो सकता।
- भगवान के यहाँ एक एक बात का हिसाब लिखा जाता है। वहाँ दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया जाता है।
- सच्चे काम देर से होते हैं, पर बेईमानी के खोटे काम फटाफट होते हैं।
- एक बार श्री गुरुदेव ने एक विद्यार्थी से पूछा "तुम्हारी तनख्वाह कहाँ तक जायेगी।" उस विद्यार्थी ने विभिन्न प्रकार की नौकरियों का वर्णन किया तथा जिस नौकरी को वो करने का इच्छुक था उसे विस्तार से बताया। सब पढ़कर श्री गुरुदेव मुस्कराये, फिर बोले "वहाँ सब लिखा है (कौन नौकरी मिलेगी)।"
- जिसको मांस नहीं खाना वो ऐसे ही घर में पैदा होता है।
- भगवान हर काम का समय बाँधे हैं। कर्म अनुसार सबको दुख सुख भोगना पड़ता है। अपनी अपनी भाग्य लेकर जीव आते हैं। समै पर सब जुट जाता है।

दीनता

- जो भगवान को प्यारा है वही उसके पास पहुँचता है। जाति कोई भी हो। जब कोई तारीफ करै तो खुश न हो, बुराई करै तो नाखुश न हो। बेकसूर कोई गाली दे, धक्का दे, तुम रंज न हो। सब के दुख सुख में सरीक रहो। बेईमान का अन्न न खाव। अपनी सच्ची कमाई का अन्न खाव। किसी की जीव जीविका जाती हो तो झूठ बोल दो, वैसे न बोलो। जिस देवी देवता से प्रेम हो उसका जप पाठ मन लगा कर आधा घंटा किया जाता है। तब सब देवी

देवता मिलने लगते हैं, संग खान, पान करते हैं। सबसे नीचा अपने को मान लो दीनता आ जाये, शान्ति मिल जाये, पट खुल जायें। जो अपने लड़के के समान चमार के लड़के पर दया राखै वही भजन कर सकता है।

- जो अपने को सबसे तुच्छ मान ले वही सच्चा भिखारी है। उसी को भीख मिलती है।
- जो अपने को सबसे नीचा मान लेता है वही सबसे ऊँचा गिना जात है। ये दरबार झूठा है, वो दरबार सच्चा दरबार है।
- भगवान के काम में बड़ी सहनशीलता की जरूरत है। घूर हो जाओ घूर।
- अपनी सच्ची कमाई से ही भगवान तक पहुँच होती है।
- सबके दुख सुख में शरीक रहौ, पर खान पान में शरीक मत रहौ। कौन जाने कौन किसी का खून चूस रहा है (सता रहा है)।
- बिल्कुल निश्छल हो जाओ। अपने को महामूर्ख मान लो। ये बुद्धि के ज्ञान से कुछ नहीं होता। यहाँ पोथी पत्रा का काम नहीं। हत्थे में ज्ञान जब तक न आ जाये तब तक गती नहीं होत है।
- एक बार अन्दर से भगवान से रो दो तब सब पाप जल जाते हैं।
- अरब में इस समय ढाई सौ स्त्री पुरुष हैं जो भगवान की नाना प्रकार की लीला देखते हैं। कोई उन पर थूकै, हगै, मूतै, कुछ बोलत नाहीं हैं। अन्धे बहिरे बने बैठे हैं। अपने को फिर धोकर साफ कर लेते हैं। तुम ऐसा कर पावोगे ?
- इस समय देश में पाँच हजार अपढ़ सिद्ध सन्त हैं।
- सिद्ध महात्माओं को कोई घूँसा लात मारै, उन्हें मन में कुछ नहीं लगता। मालूम है हम सबसे नीच हैं।

- ईसा का योग कोई समझ नहीं सकता। कोई कुछ किये हो, कुछ देखा सुना हो तभी विश्वास कर सकता है। ईसा रहे बड़े पातर-पातर (दुबले पतले) और गोरे।
- किताब पढ़ पढ़ के बुद्धि पीतल हो जाती है। जो बिना पढ़ा लिखा है उसके पट खुल जाते हैं। अपने को महामूर्ख मान लो।
- जो कुछ पढ़े लिखे नहीं हैं उन्हें अनुभव जल्दी हो जाता है। जो पढ़े लिखे हैं उन्हें देर से होता है। खोपड़ी (उनकी) हमेशा बोलती रहती है न।
- घूर हो जाओ। मान अपमान फूँक दो तब भगवान की गोद में जाकर बैठ जाओगे।
- यहाँ की इज्जत क्या देखते हो, ये तो झूठी है। भगवान के यहाँ की इज्जत देखो।
- संसार की इज्जत है चार दिन की। इस पर लात मार दो। वहाँ की इज्जत लो।

प्रेम

- तन मन प्रेम की जब एकता हो जाय तो प्रेम की नदी उमड़ती है। तब ज्ञान, ध्यान, भान सब उसमें लय हो जाते हैं। मुख से बोल नहीं फूटता। नैनों से शीतल जल बरसता है। देह का संभार नहीं रहता।
- आँखों में दो नदियाँ बहती हैं। एक सुख की, एक दुख की। सुख के आँसू बड़े ठंडे होते हैं, बहुत थोड़े लोग इस बात को जानते हैं। दुख के आँसू बहुत गर्म होते हैं— सब कोई जानते हैं। सुख के आँसू बड़े ठंडे होते हैं, बिल्कुल बर्फ समान।
- जिसका प्रेम है, भगवान उसी के हैं।
- जिसे जो घुनघुना चाहिये भगवान उसे वह दे देते हैं, बजाओ उसे बैठ कर। उनके पास बहुत घुनघुना है।

जब बच्चा रोता है माता अपने बच्चे को घुनघुना दे देती है चुप कराने को और अपना काम करती है। पर जब बच्चा घुनघुना फेंक देता है तब उसे गोदी में उठाये उठाये सारा काम करती है। यही हाल भगवान का है।

- जिसका भगवान से प्रेम है उसे चिन्ता नहीं हो सकत है चाहे लड़का मरे, बिटिया मरे। पढ़े नहीं हो ठठेर की कथा। भगवान सिर्फ इसी शरीर से मिलते हैं। लड़का हर योनि में मिलते हैं।
- शरीर में लाखों शब्द हैं; जिसका जिससे प्रेम है वह उसे ही सुनता है।
- वेदान्त से भगवान नहीं मिलते; भगवान मिलते हैं प्रेम से।

समर्पण, विश्वास

- लाला रामसहाय ने कहा है—मुरशिद की मेहर सदा सहाय, तू बे धड़क खलक में खेला कर।
- जिसका अपने गुरु पर अटल विश्वास है उसका कोई काम रुक नहीं सकता, उसका सब काम आपै हो जाता है।
- जिसको भगवान का भरोसा है उसे तकलीफ कैसे हो सकती है।
- जिसका जो हक है चाहे उसका बंधान कहूँ भी हो उसको वही मिलता है। भगवान की ऐसी ही लीला है।
- एक विश्वास कच्चा होत है एक पक्का होत है। हमारा तुम्हारा कच्चा है। अपने इष्ट में विश्वास पक्का होने की जरूरत है। तब सब काम हो जाय।
- जो भगवान को सब कुछ सौंप देता है भगवान उससे बड़े खुश रहते हैं।
- रामायण में भगवान ने कहा है जो हमारी शरण में आता है हम उसके कोटिन जन्मों के पाप क्षमा कर देते हैं।

- हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम। चिन्तारहित अपने काम में लगे रहना।
- जाको राखे साइयाँ, मार सकै न कोय।
- भगवान इतना सब दिखाते हैं फिर भी मन डिग जात है।
- विश्वास अटल होना चाहिये।

भाव

- भाव से सब होत है। तुम्हारा भाव ठीक है तो सब काम हो जायेगा।
- किसी ने पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना की, "आप सदा हमारे पास रहें।" तो श्री महाराजजी ने कहा "अपना भाव विशाल कर लो फिर हमें पासै (पास ही) देखो।"
- हजारों कोस पर लोग हमें देख लेते हैं। एक बुढ़िया (टंडन की सास) एक मिट्टी का लोढ़ा बनाकर हमसे बोलाये लिहिस (हमसे बोलवाये लीं)।

  कथा यह है कि उस बुढ़िया ने एक मिट्टी की मूर्ति बनाई और बोलीं "महाराजजी, हम अपने पति की गया कर आवें, मंत्र ले लें।" श्री महाराजजी उसमें प्रगट हो गये बोलने लगे। जब वह महाराजजी के दर्शन को आईं तब महाराजजी बोले तुम्हारे ऐसा भक्त शायद ही कोई होगा।
- जा को गुरु पर भाव है, ता को होत कल्यान।
- एक बार दुर्योधन ने कृष्ण भगवान को भोजन के लिये बुलाया। भगवान बोले तुम्हारे भाव नहीं है और हमें भूख नहीं है।
- लोग यहाँ से हमारी फोटो ले जाते हैं। वहाँ फोटो बोलने लगती हैं। कारण सब में भगवान हैं। उनका भाव है।
- भगवान अपने भक्त की इच्छा पूरी करते हैं जिसका सच्चा भाव होता है।

- सच्चा भक्त वही है जो केवल भगवान की मरजी पर सब छोड़ देता है। भगवान अपने भक्त को उसकी इच्छा से अधिक देते हैं।
- हमारे भक्त जो सच्चे हैं हमारे संघै खात हैं।
- सब भाव से होत है। जिसका भाव है चाहे वो हजारों कोस दूर हो, हम उसे अपने पास देखते हैं। जिसका भाव नहीं हमारे पास होते हुये भी हम उसे अपने से हजारों कोस दूर देखते हैं। जिनका भाव है उन्हें हम अपने पास देख रहे हैं।
- गुरु तुम्हारे अन्दर हैं।
  एक बार कोई अन्दर से भगवान से रो दे तो उसके कोटिन जन्मों के पाप क्षमा हो जाते हैं।
- भगवान भाव के भूखे हैं। अपना भाव विशाल कर लो।

आश्रम व्यवस्था

- पूज्य श्री गुरुदेव भगवान द्वारा आश्रम की व्यवस्था हेतु समिति गठन के समय (दि० १५ फरवरी १९८३ मंगलवार) को यह आज्ञा हुई :

  आश्रम में आने वाले भक्तों के रहने एवं भोजन की व्यवस्था ठीक होनी चाहिये। आश्रम में दीन, दुखी, साधू, भिक्षुक नित्य आते हैं उनकी भली प्रकार सेवा होनी चाहिये। मंगतों को दुतकारा न जाय। वे अपने पेट के लिये आते हैं।

  हमारी गुरु परम्परा में सदा सेवा होती आई है, वह सेवा बराबर बढ़ना चाहिये। सभी भक्तों से निवेदन है कि सेवा धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं है। समय बड़ा खराब आ रहा है। आश्रम का सब काम सब लोग मिल कर हँसी खुशी करें यह हमारी इच्छा है। इससे सबको सुख मिलेगा और हमें भी संतोष होगा। व्यास भगवान कह गये हैं सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

सच्चा भजन

– सबसे सच्चा भजन है अपने इष्ट में सुरति लगी रहे, फिर चाहे भजन करो या न करो। उन्हीं के जरिये से सब काम हो जात है। फिर कोई काम रुक नहीं सकत है।

जैसे शत्रु का खटका हरदम बना रहता है उसके नाम की माला नहीं सटकाई जाती, वैसी सुरति लगी रहे। तार टूटे नहीं।

गुरु प्रेरणा

– इन सारे उपदेशों को पढ़कर श्री महाराजजी बोले "ये सब लिखने की बातें नहीं हैं। ये पेट में रखने की बातें हैं।"

– ये सब जानते हैं पर करता कोई नहीं है। यह सब सीखना पड़ता है।

– पहले कुछ करो तो फिर देखो सब। भगवान सब शक्ति दे देते हैं।